श्री लीला रहस्य माधुरी

व

राम रसिया

संत भइय्याजी (सरससंत)

माँ पुतली • पुण्य स्मृति संस्करण

श्री लीलारहस्य - माधुरी

एवं

श्री रामरसिया

रचनायक :—

अनंत श्री विद्वद्वरिष्ठ, सर्व सद्गुण गरिष्ठ

साकेतवासी

स्वामी श्री रामवल्लभाशरणजी महाराज

श्री जानकीघाट

तत् चरणाश्रित

श्री अयोध्याजी, श्री रामघाट, श्री रामकुंज, (कथा भवन) प्रवासी

अखिल श्रुति, शास्त्र, पुराणादि, मर्मज्ञ, साधुकुल कमल, दिवाकर

मधुरर्षि

अनंत श्री स्वामी अखिलेश्वरदासजी महाराज (श्रीपंडितजी)

तत् चरणचंचरीक

श्री स्वामी संतरामदासजी (सरससंत)

संतभइय्याजी

सूचीपत्र

दिव्य वेषधरं रामं व्याहभूषणभूषितम् ।
मैथिमंडपमध्यस्थं, सीतयासह शोभितम् ॥
ब्रह्माविष्णुमहेशांच, मोहयंतं मनोहरम् ।
वंदे वेदान्तं सिद्धान्तं परं ब्रह्मरसाम्बुधिम् ॥

शुक सारिका जानकी जियाये ।

आराधना

जन्म जो दीजै तो मिथिला सुदेश मध्य,
दीजै जो प्रवास राजधानी जनकचंद को।
"सरससंत" पाहन पशु कीजै तो जनकपुर ठाँम,
मच्छ, कमठ कीजै तो कमला सरि वृन्द को।
लता, पता, खग, मृग, पुष्प कीजै तो सोई ही बाग,
जहाँ सियाराम दृग मिलन मलिंद को।
किन्तु नर कीजै तो कुमार निमिवंश कुल,
अनुज सिया प्यारी को सु-सार रामचंद्र को॥

—तुम्हारा ही
संबन्धी

पुतली प्रिया प्रीतम की पुतली, पुतली में पगी,
दोउन की पुतली में बस रहीं पुतली थीं।
ऐसी थीं पुतली कि जैसी सुनैनाकी,
पुतली थी सुनैना कि सुनैना ही पुतली थीं।
आजु लौं पुतली प्रति पुतलिन की पुतली हैं,
कौशिला की पुतली वह स्वयं ही पुतली थीं।
"सरससंत" संतन की पुतली रहीं पुतली वह,
पुतली की प्रीतम सदा प्रीतम की पुतली थीं।

जब वो बड़े प्रेम विभोर होकर यह पद गाती थीं—

सिता रानी का अचल सोहाग रहै।
राजाराम के सर पर ताज रहै।
जब तक पृथ्वी अहि शीस रहै,
नभ में शशि सूर्य प्रकाश रहै।
गंगा जमुना की धार रहै,
तब तक यह बानक बना रहै।
ई बना रहैं वो बनी रहैं,
नित बना बनी में बनी रहै।
अविचल श्री अवध का राज रहै,
अविरल श्री सरयू धार रहै।
प्रेमी जन का बड़भाग रहै,
चरणों में नव अनुराग रहै।
ये सोहाग रहै सिरताज रहै,
नित-नित यह बानक बना रहै।
माँ "पुतली" की यह ध्यान रहै,
प्यारी प्रीतम में प्रान रहै।
प्रीतम की "पुतली" बनी रहैं,
"पुतली" की प्रीतम बना रहैं।

परमधाम स्थित—श्री पुतली मां की

पावनपुण्य स्मृति में रहस्य माधुरी का द्वितीय संस्करण सादर भेंट—

सौ० कमला रानी कपूर, अमृतसर

पूज्य—

अनन्त श्री स्वामी

राम वल्लभाशरण जी महाराज

की

परिवार - वाटिका

एक वृक्ष फल तीन शुभ, यद्यपि अधिक अनेक।
एक रक्षक तेहि तरु विभौ, एक सुविटप विवेक॥
'सरससंत' तीजो लसै, सद्दंपति सुतपुंज।
त्रिविध महाफल वाटिका, राम वल्लभा कुंज॥
त्रैफल मधुर मिठास रस, 'सरससंत' सिय भ्रात।
दुल्लह राम महा रसिक, रस बस रस सरसात॥

प्रथम फल

परमधाम निवासी अनन्तश्री स्वामी रामपदारथ दासजी (वेदान्तीजी)

यह हमारे हृदय कुञ्ज के विशेष पूज्य मूर्ति थे। आपके समान आप ही थे सचमुच यही एक ऐसे प्रथम फल थे कि जिनसे जीव के कायिक, वाचिक, मानसिक और समस्त प्रवृत्तियाँ सन्निहित होकर उस संकेत की ओर अग्रसर होती थीं कि जहाँ विशुद्ध शरीर, विशुद्ध वाणी, और विशुद्ध मन है, एवं जहाँ समस्त प्रवृत्तियों की विशुद्ध अगाध सरस रस समुद्र है। जिसे हम सर्वदा सच्चिदानंद मेहमान श्री रामजी का नित्य निवास धाम "साकेत धाम" कहते हैं। "

अर्थात् समस्त सच्चिदानंद जगत के एक मात्र प्राण संजीवन, सच्चिदानन्द मेहमान श्रीराम श्याम के मन मोहक मोदर फल थे। इन्हें प्रायः सब लोग ही जानते थे। आपके दर्शन मात्र से ही जीव का मनोमालिन्य दूर हो जाता था।

अतएव जिस वाटिका के ऐसे ऐसे फल सुलभ थे उस वाटिका की छटा और भाग्य का कहना ही क्या। वाटिका के एक एक फलों पर चारों फल न्योछावर हैं। क्योंकि यहाँ मेहमान दुल्लह सरकार श्री रामलाल जू और लढ़ैती श्री किशोरी जू नित्य विहार करती हैं। लिखा है :—

लाल गुलाल सुमन जहँ महँकत ऐसो सुभग अवध की बाग।
डार डार औ पात पात में उमगत राम चरन अनुराग॥
चारो फल न्योछावर कीजै जाके फलन को अधिक सुहाग।
रामदेव जामे नित विहरत ते निरखहिं जिनकर बड़ भाग॥

अतः श्री रामवल्लभाकुँज "वाटिका" बड़ी प्यारी वाटिका है, बड़े भाग से इस परिवार वाटिका में यह नश्वर शरीर धारी जीव प्राप्त होता है। अस्तु इस वाटिका के उन श्री परमधाम स्थित श्री युगल पद कमल में सत्-सत् प्रणाम है तथा वर्तमान महंथ श्री हरिनाम दास जी पर सदा उनकी कृपा छाया बनी रहे।

संत भइय्याजी

यह मेरे प्राण-धन एवं सम्पूर्ण सुख श्री गुरुदेव हैं। जिनके स्मरण मात्र का असंख्य फल, समस्त विभूतियाँ और सिद्धियाँ केवल गुरु निष्ठा की किंचित भी भावना उत्पन्न होने पर सुलभ हो जाती है।

अतएव श्री गुरुदेव की महिमा को गुरु प्राप्त होने पर ही जाना जा सकता है। जिन्हें गुरु का सौभाग्य प्राप्त होगा उन्हें तो अनुभव अवश्य होगा। स्पष्ट है :—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरो।
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

अस्तु बिना गुरु संपन्न हुये जीवन कंटकमय है। गुरु शरण अवश्य होना चाहिये। क्योंकि :—

गुरु बिनु होय न ज्ञान, ज्ञान कि होय बिराग बिनु।
गावहिं वेद पुराण, सुख कि लहहिं हरि भक्ति बिनु॥

और फिर पाठक तो यह अवश्य ही जानते हैं कि मेहमान दुल्हा सरकार श्रीराघवेंद्र रामचन्द्र जू ने बड़े उत्साह से बताया है कि ज्ञान, विराग एवं भक्ति, गुरु शरण सम्पन्न होने पर प्राप्त तो हो ही जाता है। साथ ही मानव जगत के ये हि लौकिक एवं पारलौकिक साधन और समस्त मानव-व्यवहार के लिये भी श्री गुरुदेव सरल से सरल सहज अवलंब हैं। श्रीमुख वचन :—

राज काज सब लाजपति, धरम धरनि धन धाम।
गुरु प्रभाव पालिहिं सबहिं, भल होइहिं परिनाम॥

और इसके बाद तो संसार सागर से उद्धार होने का अनादि काल से ढुंढुभी बजती आ रही है कि :—

गुरु बिनु भव निधि तरै न कोई।
जो विरंचि शंकर सम होई॥

जै श्री गुरुदेव —संत भइय्याजी

तृतीय फल :—

(जनक समान अपान बिसारे)

साकेतवासी

अनंत श्री वैदेहीवल्लभ शरणजी महाराज (विदेह)

विश्वनाथ मंदिर—स्थान बीहट—मुंगेर।

यह पिता विदेहराज हैं। बहुधा इन्हें जानने में सब लोग कहाँ तक समर्थ रहे होंगे, यह कहना और बताना कठिन है। और यदि जानते भी होंगे तो यथा कथित लोग ही। चरितार्थ है :—

जो जानइ जेहि देहिं जनाई।

आप मिथिला के हिमांचल और पूर्वी छोर के शायद मध्य में ही "ग्राम बीहट—विश्वनाथ मंदिर स्थान" में एक ऐसे शक्ति सत्ता में प्रसरित थे कि जिनके अंचल में हर कलाओं से ओतप्रोत, समस्त साकेत का वह राज़ छुपा हुआ था—"जिसे गोस्वामी श्री तुलसीदासजी महाराज" बड़े उत्साह से लिखते हैं—

"कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाय कहि जानहिं अली"

अथवा सम्पूर्ण पूर्ण अवतंस सच्चिदानंद मर्यादा पुरुषोत्तम भी अपनी अनंतानंत मर्यादा को अंतर्मुख करके इनके अंचल में आनंद से परमानंद को प्राप्त थे।

आपके करुणा कृपा की अमोघ क्षमता से अधिक से अधिक प्राणी अपने अपने यथा सौभाग्य से परमानंद सुख का अनुभव करते थे। कि जब अगहन शुक्ल की ब्याह-पंचमी अवसर पर, हर कलाओं से ओत-प्रोत, उस छुपे हुये छवि माधुरी को, हर कलाओं में ओत-प्रोत होकर हाथों हाथ लुटाते थे। एवं दुनियाँ में ऐसी कौन, मानव के मानसिक, मनमोहन, मादन, उच्चाटन तथा किसी भी प्रकार की विभूति उनके अंचल में न छुपी हो। यह असंभव था।

अतएव इस क्षणभंगुर शरीर को यदि एक क्षण भी उनके सहवास का सुपास जिसने नहीं दिया होगा, एवं नहीं पाया होगा, तो भूतल का भार ही रहा। और फिर वही रहा :—

"सो नर खर शूकर समान से जियत वृथा जग माहीं।"

श्री साकेतयात्रा

दुर्भाग्य और संसार के अमिट नियमों के अनुसार जिनका कि अगहन शुक्ल तृतीया ता० २१-११-६० चंद्रवार को, मृत्युलोकी नियमों के दृढ़-विधानक विधाता ने उस महामोहिनी मूर्ति पारतत्त्वदर्शी महानिधि को हम लोगों के हाथ से जबरन छीनकर, उस विधाता निगाड़े ने अपने विधान-महत्ता के पद लोलुपतावश, सिया-दुलह मेहमान सरकार के नित्य धाम साकेत धाम में भेंट करके, अपने को बड़भागी का पात्र बना। और हम सब उस महान आत्मा के परिवारों को असहाय और निरावलंब करके मुमकिन है विधाता सुख और शांति का स्वप्न दीखता होगा।

चिरस्मृति

परन्तु विधाता के व्यर्थ कला-कलापों का कलाप अथवा नियम ही भर हाथ रहेगा। क्योंकि हम लोग किस शानदार के बेटे हैं*। यह विधानक को शायद पता ही नहीं है, न होगा। कारण कि नित्य में अनित्य की महत्ता दे देना तो नित्याधिकारी की महान् क्षमता है। अन्यथा नित्य ता नित्य ही है। और वह अटूट अविछिन्न सदा एक रस, आप्तकाम, सच्चिदानंद आनंदकंद श्री दुलह चित्तचोर युग युगल सरकारों में अनवरत रत रहता है। विधाता का विधान न तब था, न अब है और न आगे रहेगा। यहाँ तो महल की आन शान है स्पष्ट है :—

महल के महरियों को मन में गुमान है।
मैं हुँ मिथिला की सगी मुझे इसकी शान है॥

तब तो :—

विधिहिं भयउ आश्चर्य विशेषी।
निज करनी कछु कतहुँ न देखी॥

क्या तब ! क्या अब ! विधाता का विधान एक तरफ और उनके बेटों का विधान एक तरफ :—

'वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी सो अब भी है'

अलमस्त फकीरा उनके सपूतों के अंतरात्माओं को अहर्निश एक ही जीवन दिनचर्या है कि—

'सब कुछ छूटै छूट जाय बरु छूटै न लगन तिहारी ललन'।

और वही किया जो न हुआ था न होगा—कि हम सबके विधान में व्यवधानजी भी आ ही धमके। फिर तो कहना ही क्या। उन्हें भी

* स्टण्वंतु विश्वे अमृतस्य पुत्राः, आयेधामानिदिव्यानि तस्थाः।

चट व्याह की चूँदरी ओढ़ाकर घूँघट कर डाला। और फिर अपने संविधान के साथ गठबंधन करके मानो होली खेली। क्योंकि व्याह ही का तो अवसर था—व्यवधान और संविधान का भी गठबन्धन कर डाला गया। अर्थात् महान् दुःख और सुख भी मौर मौरी लगाकर स्वयं व्याह-उछाह का अनुभव करने लगे। और श्री जानकी विवाह महोत्सव, महामहोत्सव ढंग में परिणित होकर समस्त विवाह महोत्सवाधिकारी अपने पूज्य पिता के उस अंतरंग में अलमस्त हो गये जैसा कि उपरोक्त पंक्ति में है कि :—

जनक समान अपान विसारे

हुआ क्या :—विचारे विधाता अपनी विधान महत्ता की पोटरी कंधे पर सम्हाले-बड़े ताक में थे कि अब हमारा विधान अवश्य लागू हो जायगा। पर विचारे लाचार। थके पाँव लौट गये। और फिर वही अवश्यंभावी रहा—

सिय रघुबीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन कहँ सदा उछाह, मंगलायतन राम यस ॥

वह महान् आत्मा, प्रत्येक अपने सहआत्माओं में ओत-प्रोत होकर स्थूल सूक्ष्म और कारण किसी भी काल में भी अपने राग को अलापे ही रहेगा :—

मिथिला के नतवा से बढ़ि गैले शान हे।

अस्तु; आज भी उस सिद्धपीठ के वर्तमान चिरआत्मा पं० रामशंकर शरणजी भाई! अपने चिर सहभाइयों के साथ चित्तचोर श्री दुल्लह चारों सरकार और अधिक पियारी दुलारी लढ़ैती श्री किशोरीजू अपनी एक मात्र श्री सुनैना (महारानी) (काकाजी) के कोमलांक में, वारी दुलारी पियारी श्री किशोरी जू आदि समस्त नित्य परिवार समेत वही परमानंद आनंद की वरसा करते हैं। जो श्री गोस्वामीजी की आत्मपंक्ति है—

"कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाय कहि जानहिं अली"

श्री मिथिला माहात्म्य

जप तप योग उपासहीं, द्रवहिं कबहुं भगवान ।
मिथिला नाते नित मिलहिं, सिय दूलह मेहमान ॥
सिय दूलह मेहमान मिलैं, फिर का ? जग लहिये ।
मुक्ती भुक्ती भार परै, सुकृत सर नहिये ॥
सो सुकृत सर पुञ्ज लहैं, जिन मिथिला माहीं ।
ताका "संत" सराहि विधी शिव इंद्र लजाहीं ॥
सिय की लालन केलि, रामजू की ससुरारी ।
मंगल व्याह विधान, सदा प्रमुदित नर नारी ॥
प्रमुदित नर औ नारि सब, छके रहे छविकंद ।
सिय दुलही दुलहा सुघर, ब्रह्म सच्चिदानंद ॥

सिया दुल्लह दुलही की जै

—संत भइय्या जी

अपने मेहमान से :—

प्यारे दुल्लह राम !

यद्यपि मैं चाहता था कि जन्म जन्मांतर का हमारा तुम्हारा जो चिर संबंध है, उसे हम या तुम्हीं जानें, और समझें। लेकिन जब तुमने हमें इस असार सार संसार में हठात् भेजा ही है। तो मैंने भी यही सोचा कि अपने प्यारे दुल्लह चित्तचोर की मेहमानी करूँ। और उस मेहमान को अनेकानेक तुमसे ही प्रेरित अनूप भाव भरे, शब्द सुमनों को एकत्रित कर, नेहरूपी मृदु सूत को श्रद्धा से बँट कर एवं ध्यान धारणा दृढ़ासन की लगन लगाकर पिरोऊँ। पुनः उस प्रेम-पुष्पों को प्रेमा परा रस बूंदों से सदा तर वितर करके हे प्यारे दुल्लह ! तुम्हारे ही प्रेरणा का प्रतिफल तुम्हारे ही गले में डाल दूँ।

आज वही तुम्हारे और किशोरी कृपा की अभिन्न प्रेरणा से प्रेरित, जो शब्द सुमनों का हार, जिसे अपने अंतरंग छवि छटा घटा के रसबूंदों से, इस शुष्क हृदय वाटिका को अभिसिंचन कर अपनी रसमय, मधुमय, सुगंधमय बाँकी झाँकी छवि छटा रूपी शब्द सुमनों को विकसित कर आपने ही सजाया है। उसी तुम्हारी वाटिका का अभिसिंचित विकसित कलियों की हार, जिसे "श्री लीला रहस्य माधुरी" नाम की नामकरण की भी तुमने ही प्रेरणा दी है।

धन्य प्यारे धन्य ! और धन्य तुम्हारी प्रेम-प्रेरणा का यह हार, जिसे तुम बड़े प्यार से अपनी अभिन्न गले में डालकर, इस शुष्क हृदयाकाश में भी विहार कर लेते हो। अच्छा ! यदि तुम्हें इस प्रकार के हारों से

सुशोभित होना ही अत्यंत प्रिय है, तो मैं भी इस हृदयवाटिका से नित-नित नये अभिसिंचित पुष्पों का हार पिरोऊँगा और उसे तुम्हारे अभिन्न गले में डालूँगा।

अतएव यह नव-नव कलिकाओं की कलित ललित नव लड़ी हार नव भागों में परिष्कृत है। जिसे तुम दुल्लह, दुलही के अभिन्न गले में डाल रहा हूँ। उसे पहिनने के बाद भी, यदि यह तेरे छवि छाँकी बाँकी झाँकी के पिपासे नैनों की प्यास बुझ गई, तो अच्छा ही है। अन्यथा जितना अधिक माधुरी मधुरिमा के हारों से सजना चाहोगे, उतना और सजाऊँगा।

तो लीजिये पुनः द्वितीय बार वही शब्द सुमनों की हार जिसे आप पहरे हैं। उसमें कुछ और सुंदर शब्द सुमनों को पिरो कर दोबारा सजाकर आप दोनों प्रिया प्रीतम के अभिन्न गले में डाले देता हूँ—इसका अब सम्हार रखियेगा।

तुम्हारा ही—
संत भइयाजी

रचनायक—

संत भइय्याजी

गिरा अर्थ जलबीच सम,
देखियत भिन्न न भिन्न।
बन्दौं सीताराम पद,
जिनहिं परम प्रिय खिन्न॥

प्रथम भाग

पद्य-निकुञ्ज

दुलारे हनुमान लाल जू

जै सीता जी के बाल गोपाल, जै जै छौने हनुमत लाल।
लाल देह अरु लाल लंगूर, लालै लाल लगावैं धूर,
जहँ देखौं तहँ लालै लाल, जै जै छौने हनुमत लाल॥
लक्ष्मन शक्ति लगी जब रन में, औषधि लाय जियाये छिन में।
राम जानकी भये निहाल, जै जै छौने हनुमत लाल॥
मुख चूमैं आरती उतारैं, सीता स्नेह नयन जल ढारैं,
मेरा लाल रहे खुशहाल, जै जै छौने हनुमत लाल॥
शंकर स्वयं केशरी जाये, अंजनि पूत सुयश सुर गाये,
वीर बाँकुरा बाँका लाल, जै जै छौने हनुमत लाल॥
राम द्वार के अभिमत 'संत', मेटत ताप त्रिताप तुरन्त,
विरद सुनत कर देत निहाल, जै जै छौने हनुमत लाल॥
रामलाल के अधिक दुलारे, श्री सीताजी के प्राण पियारे,
राम नाम के रसिक रसाल, जै जै छौने हनुमत लाल॥

वीर हनुमान

जै केशरी पूत बलवान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।

जै हे शोक ताप संहारी, पाप विमोचन हे दुःखहारी ।
जै जै हे गुन ज्ञान निधान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
जै मर्कटाधीश बनचारी, जै जै अंजनि गोद बिहारी,
जै हे शील सनेह सुजान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
लाल देह शुचि लोचन लाल, लाल भाल शुभ तिलक विशाल,
किलकिलान मुद मृदु मुसकान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
भक्त विभीषण शोक विनाशक, श्री सीता जू के हर्ष प्रकाशक ।
सानुकूल तुम पर भगवान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
मेघनाद लछमन बल लूटी, धाये लाये सजीवन बूटी ।
तुम्हरेहि सुयश बचे उन प्रान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
लंका घोर निशाचर आये, कर गहि शैल क्रुद्ध ह्वै धाये ।
क्षन भर में सब लगे परान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
रामचन्द्र के लाल लड़ैते, श्री सीता हिय के इकलैते,
जग यश छये तुम्हारेहि शान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
रामभक्त के अभिमत दाता, दीन जनन के भाग्य विधाता,
चारो फल कर देत प्रदान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
प्रेमी प्रियके प्रियमय बिरवा, भक्ति भाव वरदायक हिरवा,
"सरससन्त" के जीवन प्रान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।
जय जय जय हे रंग रंगीले, राम नाम के परम रसीले,
जयति दुलारे श्री हनुमान, शंकर स्वयं वीर हनुमान ।।

श्री गुरुचरण महिमा

श्री गुरु की दया से सब दुख भागे ॥
गुरु की महिमा कौन सकै कहि, श्रुति शारद मति ठागै ।
गुरु की कृपा लोक परलोकहु, सुधरि जात लव लागै ।
गुरु विन ज्ञान, न भवांनधि उवरे, प्रभु पद प्रीति न जागे ।
"सरससंत" गुरुवर की महिमा, कहैं सुनै औ पागे ॥१॥

श्री गुरु चरण की महिमा को कौन पार पावै ।
शुक, शम्भु, शारदा, फणीश, श्रुति पुराण गावैं ॥
जिनके सुनष की ज्योति सुमिरि दिव्य दृष्टि आवै ।
मद मोह महा रजनी विनु दीपही नसावै ॥
जिस पद कमल की धूरि सुकृत भूरि है भरी ।
जन मन मनोज करनी भ्रम-जाल छूट जावै ॥
जौ 'सरससन्त' प्रभु पद की प्रीति रीति चाहो ।
तो आवो चरण-शरण गुरु की वेद चार गावैं ॥२॥

श्री गुरुपद-पद्म महात्म्य

तन मन धन सुख सारो, गुरु पद पै वारो ।
श्री गुरु पद नष-ज्योति प्रभा लखि भाग महा तम भारो ॥वारो०॥

भारो भीरहू में भीर, जीव अधिक अधीर, जग नाचै जैसे कीर, पड़े कर्मन के दंड । दंड छूट जो चहो, श्री गुरु पद गहो, सदा क्षेम में रहो, कर्म छोड़ि सब उदंड ॥
कर्म छोड़ि सब निपट लपट गुरु कल्पवृक्ष पद डारो ॥ वारो० ॥

पदकंज को पराग, पंचवास जाय भाग, छन-छन अनुराग, बढ़ै प्रेम को तरंग । रंग अंग में चढ़ै, कलिमल सब कढ़ै, भाव भक्ति उर गढ़ै, पद सरिता सी गंग ॥
गंग गोदावरि तीर्थराज से गुरुपद रज शिर धारो ॥ वारो० ॥

पद कोमल ललाम, छवि शोभा सुखधाम, ध्यान धरु अष्ट याम,
बड़े काम को चरन। चरन चित्त चट देइ, भक्ति भाव भरि सेइ,
फल चार झट देइ, ऐसो मंगल करन।
मंगलमय महिमा मंजु चरण गुरु मोद भरो भंडारो ॥ वारो० ॥

पद परम पवित्र, चित्त भीति लिखु चित्र, तरे कोटि कुल पित्र,
गुरु सन्मुख जो होइ। होइ गुरु की शरन, छूटे जनम मरन,
भव तारन तरन, गुरु पद रज धोइ ॥
पद रज धोवन मधुर मधूमय अमृत की सी धारो ॥ वारो० ॥

और कहूँ नहीं ठौर, मन बीच करो गौर, सब झूठ दौरादौर,
बस गुरुपद की आस। आस सबही निरास, दृढ़ कर विश्वास
भवभय अनायास, शूलनाश को सुपास।
सब सुपास पद पास गुरू के पद बिनु नहीं उबारो ॥ वारो० ॥
गुरु ब्रह्मा औ महेश, शुक मुनि कहैं शेष, नाश होय सब कलेश,
गुरु विष्णु परब्रह्म। ब्रह्म पद की निसेनी, भक्ति मुक्ति पद देनी,
गुरु पद में त्रिवेनी, गुरु पद पर्व कुंभ।
"सरससंत" पद पर्व गर्व करि उतरो भवनिधि पारो ॥ वारो० ॥

ध्यान

[बड़ा ही सरस और मधुर दिन था—कि पुरी के पूज्यपाद महंथ श्री गंगादास जी (छोटी छत्ता) महाराज के कोमल अंक में श्री चितचोर त्रिभुवन मोहन, दुलह, श्री कौशल्या नंदन, श्री अवधेश के बड़े दुलारे, बड़ैते श्री रामलाल नौशाह जू, और दुलारे की दुलारी, अधिक पियारी श्री सुनैना नंदिनि, श्री मिथिलेश किशोरी, राज राजेश्वरी, अपने भइया की परम प्यारी, मनहरन दुलारी, आह्लादिनी, श्री मिथिला तिया की नैन पूतरी, प्रिया, श्री किशोरी, गोरी, भोरी, दाय, नवल नौशाहजादी अपने पूज्य श्री गुरु के युग-अंक में दुलह श्री युगल सरकार खेल रहे थे और श्री गुरुदेव खेला रहे थे।]

गुरु जी के गोद के रुचिर खिलौना ।
सेवत जाहि धीर मुनि ज्ञानी, ध्यानी, शंभु, रंचि. फणि छौना ।
सिय, सियवर पद मंजु कमल कल, कलित ललित कर कंज सलोना ।
कटि-पट चीर हार मनि मानिक, लसत दुहुँन छवि जनु मधु दोना ।
गौर-श्याम दोउ युगल मध्य गुरु, जनु छवि कवि किमि कहि न सकोना ।
तदपि युगल गुरु गोद मुदित जनु, मोद प्रमोद बीच गुरु टोना ॥
पुनि जनु छवि श्रृङ्गार समागम, समय तरंग मूर्तिमय सोना ॥
पुनि युग गोद ज्ञान, भक्ती बिच, गुरु अनुराग मूर्तिमय लोना ॥
कल्पवृक्ष गुरु कृपा छाँह जनु, विल्हमत प्रेम, पराग रिझोना ।
"सरससंत" यह रुचिर ध्यान विनु, भवनिधि तरनि तरन नहीं होना ॥
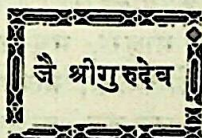
द्वितीय भाग

श्री किशोरी-प्रार्थना

चरण वंदना

श्री निमिकुल की लाड़िली, रघुकुल कुल उजियार।
प्रीतम हिय की माल छवि, संतन प्राण अधार॥
कोमल मंजुल मंजु सिय, पिय सुख मानस धाम॥
तेहि चरणन को 'संत" नित, निरखत आठो याम॥१॥

किशोरीजू की चरणन की बलिहारी।
जेहि चरणन की अमित माधुरी, मधु-अमृत से न्यारी॥
अरुण कमल कल सरसों कलँगी, मखमल ते सुकुमारी।
नषन ज्योति छवि ज्योति हरत जनु, कोटि चंद दुतिकारी॥
लाजत ललित लालिमा लखि सखि, उदय भानु अरुनारी।
"सरससंत" जेहि पद पुनीत को, राम सुजान पुजारी॥•॥

एक अर्ज मेरी सुनिये मिथिलेश की किशोरी।
रघुनाथ हाँथ धरि निज रख लें चरण की नेरी॥
तूँ भक्ति मुक्ति दात्री त्रैताप नाशिनी हो।
करुणामयी कृपा की भंडार द्वार तेरो॥
तव पद विरंचि शंकर सुर सिद्ध आदि सेवैं।
तूँ जक्त जगत जननी जग जान शान तेरी॥

जो अलख औ अगोचर जेहि निगम वेद गावें।
तव तक न हाँथ आवै जव तक नजर न तेरी॥
सव भाँति विश्व-वंदिनि आनंद कारिणी हो।
उद्धारिणी अपार पुंज पातकीन केरी॥
हैं अनुसुने तिहारे वल्लभ जो "संत" धन हैं।
कह दें गरीव यह भी आया है शरण तेरी॥३॥

मुसक्यान माधुरी

किशोरी तेरी मुसुकनि की वलिहारी।
कल कपोल मृदु अधर दसन छवि, कोटि चंद उँजियारी॥
अरुण कमल लोचन दुःख मोचन, सोच न भव की भारी।
"सरससंत" पिय हिय मन रंजन, अह्लादिनि मुदकारी॥१॥

सिया प्यारी की हँसनियाँ नीकी लगैं।
जवहिं विहँसि पिय सन वतरावति, रघुवर मन हुलसी सी लगैं॥
सुन्दर रचित सुछविमय आनन, सुघर सुचंप कली सी लगैं।
सकजल जलज लजावन दृग मृग, नव रसाल की फली सी लगैं॥
चितवनि पियतन पियमन भावनि, सव सुख खानि धनी सी लगैं।
"सरससंत" प्रीतम की प्यारी, वनी रहैं, नित वनी सी लगैं॥२॥

बोलनि माधुरी

किशोरी जी की वोलनि पै वलि जाऊँ॥
मन्द मधुर वतरावनि पिय सों, कोकिल कंठ लजाऊँ।
हंस-गमनि मुसुकानि मनोहर, ऐसो अनत न पाऊँ।
चितवनि चिवुक चारु अधरानन, दसनि अनार विहाऊँ॥
मोहन, मादन, उच्चाटन जे, मंत्र तंत्र सकुचाऊँ।
"सरससंत" नष-सिप प्रति छवि की, उपमा का कहि गाऊँ।
श्री सिय जू सम सियजू ही हैं, देखत ही सुख पाऊँ॥

कृपा नैन

किशोरी जू की नेह भरी चितवनियाँ ॥
करुणा कृपा क्षमा गुन आगरि, भव त्रयताप नशनियाँ।
सुख की खानि शील की मूरति, सहज स्वभाव हँसनियाँ ॥
मृदु जोहनि पिय छवि पिय-पिय कहि, कोकिल कंठ वचनियाँ।
सरसत स्नेह सरित की पंकज, मिथिलापुर की धनियाँ ॥
शिव विरंचि सुर ईश सुवंदित, नटनागर की रनियाँ।
"सरससंत" कर जोरि अशीसैं, वनी रहैं, श्री बने की वनियाँ ॥

चन्दा औ सियाजू

चंदा तूँ सिय जू सम नाहीं ॥
विरहिनि विरह बढ़ावन निशि तूँ, सिय शोभा की छाँही ॥
अवगुन कोक शोक प्रद द्रोही, पंकज लखि डरपाहीं।
तूँ कलङ्क वपु रंक मलिन मन, समता सिय सो काही ॥
श्री सिय जू मुख चंद छटा लखि, हिय कल कमल खिलाहीं।
"सरससंत" भव निशा सघन में, निर्मल उदित लखाहीं ॥

आरती

लली की शुभ आरति मंगल नीकी।
चूरी चटकदार चूनर शुचि, अंग-अंग ललित वनी की ॥
उर मणिहार स्वभाव शीलनिधि, सुखमा सुछवि धनी की।
कर कोमल आनंद कंद मुद, अभय दान वदनी की ॥
श्री मिथिलेश नंदिनी स्वामिनि, जिय जरनी हरनी की।
"सरससंत" वलिहार भये करि, आरति अह्लादिनि की ॥

श्री राम प्रार्थना

श्री युगल चरण ध्यान

श्री राम चरण की शोभा ॥
श्री दक्षिण पद कमल मधुव इव, मोहक मुनि मन लोभा ।
स्वस्तिक, अष्टकोण, श्रीलक्ष्मी, उर्द्धरेष, चित चोभा ॥
हल, मूसल, अरु शंष, वाण छवि, वस्त्र, कमल, रथ, जौभा ।
वज्र, कल्प, वृक्षंकुश सादर, ध्वज, किरीट, चक्रोभा ॥
सिंहासन, यमदंड, चँवर, नर, जयमाला छत्रोभा ।
वाम चरण श्री सरयू , गोपद, पृथ्वी, घट, पतकोभा ॥
जम्बू-फल, अधचंद, शंष, षटकोण, त्रिकोण, गदोभा ।
जीव, विंदु, श्री शक्ति. अमिय सर. त्रिवली, मछ, चंद्रोभा ॥
वीणा, वंशी, धनुष, तूण औ, हंस चंद्रिका, छोभा ।
"सरससंत" श्री युग चरणाश्रय, जिन पायो तिन शोभा ॥

जन्म

ललनवाँ भवनवाँ री माई ॥
कौशिल्या के आजु भये सुत, त्रिभुवन साईं री माई ॥
राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुहन, चारिउ भाई री माई ।
अरुण अवीर धूप अँधियरिया, अंगनवाँ में छाई री माई ॥
चन्दन, केशर वरसावत सव, वजत वधाई री माई ।
कंचन कलश द्वार वहु बाजै, शुचि शहनाई री माई ॥
'सरससंत' आनन्द उमँगि अलि, प्रमुदित धाईं री माई ।
सुमन वरसि इन्द्रादि वधू नभ, जै जै छाई री माई ॥

सोहर

चैत सुदिन मधुमास सुतिथि नौमी भाये, आनन्द सोहाये हो ।
अहो, नषत पुनर्वसु योग कौशिल्या के जाये हो ॥

शीतल मन्द समीर सोहावन लागै, अंग अनुरागे हो।
अहो, देव श्री दशरथ राउ सराहत भागैं हो॥
प्रमदागन हुलसाय बधइय्या लावहिं, सुवस्त्र लुटावहिं हो।
अहो, याँचक याँचत द्वार सुविरद सुनावहिं हो॥
कंचन कलश सुभामिनि, गौरी मनावहिं, सुरुज मनावहिं हो।
अहो, अँचरा पसारि अशीशैं कौशिल्या मन भावहिं हो॥
सहगामिनि कलकंठ सुमंगल गावहि, सोहर गावहिं हो।
अहो, युग-युग जीयें ववुआ राम कौशिल्या गोद छोहहिं हो॥
मणिमय अँगना में वैठीं कौशिल्या सुख पावहिं, लोग सब आवहिं हो।
अहो, लेइ-लेइ गोद खेलावहिं लाल दुलरावहिं हो॥
किलकत जब हलरावहिं, पलना झुलावहिं, अँगुरी चटावहिं हो।
अहो, चुटकिन ताल बजावहिं, लाल फुसलावहिं हो॥
राई लोन उतारहिं, अधिक सँवारहिं नजरि बचावहिं हो।
अहो, हँसि हँसि लाल हँसावहिं हँसत पुचकावहिं हो॥
कबहूँ जब उबटावहिं, कजरा लगावहिं, त रोदना पसारहिं हो।
अहो, रुनझुन झुँझुना बजावहिं काग देखावहिं हो॥
येहि विधि दशरथ भवन बहुत सुख छाजै, वधैया बाजै हो।
अहो, शिव मुनि 'सत" प्रशंसत अवध महराजहिं हो॥१॥

आजु अवधपुर मंगल बाजन बाजै, तोरन छाजइ हो।
अहो, जन्मे हैं लाल कौशिल्या के नौवत गाजइ हो॥
गगन विमान प्रशंसहिं सुमन बहु वर्षहिं, देव सब हर्षहिं हो।
अहो, शिव सनकादि मुनीष अवध सुख तरसहिं हो॥
इत-उत भामिनि धावहिं खबर जनावहिं, सोहर गावहिं हो।
अहो. कंचन कलश धरावहिं द्वार सजावहिं हो॥
गजमनि चौक पुरावहिं. दीप जरावहिं. अँगना लिपावहिं हो।
अहो, जुरि जुरि नारि नवेली कौशिल्या गृह आवहिं हो॥

मणिमय फटिक सुअँगना कौशिल्या रानी न्हावहिं, सुदेव मनावहिं हो।
अहो, सहगामिनि करि रीति छठी दिन पुजावहिं हो ।।
अहिरिन हाथ देहेड़िनी, सुपान वरइनी नउनियाँ सोहहिं हो।
अहो, नाचत गुनी गन्धर्व सगुन शुभ होवइ हो ।।
मनिगन मोतिन माल सुवरण लुटावहिं, सुवस्त्र लुटावहिं हो।
अहो, नेगी नेग चुकाय बहुत सुख पावहिं हो ।।
अति आनन्द बढ़ावहिं, नारि सब गावहिं, बलका खेलावहिं हो।
अहो, चुमि चुमि अधर कपोल सुकंठ लगावहिं हो ।।
कबहुँक चंदा देखावहिं मामा बतावहिं गोद उचकावहिं हो।
अहो, अँचरन वायु डोलावहिं हियरा लगावहिं हो ।
रोवत जब छइलावहिं, त गुड़वा देखावहिं, झुँझुना बजावहिं हो।
अहो, थपकिन भाँति लुभावहिं हाऊ कहि बतावहिं हो ।।
नींदिया से मातल सोहावहिं नैन झपकावहिं, गोद सोवावहिं हो।
अहो, हलके से पौढ़ि पौढ़ावहिं अँचरा ओढ़ावहिं हो ।।
निंदिया से मातल सोहावहिं नैन झपकावहिं, गोद सोवावहिं हो।
अहो, हलके से पौढ़ि पौढ़ावहिं अँचरा ओढ़ावहिं हो ।।
सोवत छवि मन भावहिं, नैन जुड़ावहिं, विधना मनावहिं हो।
अहो, नीके रहैं चौथपन क पूत सुदेवता मनावहिं हो ।।
शिव मुनि 'सन्त' प्रसादहिं, भाग महराजहिं, पुरल अभिलाषहिं हो।
अहो, नित नव बाढ़ै अनन्द अवध सुख राशिहिं हो ।।२।।

बरजन

दूर खेलन जनि जइय्या, सुघर मोरे भइय्या, हहरि कहै मइय्या हो।
ललना, गली गली डोलैं बटमार कुचटक लुगइय्या हो ।।
हेम रचित तोर कंगना, कंज कर सोहना; कमर करधनियाँ हो।
ललना, अंगनै में रहियऽ मोरे लाल उमर लरकनियाँ हो ।।
मोती मणि-माल सुगरवा, लगत मोहिं डरवा, जनि जाय बहरवाँ हो।
ललना, डेहरी में खेलु चारो लाल, भूलि जइबऽ डगरवा हो ।।

अँखिया क जोति मोरे ललना, झुलहु किन पलना, सुदेखे बिनु कलना हो।
ललना, गहि गहि कंठ लगावहिं कौशिल्या रानी अंगना हो ॥
जुरि जुरि रानी रिझावहिं बहुत बुझावहिं, ठोकवा धरावहिं हो।
ललना, ठुमकि ठुमकि हरि धावहिं घुरि घुरि खावहिं हो ॥
खेलत खात खवावहिं, अति छवि छावहिं, मातु रिझावहिं हो ॥
ललना, जूठन अजिर गिरावहिं काग सुख पावहिं हो ॥
कबहूँ ताल बजावहिं लाल नचावहिं, अँगुरी धरावहिं हो।
ललना, रुनझुन पग पैजनियाँ चलत मन भावहिं हो ॥
घूँघर लट लटकावहिं, सुछबि सुख पावहिं, मधुर मुसुकावहिं हो।
ललना दुइ दुइ दसन सोहावहिं तड़ित दुति लजावहिं हो ॥
चिक्कन कच गभुआरहिं, नैन रतनारहिं, सजित कजरारहिं हो।
ललना, मन मृग लोभी विचारहिं भये मतवारहिं हो ॥
धूसुर धूर सोहावहिं, अधिक मन भावहिं, लालन छवि पावहिं हो।
ललना, नील गगन जनु घोर घुमड़ि घन छावहिं हो ॥
जन मन मोद बढ़ावहिं,'संतति'सुख पावहिं,कौशिल्या गोद भावहिंहो।
ललना, युग युग जीयैं बबुआ राम सोहर सब गावहिं हो ॥३॥

सोहर किशोरी जी की

नौमी तिथि शुभ मंगल, वार सुमंगल, मंगल छावहिं हो।
अहो आदि शक्ति अवतरी, सुवर शुभ घरी, बधइय्या बाजइ हो ॥
मंगल मिथिला आज, जनकपुर राज, सकल सुख साजइ हो।
अहो मंगल माधव पाख, सरस बैषाख सुयश महराजइ हो ॥
त्रिविध समीर सोहावन, वहत अति पावन, अंग हरषावइ हो।
अहो नभ सुर सुमन गिरावहिं, सुयश सराहहिं, जनक महराजई हो ॥
चंद्रवदनि मृगलोचनि, पास परोसनि, मंगल साजइँ हो।
अहो दधि, दुर्वा, गोरोचन, सजि सजि लोगन, मंगल थारइ हो ॥
भरि भरि भार सँवारहिं, सुनैना घर आवहिं, बधइय्या गावहिं हो।

अहो लखि लखि ललित लुनाई सिया की सुघराई मोह उर छावइँ हो ॥
रानी भरि भरि थार कनक मणि हार सुवस्त्र लुटावइँ हो ।
अहो वंदी भाँट कहार, सुयाचक द्वार सुविरद सुनावइँ हो ।
वारंवार लड़ैती, निरखहिं, हरषहिं, नारि सब छोहइँ हो ।
अहो चुमि-चुमि अधर कपोल,सुकिलकनि बोल, सुमुख छवि जोहइँ हो ॥
उबटन जब उबटावहिं, कजरा लगावहिं त रोदना पसारइँ हो ।
अहो छुल छुल अँसुवाँ वहावइ, लढ़ैती छइलावइ,त गोद हलरावइँ हो ।।
चुटकिन चटक वजावहिं, वायू डोलावहिं कंठ लगावइँ हो ।
अहो थपकिन भाँति रिझावहिं, झुँझना वजावहिं, पलना झुलावइँ हो ॥
दिन प्रति गौरी, गनेश, दिनेश, सुरेश महेश मनावइँ हो ।
अहो राई लोन उतारि सुदिवस विचारि कुनजर वचावइँ हो ॥
देखत अति छवि लोनी, जनक जू की छोनी, सु-तन, मन वारइँ हो ।
अहो घर पुर परिजन आय, सुमंगल गाय, सुभाग्य सराहइँ हो ।
शिव ब्रह्मादि सुसेवित 'संत" सुवंदित सुमुनि जन मोहइँ हो ।
अहो प्रगटी सोइ प्रदायिनि, प्रेम विहारिनि, सुनैना का गोदइ हो ।
जुग जुग जीयैं मोरी वारी, श्री जनक दुलारी, सुरुज मनावइँ हो ।
अहो शारद, नारि महेश, कपट धरि वेप, सुसोहर गावइँ हो ॥

खेमटा

वधय्या वाजै सोहावनो री ।
आजु सुदिन शुभ घरी सुहाई, पावन भये अपावनो री ॥
जनक लली प्रगटी मिथिलापुर, पुरजन सुख सरसावनो री ।
राउ मुदित मन हेम थार मणि, अगनित मुहर लुटावनो री ॥
सुखी भये सब याचक मुनि जन, वंदी बिरद सुनावनो री ।
सिया मातु हुलसाय उमगि उर, अन्न सुवस्त्र लुटावनो री ॥
शिव ब्रह्मादि सुरेश सकल सुर, गगन सुमन वरसावनो री ।
"सरससंत" चिरजीवैं लढ़ैती, सरस वघइय्या गावनो री ॥

निवेदन

तनिक हँसि हेरो मुख जनि फेरो ॥
कब से खड़े तेरे दरस द्वार पै, अब क्यों करत अवेरो ।
प्राणनाथ रघुनाथ तुम्हैं तजि, और कौन केहि टेरों ॥
यह जग भूठे नेह सनेही, द्वंद फन्द के चेरो ।
जा संग प्रीति रीति रति चाहौं, सोउ ममता मद घेरो ॥
अब सब छोरि जोरि कर आयो, मोपै गाँव न खेरो ।
राखहु चरण शरण प्रतिपालहु, 'सरससंत' यह तेरो ॥५॥

गज़ल

जरा नेह नज़र तो मिलाया करो ।
अपनी सूरत समाँ को सजाया करो ॥
हों विखरे से बालें वने घूँघरारे ।
अतर से भरे लहराया करो ॥
नैन बीच अंजन सजें कोर वारे ।
वंक खंजर से भौंहें फिराया करो ॥
अधर कन्द कोमल कमल से सुवासित ।
ऐ बाँके बदन मुसकराया करो ॥
झुरस जो गयीं हैं तहे दिल कि कलियाँ ।
खिलें गर कृपा वृष्टि दाया करो ॥
"सरससंत' प्यासे नयन तेरे छवि के ।
वने गर तो छविरस पिलाया करो ॥६॥

तर्ज दूसरा

गुज़र कुछ हमारो हो नेह नजर में ।
बसर कर सकूँ जिसमें कदमे कदर में ॥
बकत जिन्दगी का नहीं कुछ ठिकाना ।

न जाने कि कब होगा चलना कबर में ॥
है बेहतर तो यह अर्ज़ जैसा मुनासिब ।
करूँ बन्दगी कूँचये तुझ सदर में ॥
सुबह शाम मालिक के आमोदरफ़ की ।
बुहारा करूँ राह जाकर नगर में ॥
तलब कुछ न बेदाम करके गुलामी ।
करूँगा गुज़र तेरे जूठन कबर में ॥
अदम तक मोहब्बत तुम्हारी न कम हो ।
बढ़े दिन ब-दिन मेरे लख्ते जिगर में ॥
बिगड़ी है मुद्दत की जो बदनसीबी ।
वो सब कुछ सुधर जायगी एक नज़र में ॥
गुनहगार मुझसा से बन्दागिरी का ।
ये अहसान का गाँठ गँठ लो कमर में ॥
"सरससंत" फरज़न्द दशरथ कुँवर का ।
हूँ बन्दे का बन्दा हो शोहरत शहर में ॥७॥

प्रार्थना

सुनकर दया का सागर आया हूँ शरण तेरी ।
सुधि लीजिये सुधाकर बिगड़ी दशा है मेरी ॥
जप, योग, यज्ञ, साधन, हौं कर्म हीन सबसे ।
पीड़ित त्रिताप का हूँ त्रैताप हरो मेरी ॥
मद मोह महा मत्सर अँधेर कूप में हूँ ।
कुछ सूझता नहीं है गहि लेहु बाँह मेरी ॥
यद्यपि हूँ पातकी औ कामी कठोर कलुषी ।
तद्यपि सरन हूँ तेरी त्रैताप हरो मेरी ॥
हे "सरससंत" प्यारे श्री कौशिला दुलारे ।
गहि हाथ पास लीजै निज चरण में बसेरी ॥

(२)

चरण शरण नाथ शरण तिहारी।
मोपर कृपा करहु धनुधारी॥
हौं अनाथ तुम नाथ सकल जग।
दीन दयाल कृपाल खरारी॥
तूँ पावन, हौं पतित अपावन।
हौं अघ अधम, तूँ हौ अघहारी॥
"सरससत" चरणन को चेरो।
तेरो हेरो अवध विहारी॥ २॥

(३)

कहो कब बनैगी हमारी तुम्हारी।
या यूँही चलैगी हमारी तुम्हारी॥
श्रवण मूँदि वैठे सुनोगे नहीं क्या?
दुःखो जन के दुःख का अहो दुःखहारी॥
विरद आपका सुन हूँ आया शरण में।
रखोगे शरण में, या दोगे विसारी॥
समझ लो, समझ लो फिरा द्वार से जो।
बहुत हास होगी जगत में तुम्हारी॥
है बेहतर कि कर दो कृपा "संत" जन पर।
औ कह दो तूँ जीता गया मैं हूँ हारी॥ ३॥

गज़ल

अब तो ड्योढ़ी पै तेरे आके बसेंगे प्यारे।
है तमन्ना यही अब आके बसेंगे प्यारे॥
था बहुत दूर जो कदमों से वदनसीबी थी।
अब तो कदमों से उम्र भर न खसेंगे प्यारे॥

दिल लगी तुमसे दिलग्गी न करो इस दिल से।
सारी दुनियाँ ये दिलग्गी से हँसेगे प्यारे॥
आह की आँच तपे दिल पै आव है कि नहीं।
इक तेरे इश्क कसौटी पै कसेंगे प्यारे॥
कनक की चाहना पै लोग-बाग फँसते हैं।
भवन कनक की "कनकभवन" फँसेगे प्यारे॥
गुज़र नहीं है "सरससंत" पास में न सही।
सामने आप उधर, इधर बसेंगे प्यारे॥

राउर बिगड़लबा चलनियाँ कैसे सफरी॥
जन्म जन्म के नात साथ के देहलन हाय बिसारी।
करुणानिधि कृपाल रघुवर हैं वेद विदित दुःखहारी।
ऐसन व्यापक बा वचनियाँ कैसे सफरी॥

दीनानाथ दीन के पालक गइलैं भूल सजनवाँ।
विरद विसारन भये निठुर अव हो गइलैं वेगनवाँ।
इनकर बिगरल बा तकनियाँ कैसे सफरी॥

गुनि गुनि नेह गेह तजि अइली लोक लाज सब छूटल।
संग संघाती कुल कुटुंब कै ताग तड़ातड़ टूटल।
नाहक भइलैं परीशनियाँ कैसे सफरी॥

पहले किये करार साँवरे हम तुम एक संघाती।
नेह लगाय बढ़ाय प्रीति के अव जारत हैं छाती।
जर जर कै देहलै परनियाँ कैसे सफरी॥

मन्द मधुर मुसुकाय मोहि मन बन गइलैं चित चोर।
चाहक और न होत कोई तऽ कैसन हृयन कठोर।
इनकर देखित मरदनियाँ कैसे सफरी॥

रंक राउ के करैं छिनक में रंक के कर दें राजा।
तुँबा फेरी क गुन बाटै लोग कहैं महराजा।
जैसे कसरवानी वनियाँ कैसे सफरी॥

गुरु गोविंद दोऊ के बीच में वाटै अरज हमारी।
"सरससंत" डूबत भवसागर कर गहि लेहु उबारी।
दै के अभय वरदनियाँ कैसे सफरी।

निठुरपन प्यारे नीक न लागे॥
तव मुख अति प्रसन्न जग जाहिर, सो कस रूस वस ठीक न लागे॥
विरद विशाल दीन प्रतिपालक, तजहु निठुरपन लीक न लागे।
कृपा खानि श्री स्वामिनि पिय तूँ, लोग कहैं तामे झीक न लागे॥
"सरससंत" तन तकि हँसि हेरो, वहुत मान अब हीक न लागे॥

व्यंग प्रार्थना

आखिर ओही कइला जौन रहल तोरे मन में॥
छवि दिखला के मन के लुभा के, हिय में समा के औरो तन-तन में॥
मन्द मुसुका के गरे से लगा के, मदुआ पिया के छवी क छन-छन में।
कजरा लगा के करेजे में जाके, नैना मिला के वता के सैनन में॥
समझा के वुझा के मजाक़ उड़ा के, छोड़ि छुड़ा के मिला के दन-दन में।
'सरससंत' ऐसै जो होई, त जाई जान ई तोरे खेलन में॥ १॥

चतुर छलछन्दी औ तुमहीं चोर॥
करि छल वंभोला अवढर को, प्रेरि पियावो विष घोर।
नारद गारद भये तनक में, वीणा तार दई तोर॥
छल करि बलि नृप लई ललकि कर, अर्ध तीन पग पोर॥
निज भ्राता ते चोरी कीन्हीं, रोये रोये वन वन खोर।
चोरी ते रुक्मिणी सँवारी, घर घर वृज के चोर॥

बाहर चोरी करी करो सो, नन्दउ जू को लकुटिया चोर।
मिथिलावासिन औ व्रजगोपिन, के चित्त को लियो चोर ॥
चोरन गुरु सरदार आप हौ, ताहू पर बरजोर ॥
'सरससन्त' चरणन अनुगामी, तासों भये हो कठोर।
लक्ष्मीपति ह्वै लक्ष्मी नरायन, अव विवेक दियो छोर ॥ २ ॥

प्रतीच्छा-प्रार्थना

इन्तजारी में सबो उम्र ढाये वैठे हैं।
ये सच कसम है गोया दिल दवाये वैठे हैं ॥
नहीं अरमान मेहरबान ना मेहरवानी।
जो मेहरवान वहीं मुँह छिपाये वैठे हैं ॥
मैं माना था गुनाहगार वहुत मुद्दत से।
हैं गरीव के निवाज इस लिहाज़ बैठे हैं ॥
मगर हुई न मेहरवानियाँ सो हो कैसे।
जव किसी के खुद ही पढ़ाये सिखाये वैठे है ॥
लगी वुरी है लगन अव तो नहीं छूटैगी।
ये दिल्लगी है, नहीं दिल लगाये वैठे हैं।
जरा सा शर्म नहीं एक मरीज़ये दिल की।
दवा करी न और जी जलाये वैठे हैं ॥
सरस है "संत" मज़ा था तो कि आते एक बार।
न आवो मर्ज़ी अव तो दिल बिछाये वैठे हैं ॥ १ ॥

—:o:—

तेरी नाज़ पै हम मरे जा रहे हैं।
मनो संसार सागर तरे जा रहे हैं ॥
तेरे तेग़ अबरू के हर एक निशाने।
से हर एक गुनाहें हरे जा रहे हैं ॥
ग़ज़ब जुल्फ जालें जो घुँघरारे कारे।
हम उस जाल में घर करे जा रहे हैं ॥

हँसन मन वसन चित चमन खिल गये।
जो न फूली कभी सो फरे जा रहे हैं॥
निगाहों से देखा निगाहों की रुतवा।
तो निगाहे नज़र कर धरे जा रहे हैं।
'सरससंत" फरज़ंद दशरथ दुलारा।
के हर एक अदाँ पै मरे जा रहे हैं॥२॥

—:०:—

जरा भी सुधि न रही मेरी तुम्हें ऐ प्यारे।
हैं बड़े भाग मिले पातकी हमसों प्यारे॥
न तुम्हें सुधि, न हमें सुकृत की कभी आशा।
भली जोड़ी मिली पावन हो, पतित हौं प्यारे॥
तुम्हें है लाज नहीं, विरद जो जगत छाई।
तरेंगे क्यों न ? पातकी तुम्हीं कहो प्यारे॥
सरस है "संत" तेरे नाम को जो यश छाई।
ये जग जहान बीच होगी बुराई प्यारे॥
है भला अब से गहो हाथ साथ लो जन को।
जगत हो नाम तेरा काम मेरा हो प्यारे॥ ३॥

—:०:—

एक नज़र के वास्ते दीवाना दिल को कर दिया।
कज़ निगाही ठान ली बुतख़ाना दिल को कर दिया॥
हुश्न का रौशन बना कर चश्क चश्मों को किया।
ग़ुल परिंदे की तरह परवाना दिल को कर दिया॥
दिल की कलियाँ इश्क अश्कों से सज़ी जो खुश रहां।
सर्वती दिखला झलक महेख़ाना दिल को कर दिया॥
"संत" ऐ फरजंद दशरथ नंद शाहंशाह जू।
इश्कये दिल दोस्त जावो नज़राना दिल को कर दिया॥ ४॥

—:०:—

दिल दे चुका हूँ प्यारे एक बार मुस्करा दे।
ये सच कसम करा ले एक बार मुस्करा दे ॥
वह कौन सी अदाँ है जिस पर जहान मरता।
साक़ी जरा दिखाकर एक बार मुस्करा दे ॥
हर रोज़ ये निगाहें अरमान लिये बैठीं।
मुद्दत गुज़र रही हैं एक बार मुस्करा दे ॥
इस उम्र की तमादी अब ख़त्म हो रही है।
फरज़ंद नंद दशरथ एक बार मुस्करा दे ॥
ग़र "सरससंत" दिल से होगी जो कज़निगाही।
तो जायेगी जान एक दिन एक बार मुस्करा दे ॥ ५ ॥

—:o:—

तशवीर खिंच गई, तशवीर खिंच गई।
था प्यार भरा रौशन परवर दिगार का ॥
लिक्खा था भाल में मगर तदवीर खिंच गई।
तूफान उठा दी है दिल दोस्तों ने मुझ पर ॥
सोचा था निभेगी पै छुरी दिल पै खिंच गई।
दिल दोस्तों विचारो यह इश्क की हक़ीकी ॥
यह इश्क दिले ग़म की तकसीर खिंच गई।
दिल दोस्तों ने छीना वह प्यार भरा चितवन ॥
अंदाज़ क्या है, उनको जानों आँख खिंच गई।
यह इश्क की गली है, लाखों गये गुज़र हैं ॥
उम्मीद की हस्ती पै सब उम्र खिंच गई।
यह इश्क की हक़ीक़ा पपिहा ही जानता है ॥
पी प्यार जगत पाता पै तक़दीर खिंच गई।
महबूबे मेरा शायर फरजंद नंद दशरथ ॥
का "सरससंत" दिल पै तशवीर खिंच गई ॥ ६ ॥

—:o:—

निगाहें नाज़ से जब तक दिले अंदाज़ न होगा ।
ये आशक दिल का तब तक यार तीरंदाज़ न होगा ।।
जो खुद अख्त्यार फ़र्मादार ख़िदमतगार ग़र होगा ।
बसर करता है, कर लेगा, पै गैरंदाज़ न होगा ।।
तक़ाज़ा लुत्फ़ का जब तक तेरे दीदार न होगा ।
मोहब्बत का वफ़ा क्या, जब के दर्दन्दाज़ न होगा ।।
हशरते दीद हो कर जब कि क़दमों पै न सर होगा ।
मछाले इश्क का तब तक चिराग़न्दाज़ न होगा ।।
समाँ होगा खयाले यार खुद होगा तो क्या होगा ।
न होगा 'संत' दिल तब तक फिसानन्दाज़ न होगा ।।
अहले महबूब कर गर मेहर शहरे मशहूर तूँ होगा ।
मिटेगा ग़म जहाँ जन्नत से दस्तन्दाज़ न होगा ।। ७ ।।

—:०:—

दयामय जानकी जीवन गरज़ एक बात है तुम से ।
मैं आया हूँ शरण तेरी सो हागी बात एक तुम से ।।
नहीं बनता कभी वह कर्म जिससे तुम द्रवित होवो ।
तरेंगे जन्म के पापी सो कैसे ? बात एक तुम से ।।
तुम्हीं हो सुकृत औ दुष्कृत, दुःखद औ सुखद के दाता ।
सो दुष्कृतके पुजारी हम, सुकृत नहिं बात एक तुमसे ।।
ये तेरी जो दयामय नाम है इस जक्त जाहिर में ।
सो क्यों ? अब तक है निठुराई यही एक बात है तुमसे ।।
रहेंगे चन्द दिन ही प्रान अब अवधी रही थोरी ।
दयामय हो दया कर दो यही एक बात है तुमसे ।।
बनाओ पद कमल पदकी जो पनहीं नाथ अब मुझको ।
सरस है 'संत' सिय पिय सार यही एक बात है तुमसे ।। ८ ।।

—:०:—

मोरी तोरी प्रीति लगी रे सनेहिया,
अबका जो लगि गई नजरिया हाय राम।
गृह कुल कुटुम्ब लाज सब परिहरि,
अइलौं मैं तोहरी दुअरिया हाय राम॥
सुनु सिय पिय जिय की को बूझै,
जासे बताऊँ कहँरिया हाय राम॥
एहो रसिक रघुनन्द साँवरे,
का ऐसे बिताइब उमरिया हाय राम॥
कृपा करिय जेहि निकट मैं आऊँ,
तोरे नाम की लेके गठरिया हाय राम।
'सरससंत' दिन ऐसै बिताइब,
गइबै बजाके खजरिया हाय राम॥ ९॥

चैती

नई नहिं प्रीति पुरानी हो रामा, तोसों सँवलिया॥
तोहिं हेतु बहु भाँति सनेहिया, याँचौ जहँगति मानी॥हो रामा तोसों सँ०॥
समझौं सुनौं गुनों नहिं नेकहुँ, ऐसी अकिल हेरानी हो रामा।
जैसे कोई फंद में पड़ि के, छूट न बरु अरुझानी हो रामा।
ज्ञान भक्ति साधन कोटिन करि, तदपि न मोह नसानी हो रामा॥
अब तो केवल कृपा "संत" गुरु, औरो आस बिरानी हो रामा॥
चाहत चरण शरण सीतापति, दीजै अभय बरदानी हो रामा॥

जिसमें तेरी रज़ा है

शीसे से नरम होता है इन आशिकों का दिल।
पत्थर से कठिन होता है, इन आशिकों का दिल॥
ग़र हो रहम ज़रा तो इन आशिकों का दिल।
कदमों में सर चढ़ा दें, इन आशिकों का दिल॥

मुमकिन हो कज़निगाही तो आशिकों का दिल ।
ग़म उफ़ न करें, सिजदा, इन आशिकोंका दिल ॥
अरमाने ख्याल हो अगर तो आशिकों का दिल ।
आँखें बिछा दें राह में, इन आशिकों का दिल ॥
हो जाय तसउव्वर कहीं तो आशिकों का दिल ।
ख्वाहिश में चश्मे तर हो, इन आशिकों का दिल ॥
मुश्किल है तशउव्वर न हो तो आशिकों का दिल ।
हर सितम सहें दिल पै, इन आशिकों का दिल ॥
लेटे रहेंगे दर पै पड़े आशिकों का दिल ।
दिन रात ज़िगर थामे, इन आशिकों का दिल ॥
दिन दर पै कटै, रात कटै, आशिकों का दिल ।
करवट बदल बदल कर, इन आशिकों का दिल ॥
आँखों से नंद दशरथ, तुम्ह आशिकों का दिल ।
मसला करेंगे तलुये, इन आशिकों का दिल ॥
महबूब नूर समाँ देख आशिकों का दिल ।
जल जायँगे लिपट कर, इन आशिकों का दिल ॥

लाचारी

गुज़ारूँगा दिन जैसा होगा सो होगा ।
बताऊँ मैं क्या, जैसा होगा सो होगा ॥
बनेंगे नहीं कर्म अच्छे कभी भी ।
बुरा या भला, जैसा होगा सो होगा ॥
ये माना कि पापों की गठरी है सर पर ।
तो हम क्या करें, जैसा होगा सो होगा ॥
अगर तुम कहोगे कि आया यहाँ क्यों ?
ये जानोगे तुम, जैसा होगा सो होगा ।

सुकृत कर तरेंगे, तो तुम किस लिये हो ?
न तारोगे तो, जैसा होगा सो होगा ॥
"सरससंत" हैं पातकी, यह सही है।
मगर हैं तेरे, जैसा होगा सो होगा ॥

नशीहत

तेरे तो ढंग हैं वही जो अपना बना के छोड़ दे।
जैसे कमाने तीर धर, खिंच कर ज़िगर से छोड़ दे ॥
दुनियाँये हर इबादतें दीदारे हशरते सनम।
कहे तो भुला दें यार तूँ, मुझको भुलाना छोड़ दे ॥
कैसे कहूँ ज़िगर पै तेरी ख्याले मोहब्बत है नहीं।
मुझको भुला दो तुम, ये शराफत नहीं है छोड़ दे ॥
नेहे नज़र का क्या यही वसूल है जी-गर पूछो।
हर आदमी के दिल की तमन्ना मसल के छोड़ दे ॥
लाखों मलाले इश्क़ ग़म सदमे सहे, तो यह भी सही।
तुम अपना बना के छोड़ दो, हम अपने को कैसे छोड़ दें ॥
गुज़रे जो उम्र "संत" ये महबूब हर सितम को लिये।
मुमकिन भी दम निकल पड़े, हम तो न छोड़ें, तूँ छोड़ दे ॥
अरमाने ज़िंदगी बसर करना सबक है ढंग तेरा।
वो तो हैं बड़े बावरा, जो तुझसा भी पाके छोड़ दे ॥

विरह-वेदना

अपने हिया की ज़रनियाँ सजनी कासे कहूँ ॥
अवध के छैला बाँको मोहनी सुरतिया सजनी०।
बिना देखे न चयनवाँ, सजनी कासे कहूँ ॥
ज़ुल्फ घुँघरनवा बंक नैन कजरनवाँ सजनी०।

बाँका तिरछी तकनवाँ, सजनी कासे कहूँ ॥
कुंडल हलनवाँ, नासामणि की झुमनवाँ, सजनी० ।
मन्द मोहनी हँसनवाँ, सजनी कासे कहूँ ॥
सपने में रतवा मोसे कैलै बड़ा घतवा, सजनी० ।
कैसे करै कोई बयनवाँ, सजनी कासे कहूँ ॥
"सरससंत" रस-रसिक सजनवाँ, सजनी० ।
तब से बाढ़ी विरहनवाँ, सजनी कासे कहूँ ॥

—:::—

अँखियाँ में करकैं दशरथ लाल ॥
मनिमय मुकुट मकर कल कुंडल, चंदन खौर केशरिया भाल ॥
सुखमा-कंद सुघर नष-सिष छवि, कटि-पट-पीत कसे करवाल ।
नैनन अँजि आँजि सैनन करि, जिय तन मन मम कीन्ह विहाल ॥
चारु कपोल चिबुक अधरानन, वंक भृकुटि शुचि घूँघर वाल ।
"सरससंत" मुख मंद हँसनि करि, सिय पिय दीन्हीं फाँसी डाल ॥

—:०:—

आओ चाहे न आवो सब याद आ रही है ।
मन-मोहनी सोहानी सुख याद आ रही है ॥
हिल-मिल सबन को मोहा टुक नेह नजर जोहा ।
वह प्रीति भरी बातें सब याद आ रही हैं ॥
पल पल तुम्हारे प्यारे अलकावली की शोभा ।
वारे दुधारे कच को सब याद आ रही है ॥
दृग मीन मृग लजावन जनु घेरे घटा सावन ।
कजरारे कोरेवारे सह याद आ रही है ॥
भौंहें कमान कस के नैनो पै हँस के मारा ।
बे-जगह चोट छाई हा! याद आ रही है ॥
प्रिय "सरससंत" तेरे हर एक माधुरी का ।
सकुचानि हँसनि बोलनि बस याद आ रही है ॥३॥

चिंता

हरि ओर भइलैं गुलरी क फूल।
जन्म जन्म कर नात साथ सुधि, विलग भए मम गइलैं भूल॥
जग भव-सिंधु तरनि जीवन मम, दुःख-सुख पवन चलै प्रतिकूल।
काम क्रोध मद मोह संघाती, संग परबस बस मिलत न कूल॥
हा! हरि विरद बिसारन आईं, भव तारन कारन तुम मूल।
"सरससंत" प्रभु करुणागामी, स्वामी खैंचि लगावहु कूल॥१॥

—:०:—

कैसे बीती हो अब दिनवाँ सजनवाँ रूठि गये॥
चढ़लीं जवानी मोके, कइलैं वेपानी, मोते खूँटि गये।
मोरे नान्हें की सनेहिया, जानो तूटि गये॥
गुनि गुनि नेहिया के माल पिरोयों, सोऊ टूटि गये।
माया ठगिनी बजरिया, कौनो लूटि गये॥
सिया के सजनवाँ भइलें सपने क खेलउनवाँ, मोते छूटि गये।
कौनो औरइ के संगवाँ नतवाँ जूटि गये॥
'सरससंत' धनवाँ मन के हरनवाँ सनवाँ झूठ भये।
दीन दया के निधनवाँ प्रनवाँ टूट गये॥२॥

आँखमिचौनी

का करौं मिलतै बिछड़ गयीं अँखियाँ॥
सोय रहीं मैं अपनी सेजरिया,
सपने में मिल गई प्यारे से अँखियाँ॥ का०॥
कछु बतरात रहीं नैनन सों,
सैनन में रस बतियाँ॥ का०॥
'सरससंत' नियरे हरि आये,
बैरिन नींद उचट गयी रतियाँ॥ का०॥

ताना

ऐसे बेदरदी से पाला पड़ा।
निठुर निठुरपन कीन्हीं मोसों, दरशनहूँ में लाला पड़ा॥
नहिं पूछत कछु मनहिं न बूझत, सूझनहूँ में अब ठाला पड़ा।
विरह आँच अंचल लौं छाए, लपट लगे तन काला पड़ा॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदिया 'सरससंत' 'मतवाला' पड़ा।
इत तो प्राण जाय उत विहँसैं, बड़े निरमोहिया से पाला पड़ा॥

संतोष

ऐसे बेदरदी से जिया मोर लागा।
मोहनि मूरति साँवलि सूरत, छैला छपकि छुपि छवि दिखलागा।
नैनन सैन वैन मृदु मोहनि, हँसनि फँसनि जुल्फन में फँसागा॥
बैठि रहीं मैं स्नेह-कुंज में, चित को चुरा के लुका के लै भागा।
'सरससंत' भर पाई प्रीति करि, सिय स्वामिनि पिय हिय बड़ कागा॥

मान

जावो जी जावो जहाँ रैन गँवाई।
प्रीति किये तोते कछु न सिरानो, जैसे इनारुन फल की करुआई।
ऊसर सरिस प्रीति जस तेरो, थोरेहि जल बरषे इतराई॥
मुख मीठो मन मैलो भँवर सों, रस लोभी, पै हौ हरजाई।
'सरससंत' फल पाइ प्रीति करि, जान लई तुम्हरी चतुराई॥ १॥

—।०।—

दूरे से लाड़ लड़ैबै छयल तोरे पास न ऐबे।
मन्द हँसनि मृदु दसनि लसनि लखि, जिय की जरनि बुझैबै। छैल०॥
बंक भृकुटि तेरे चपल चातुरे, नैना से नैना मिलैबै।
मीठे मन्द मधुर मुद बैनन, आपनि रहनि सुनइबै॥
समदर्शी जग सुनी गुनी पै, देखी चाल अजैबै।
बैरिनि ननद दायें बायें लगी रहैं, कैसे के तोरे लगे जइबै॥

मिलन विरह दुःख तेरे लिए अब, काशी करवट लैबै।
ऐसे भये बेरहम निठुर तुम, दगाबाज कहवइबै॥
'संत' सकल तजि तेरी गली में, सौ सौ फेरा लगइबै।
आपुइ ऐबै तोहिं न बुलइबै, तरसब औ तरसइबै॥ २॥

ललचावन

दूरे से नैना मिलावैं तनिक नियरे ना आवैं।
बाँकी अदा छटा छहरावैं, अलक झलक छटकावैं॥ तनिक०॥
भौंह मरोरनि अजब दिखावैं, जनु तरवार फिरावैं।
मुसुकत मन्द मधुर मदमाते, नई नई कला दिखावैं॥
अति इतरात शान यौवन के, गजब गुमान जमावैं।
तीखे नैन कटाक्ष कोर करि, चंचल चपल चलावैं॥
कृपा खानि अह्लादिनि सिय के, नाहक पिया कहावैं।
'सरससंत' हिय सालत निशि-दिन, हँसत हास उपजावैं।
आपु न आवैं न पास बुलावैं, तरसैं औ तरसावैं॥

जगावन

भोर भइलै हो भिनुसरवा भेलै हो।
बाबू, उठू न कुहुँक करि कोइल बोलै हो॥
निशाहू नशानी प्रभा नियरानी मन्द मन्द,
बाबू, त्रिविध समीर सरस डोलै हो॥
सखि सब मंगल गाइ बजाइ सुनाइ रहीं,
बाबू, देखू न गायल भाँट नट डोलैं हो।
सुनि मृदु बैन उठे मुसुकाइ द्वार ठाढ़े हां,
बाबू 'सरससंत' जय जय बोलें हो॥

श्री युगल झाँकी आगमन

लटकि मटकि सिया राघो जू की आवनि ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, उरनि तुलसि मणिमाल सुहावनि ।
भौंह कमान नैन कजरारे, केशर भाल सुखौर सुभावनि ।
मंद हंसनि मधु अधर सुमोहनि, दसनन दुति दामिनि दमकावनि ।
धरत मन्द पग झूमि झूमि झुकि, गजगति हँस सुवंश लजावनि ।
यह छवि निरखि निरखि नर नारी, वर्षि सुमन जय जय छवि छावनि ।
निकसि सदन निज ते सिंहासन, बैठे सिया संग जनु घन दामिनि ।
प्रेमिन "संत" चकोर चखत छवि, एक टक नयन निमेष न लावनि ।
बढ़भागी सब भाग बड़ोरी आली, सियवर चरणकमल लपटावनि ।

श्री युगल झाँकी

दोउ निरखि निरखि सुख पावैं ।
दोउ सोह नवल तन सुंदर, सुख खानि सुछवि की मंदर ।
इत क्रीट मुकुट सिर सोहै, उत शीस चंद्रिका मोहै ।
दोउ अधिक अधिक सुख पावैं ॥ दोउ० ॥
दोउ मंद मधुर मुसुकावैं, आनंद अमिय बरसावैं ।
इत नासामणि दुति छाई, उत वेसर लेत लोभाई ।
दोउ विहँसि विहँस बतरावैं ॥ दोउ० ॥
दोउ नष-सिष सुन्दरता के रति पति लज्जित लखि जाके ।
इत कटि पतपीत केशरिया, उत सोहत सुघर चुंदरिया ।
दोउ दोउन पै वलि जावैं ॥ दोउ० ॥
दोउ श्याम राम सिया गोरी, चिरजीवैं युग युग जोरी ।
इत पावन पतित उधारी, उत अह्लादिनि मुदकारी ॥
दोउ "सरससंत" चित लाव ॥ दोउ० ॥ १ ॥

आजु की बाँकी सुझाँकी मन बसी है।
आजु की छवि-सी कलाधर काम रति छवि ज्यों मसी है। आजु०
वँक भौंहैं भाल चंदन खौर केशरिया सोहाई।
मीन मृग खंजन लजावन, जलजहू समता न पाई।
आँजि अँजन चपल दृग कैसी रसी है॥ आजु०॥
श्रवण मकराकृत सुकुंडल केश घुँघरारे वनाये।
मनहुँ अलिगन पांति दुहुँदिशि सोहते रसवस लोभाये।
सुधारस छविसिंधु मुख पै नागि सी है॥ आजु०॥

नीलमणि मंजुल वदन तन नीरधर शोभा सोहावन।
अंग प्रति मणि मोतियों की माल दुति दामिन लजावन।
पीत-पट पटुका कलेवर कटि कसी है॥ आजु०॥

सुभग श्याम सुअंग-अंग मनोज की बहु छवि छई है।
व्याह भूषण वसन भूषित सुघरता मृदु मुद मई है।
मौर मणिमय शीस पै सुन्दर लसी है॥ आजु०॥

सोनजूही की कली सी दसनि छवि कैसी रची है।
दामिनी की पांति है जनु अधर देहरि पै खँची है।
मोहना की मोहनी सी मृदु हँसी है॥ आजु०॥

ललित मुनरी अँगुरियन छवि जटित मनि मानिक सोहाये।
कंध केहरि नाग-सुंडा-दंड भुज उपमा न आये।
शुचि सुमंगल व्याह शुभ कंगन कसी है॥ आजु०॥

सुछवि नषसिष मांगलिक श्री चरण यावक से रचा है।
ललकि अरुणाई विलोकत भृङ्ग मन वरबस नचा है।
रस-पराग सुकंज पद की अमल सी है॥ आजु०॥

आजु की झाँकी सुझाँको भाँकी जिन भाँकी न भाँकी।
मैथिली-दुलहा औ दुलही सम न भाँकी और भाँकी॥
भाँकते झाँकी परस्पर एक सी है॥ आजु०॥

एक सी है हँसनि बोलनि दृगन जोहनि एक सी है।
एक सी है सुछवि ग्रंथित चूनरी पट एक सी है।
"सरससंत" सु-युगल झाँकी हिय धँसी है ॥ आजु० ॥ २ ॥

—:०:—

"सिया मोहनी के मन मोहना हो,
मन मोहन मोहना हो ॥
खंजन पाँख आँख झपकारे, मीन कुरंग भगोरे।
कजरारे कल धौंत कटोरे, रसे गुलाबी डोरे।
चितवन चितवत चितचोरना हो ॥ मन० ॥
प्रफुलित वदन हँसनि में टोना, अधर सुधारस भीने।
विकसित दसनि कुंद की कलियाँ, दामिनि दुति छवि छीने।
हे मदन महा छवि छोरना हो ॥ मन० ॥
वसीकरन वटमार वटोही वानक काम कला की।
ललना कल-ना रहीं निरखि छवि, लुटीं वाल मिथिला की।
मन छलना छैला छोरना हो ॥ मन० ॥
हृदयकाश विहरो नित प्रीतम, बँधे प्रीति की डोरे।
बसे रहो, नित बसो, बसे हो, "सरससंत" दृग कोरे।
मन बँधे कमल पद डोरना हो ॥ मन० ॥

—:०:—

सिय छवि पै छैल लुभाने हैं मिथिला की शाने हैं।
राजदुलारी अति सुकुमारी अंग-अंग सुघर लुनाई।
चंपा वरण नैन मृगसावक सकजल रस सरसाई।
अधरन पै लाल लुभाने हैं, मिथिला की शाने हैं ॥
वेनी गुही सुमन जूही के विच-विच मोती लटकें।
कजरारी रतनारी अँखियाँ मुसुकनि रस टपकै।
दसननि दुति तड़ित लजाने हैं, मिथिला की० ॥

वेसर विंदी भाल रंग शुभ माँग सोहाग सुढंगन।
चूंदर चादर जरीदार मनि जटित कंजकर कंगन।
प्रति मनियन लाल हेराने हैं। मिथिला की० ॥
उर उरहार बहार निहार छके अवधेश दुलारे,
कटि किंकिनि पग पायल झमकनि गजगति लाजनिहारे।
धुनि सुनि रघुवर मस्ताने हैं–मिथिला की० ॥
पद-नख ज्योति महावर रंजित अँगुरिन छवि विछिया की।
सुख-रस सरसत प्रति अंगन में जनक राज बिटिया की।
सिया छबि सब छैल बिराने हैं। मिथिला की० ॥
सुखमा सार श्रृंगार सार करि विधि विधुरूप विचारे।
"सरससंत" सिय रचि कर धोवन झारे से भये तारे।
पिय प्यारे रूप बिकाने हैं–मिथिला की० ॥

लालसा

तनिक मुसुकाय दे रे नृप छौना।
भौंह कमान नैन बिच कजरा, अलक झलक छटकाय दे॥ रे नृप०
गोल कपोल अधर अरुनाई, दसननि पंक्ति दिखाय दे।
हेरि फेरि दृग धारि अंश भुज, कृपा कटाक्ष चलाय दे।
"सरससंत" हिय सरस सदन में, खास निवास बनाय दे।

—:o:—

तनिक हँसियो हो ये चितचोर।
काली काली जुल्फ जुलुम जहरीली, सालत है हिया मोर॥ तनिक०
चंचल नैन सैन मदमाते, भौंह की अजब मरोर।
दसन दिव्य दामिनि दुति लाजन, नासामणि हलकोर॥
श्याम वदन युग अधर अरुण जनु, युग चंदा एक ठौर।
"सरससंत" तन तकि हँसि हेरो, मिटै मोर औ तोर॥ २॥

मानै न नैना देखत देखत ।
छिन देखत देखत छिन छिन पुनि, छिन छिन छकि पलकन छवि छेकत।
छिन छेकत छेकत छिन छिन पुनि,छिन छिन छवि छिन हिये बिच लेखत
छिन लेखत लेखत छिन छिन पुनि, छिन छिन छोह करत सखि सेखत।
'सरससंत" धन छवि शोभा यह,प्रति रोमन दृग ह्वै तऊ झेखत ॥३॥

—:०:—

तोपर मैं वारों ये धनु वारो ।
नील कमल सम वदन सुघर शुचि, भाल तिलक उँजियारो ॥ये धनु०॥
भृकुटि मनोज चाँप जनु लाजत, चपल नयन कजरारो ।
गोल कपोल चिबुक अधरानन, दिव्य दसनि दुति वारो ।
केश कुटिल काले घुँघरारे, सालत हियनि हमारो ।
'सरससंत' तन हँसि नित हेरो, चेरो चरन तिहारो ॥ ४॥

श्री मिथिला छवि छटा की विज्ञप्ति

लगी लगन रही मुद्दत से कि दिन आवेंगे ।
किये जो सुकृत नैन चैन कभी पावेंगे ॥
हुए अरमान मेहरवान जो पाये इनको ।
बड़े हैं धन्य पिता मातु जो जाये इनको ॥
औ धन्य देश नगर नारि नरैं गुरु इनको ।
सदा ही गाधि तनय धन्य जो लाये इनको ॥
लहे हैं लाह सभी देख ऐसी सूरत को ।
खरीद लेवैं देके दिल को ऐसी सूरत को ।
बिकेंगे मोल 'सरससंत' खुद खरीदारें ।
पड़ेंगे दिल पै जभी छैल के वो नाजारे ।
रहेंगे तन में नहीं होस हवासें आली ।
डसेंगे काले कुटिल केश जो नागिन काली ।
बला से जान जाय जाने दे री आली ।
पलक झलक न जाय कोई ऐसी छण खाली ॥ १ ॥

चित को चुरा लिया है दशरथ के लाल ने ।
मन को फँसा लिया है घुँघरारे बाल ने ॥
कजरारे कोर वारे कारे करारे चोखे ।
धोखे से तिरछी मारा उस दृग विशाल ने ॥
झुकि झूमते श्रवण शुभ मकराकृती ये कुंडल ।
नासामणी झमक झुकि झूमन कमाल ने ॥
छबि 'सरससंत' नष-सिष मुख मंद हँसनि ने ।
तन मन लुभा लिया है श्री रामलाल ने ॥ २ ॥

—:o:—

हाय रघुनन्दन तुम्हारी बाँकी अदाँ छवि छावनी ।
क़त्ल करती हैं सदा आँखें तेरी ख़मखावनी ।
गुलगुले गालें गुलाबी अतर से छाई हुई ।
मन्द मुसकन अधर अरुणाई अमिय बरसावनी ॥
श्रवण कुंडल नासिका औ तिलक भाल सुखौर की ।
श्याम सुंदर बरण मन के हरन चित चोरावनी ॥
जुल्फ जालिम ज़हर यह जंजीर सी जाहिल बनी ।
रहम तो सीखी नहीं है फ़कत फन्द फँसावनी ॥
फँस चले यह फाँस प्रीतम के कमल कर यदि रहे ।
तो 'संत' मंगल करन है निशि दिवस सुख सरसावनी ॥३॥

—:o:—

डारैं हो जदुआ हरि हँसि हँसि के ।
करत बेहालें चोट चितवन की, मारत हैं कसि कसि के ।
उठत पीर अति परत चैन नहिं, कोर करकसी कसके ॥
बावरि ह्वै गलियन में डोलौं, जुल्फ जंजीरन फँसि के ।
करत रहत उपचार बिबिध विधि, 'सरससंत' हिय धँसि के ॥४॥

—:o:—

अब तो आय के लोभानी ललन मुखछवि की गयल में ।
कुण्डल मकर किधों कलंगी में, कीधौं मृदु मुसुकानी ॥ललन०॥
वंक भृकुटि किधौं नैन वैन में, की अलकन में फँसानी ॥
अधर अधिक किधौं चिबुक चारु में, की वुलकन हुलकानी ।
मुख महताव सिताव आब से, दसननि दुति दमकानी ॥
'सरससंत' तेरे छटा हाट में, हाय बिनु मोल बिकानी ॥ ५ ॥

नैन झलक

छयलवा नेह भरे तेरे नैन ।
अंजन कोर चहूं दिशि ते मानो, श्याम घटा घहरैन ।
पलक हलनि झुकि झुर्मनि तिरीछे, सरस रसीले सैन ।
भौंह कमान चढ़त जेहि तेहि जब, सुधि न रहत दिन रैन ।
'सरससंत' रघुनन्द साँवरे, क्यों न करो हिय चैन ॥

(चैती)

अँखियन जहर भरी मोरे रामा, राजकुँवर की ।
कजरारी कारी रतनारी, पैनी अजव छुरी मोरे रामा ॥ राज० ॥
चितवतही चुभि जात अचानक, सब तन पीर परी ॥मोरे०॥
मंद माधुरी मोहनि मूरति, हँसि डारत फँसरी ॥मोरे०॥
"सरससंत" राघव दुल्लह की, नैन में नैन परी ॥मोरे०॥२॥

—:०:—

जिया परिगो नयन के चक्कर में ॥
वसीकरन मन मोहनि मूरति, भईं विवस छवि टक्कर में ।
बरवस मनमृग फँसे छैल के, जुल्फ जाल के जक्कर में ।
मदन कोटि मनमथि सकुचाने, नवल छयल के पग्गर में ।
कर्म धर्म सब रहैं ताख पर, नेम प्रेम की झग्गर में ।
"सरससंत" सब छुटै पड़े जो, राम रूप के चक्कर में ॥३॥

बौरी बना दिया है आँखें बड़ी बड़ी ॥
मिथिला शहर की गलियां चरचा छिड़ी है घर-घर ।
ऊधम मचा दिया है आँखे बड़ी बड़ी ॥
बेचैन दिवानी सी दिल थाम बैठे सबरे ।
जादू जगा दिया है आँखें बड़ी बड़ी ॥
ब्याही बिबस न ब्याही हुलसी फिरैं अटा पै ।
गौने की भईं मौने आँखें बड़ी-बड़ी ॥
सुनि देखिबे को दौरे भये "सरससंत" बौरे ।
बरछी सी तिरछी मारा आँखें बड़ी-बड़ी ॥
जहरी अवध छयल के नैना हैं डाँकू शहरी ।
पीछे से पड़ गये हैं आँखें बड़ी-बड़ी ।.०॥

—:०:—

नजरिया की है कोर बुरी ।
जेहि तन चितवत चपल चातुरे, चोट करत जैसे लागे छुरी ॥
भौंह कमान कसे पलकन पै, हलकन अलक अलक अझुरी ॥
कलित कपोल ललित नासामणि, झुमत झमकि जब हँसत हरी ॥
चमचमात चुभि जात दसन छबि, "सरससंत" दुति जनु बिजुरी ॥५॥

अजब तेरो नैना बने रतनार ।
श्वेत श्याम अरुनारे कारे, सितकारे झपकार !
गोल कपोल लोल अधरामृत, करत अलिन मनुहार ॥
चढ़े कमान भौंह सर बेंधत डँसत जुल्फ जनु मार ।
"सरससंत" शशि मुख शुचि छबि पै. कोटि मदन मन वार ॥६॥

—:०:—

चितचोर छयल हे छलकारी तेरी बांकी अदा निराली है ।
मनमोहन श्रीमुख कमल देख तन मन की दशा बेहाली है ॥
बिखरे हैं केश कुटिल काले कोमल कल कलित कपोलों पै,
दामिनि दुति दसन रसन सुंदर बलि जाउँ लला तुव बोलों पै ।
अधराधर अधिक सोहायमान विहँसनि में पान की लाली है ।

सकजल रतनारे नैन नवल मृग, मीन लजावनिहारे हैं ॥
तीखे तिरछे चोखे बाँके अति बाँके चितवन वारे हैं।
चंचल चलाँक औ चपल चतुर मदमाते हैं मतवाली हैं ॥
नवनीरज आनन नील वदन पीतांबर पीत कसे पटुका,
मंगलमय व्याह उछाह भरे माथे मणिमौर सजे लटुका।
तुलसी हिय- माल, पदिक राजित नष-सिष छवि सुघर सुचाली हैं।
भक्तों से वंदित युगल चरण जहँ मुनि-मन मधुप लुभाय रहे,
उमगत अनुराग पराग सुखद, पद-पंकज जासु लजाय रहे।
नित अष्ट पहर जेहि "सरससंत" पावत मुद मोद खुशाली हैं ॥७॥

—ः०ः—

नजरिया, जादू भरी जैसे पुड़िया जहर की।
जब झपि खुलत उभकि झुकि हेरत, सुधि न रहत-तन-मन घर की॥
चोट करत चित चितवत ही में, वेधी परी नारी मिथिला शहर की।
राजकुँवर के बड़ी-बड़ी अँखिया, कजरा भरे जनु विष सर की॥
"सरससंत" इन नैनन मारे, हाय परी, परी कहर-कहर की।
जित देखो तित चढ़ी जरकसी, आस भई वस अगर मगर की ॥८॥

—ः०ः—

कनकैया ताकैं हो राम रसिया।
केशर खौर भाल विच टोना, केश छटका के, हो राम रसिया।
दृग विच कजरा गले में सोहै गजरा, सुनजरा कटाके ॥ हो राम०॥
नैन मध्य छवि नेह अनूपम, सुवजरा लगा के ॥ हो राम० ॥
"सरससंत" नैनन सर वेधत, मंद मुसुका के ॥ हो राम० ॥

चैती

राजिव नैन सँवरिया हो रामा चित मनहरिया ॥ राजिव० ॥
वंक भृकुटि कच चिबुक मनोहर, तिलक रेख उँजियरिया हो रामा।
मंद हँसनि मृदु जोहनि, मोहनि घुँघरारी लटकरिया हो रामा ॥
अधरामृत मृद बैन सुहावन, दसननि पंक्ति वनरिया हो रामा ॥

छहरत छवि छल-मलित सरस-रस, सरसत चैत बहरिया हो रामा ॥
"सरससंत" श्री जानकि जीवन, करिये कृपा नजरिया हो रामा ॥९॥

:o:—

ऐ नटनागर अवधेश छयल तेरे नैना नवल रसीले हैं।
मृग मद गंजन औ श्वेत श्याम रतनार गजब मटकीले हैं॥
घुँघरारे केश, भली भौंहें, कशमीरी केशर खौर किये।
मकराकृत कुण्डल श्रवण सुभग, मणि-जटित महाछवि मौर दिये।
तिरछी चितवन चंचल चलाँक कजरारे कंज कटीले हैं॥ ऐ नट० ॥
चिक्कन कच-कुञ्चित कलित-ललित, नासामणि सुघर सोहाय रहे,
अलकावलि चुमि कपोल हुलकि, प्रेमी मन मोद बढ़ाय रहे।
रस-थली स्नेह, सिसु विंदु गाल, गभुआरे पै गरबीले हैं॥ ऐ नट० ॥
अधराधर अधिक सोहायमान, हैं रसे बनरसी पानों से,
मुख मंद हँसनि दाड़िम सी दसन सुन्दर अनार के दानों से।
रसनामृत बोलनि पै कोटिन न्योछावर प्राण हठीले हैं॥ ऐ नट० ॥
हैं चमकदार चपकन चादर पर चटक कसीदाकारी के,
सालम सितार के लहरदार चटकार सुनहरेकारी के।
पटुका कटि कसे, कटार, नाग-भुज सुंडा-दंड जसीले हैं॥ ऐ नट० ॥
श्री चरण महावर से रंजित मांगलिक सोहावन शुभकारी,
सेवत जेहि शंभु, विरञ्चि शेष, मुनि मनभावन पावनकारी।
नित 'सरससंत" तेहि चरण शरण सुखशीले हैं हरषीले हैं॥ १० ॥

नैन निहरा

रघुवर राजिव नैन किशोर।
करुणा, कृपा, क्षमा, सुखमा के, शील समुद्र अकोर।
दृग मृग, मीन सुधा तव चाहत, मम युग दृगन चकोर।
मन मतंग मदमत्त महा तम, दीन अधीन कठोर।
"सरससंत'' तन हेरि हरहु दुःख, पग परि करौं निहोर।
छूटै वंदि कटै भव फंदैं, मिटै मोर औ तोर॥

श्री मिथिला के योग्य वर

श्री, रघुनन्दन जू के अनियारे मृदु सैन।
केकि कंठ अंग श्यामल दुति शुचि, निंदक तड़ित बसैन।
भूषण विविध व्याह-तन मुख-छवि, विमल शरद-विधु ऐन।
राजिव-लोचन नवल, नवल वर, चपल चतुर कजरैन।
कुण्डल मकर केश घुँघरारे, मौर, खौर चमकैन।
कच कुञ्चित कपोल कल कोमल, अधर सुधा-रस छैन।
मंद मधुर मधुराति मधुर मृदु, हँसनि मधुर मृदु वैन।
'सरससंत' फल सुकृत सबनि के, दूलह योग दुल्हैन॥

युगल उबटावन

मंगल दिन चलि आये, सोहाग के उबटन।
जौ रे गेहुँआ केर, अति शुभ उबटन, सखि शुचि तन उबटाये॥सो०
कर कोमल कमलन कर-कंजन, दुल्लह, सियहिं लगाये॥सो०
खंजन मद गंजन दृग-कंजन, अंजन सरस सुहाये॥सो०
पगतल ललित महावर नष पर, मंगल सुरंग रचाये॥सो०
पीत पुनीत मनोहर धोती, नष-सिष मंगल छाये॥सो०
मंगलमय दुल्लह, दुलही छवि, 'सरससंत' चित लाये॥सो०

बरात

मिथिला की गलियाँ लगै प्यारी, अनमोल दुलहा॥
बाजै चहुँओर वधावा, व्याह विधान सुहावा।
सखि सब मिलि गावैं मंगल चारी॥अनमोल०॥
घम-घम नगारा बाजै, ब्रह्मा, शिव, बराती साजैं।
हाथी, रथ, घोड़ा वेसुमारी॥अनमोल०॥
गुरु श्री वशिष्ठ संग, दशरथ नृप साजे अंग।
सुरु-गुरु पुरंदर से छवि भारी॥अनमोल०॥

मुसुकत मन दुलहा आवैं, छम-छम वरवाज नचावैं।
बहुविधि देखावैं नट-कला री ॥अनमोल०॥
कंचन कलश हाँथ, परिछन को डाला साथ।
रानी सुनैना द्वार ठाढ़ीं ॥अनमोल०॥
आनन्द की सरिता उमड़ीं, घटा छटा छवि की घुमड़ी।
वरसि पड़ी, मिथिला मग, अटारी ॥अनमोल०॥
धन-धन सिय को सोहाग, भइया 'संत' लक्ष्मी भाग।
हमहूँ सब भईं अधिकारी ॥अनमोल०॥
श्याम गौर जोरा-जोरी, युग-युग चिरजीवैं जोरी।
माँगै विधि अंचल पसारी ॥अनमोल०॥

(गज़ल) शेहरा

सोहते कैसे हैं दुलहों पै मनहरन सेहरा।
बनी सिया-सजन, सोहाग का बाँका सेहरा॥
कलित ललित लुभायमान मचलते मुख पै।
मनो छवि-बुंद सरसते सम्हल रहे सेहरा॥
नीलमणि मंजु वदन, सजल घन सोहावन में।
चमक-सी दामिनी की लर, लटक रहे सेहरा॥
प्रणय का सूत्र मुदित मोद का बना बाँका।
आज दुलहों पै अजब रंग जमाता सेहरा॥
छबीले छैल गैल छोर छोर मिथिला की।
छुपा छुपा के दिखाता है छवि छलक सेहरा॥
छलीं छवि माधुरी छकीं, जकीं थकीं आली।
लुभा रहीं, लुभा रहा, लुभावना सेहरा॥
गजब अजब है--'सरससंत' छटे दुलहों पै।
करोर काम लुट गये, लुटा रहा सेहरा॥

दुल्लहन छवि

मदन मद छाँके हो राम रसिया।
सिर पै मौर मुख सुन्दर सेहरा, लहरा बना के ॥ हो राम रसिया
जामा जरी, धरी कटि पटुका, (जामें) लटुका टका के ॥ हो राम०
लहरत लट, छहरत छवि छाँकी, वाँकी छटा के ॥ हो० ॥
दृग मृग, मीन लजन नैनन मैं, कजरा कटा के ॥ हो० ॥
निरखत छवि सखि दृग अंचल तजि, सेहरा हटा के ॥ हो० ॥
'सरससंत' हँसमुख दुलहे पै, डारु न मटा के हो ॥ हो० ॥

मिथिला-मैथिली के सोहाग

जेहि मुनि जन ध्याये, दुल्लह बनि आये।
शंकर, विष्णु, चतुर चतुरानन, जासु अंश ते आये ॥ दु० ॥
जो अति अगम निगम श्रुति गावत, शुक्र शारद सकुचाये।
जाकी कृपा धरत धरनी शिर, शेष वलेष कहाये ॥
सो प्रभू भ्रू विलास दशरथ गृह, कौशिल्या के जाये।
विश्वामित्र संग मिथिलापुर, बिन बोले साइ आये ॥
करि त्रिखंड धनु साजि व्याह छवि, सीय सोहाग बसाये।
आजु सुकृत फल अगम सुगम भई, जनक जमाय कहाये।
यह संबंध अखंड अनादी, सखि सब मंगल गाये।
"सरससंत" सुख सार पुरातन, प्रीति की रीति दिखाये ॥

सोहाग प्रतिफल

सुघर पइलों हो, अपने हियरा क लाल ॥ सुघर० ॥
गौरी, गनेश, महेश मनौती, सुफल पइलों विधना, सुफल भये भाल।
अब सब सुकृत सुकृत सुकृती भये, सुकृती भई, सब मिथिला की बाल।
कोई गावैं, कोई पूरैं विधि मंडप, कोई साजैं व्याह विधान को डाल।
कोई सिखवत, जब देत भाँवरी, सिया सुकुमारी मोरी, धीरे चलो लाल॥

कोई लखि मौर मौरि की शोभा, कोई क्षोभा, कोई भई हैं निहाल ।
कोई लखि दसनि, हँसनि मृदु जोहनि, कोई कच हचक, सुघूँ घर वाल ॥
"सरससंत" हिय सरस पाहुने, पै मति दीजो कोई टोना न डाल ।
आपन टोना आपै सम्हारो, आपै सम्हारो आपन अनमोल लाल ॥

दुल्लह औ दुलही

दुलहा क मुख छवि सुघर सरस जैसी,
तैसिये सुधा सी हमारी सिया सजनी ।
सिरनि मौर, भाल तिलक सुखौर जैसी,
तैसी वेंदी चंद्रिका उँजारी ॥ सिया० ॥
कुंडल मकर, केश कारे घुँघरारे जैसे,
तैसी चोटी नागिन सी सँवारी ॥ सिया० ॥
नासिका बुलाक की झुमनि उझकनि जैसी,
तैसी नकवेसर सुधारी ॥ सिया० ॥
अधर अरुण, कल कोमल कपोल जैसी,
तैसी मृदु मुख मिसु बीरी ॥ सिया० ॥
कज्जल के कोर ते करोर इन विहाल कीन्हें,
त्योंही कृपा कोर ते सम्हारी ॥ सिया० ॥
पीत पट पीत कटि सोहै करवार जैसे,
तैसी कर-कंज तन सारी ॥ सिया० ॥
हँसनि मधुर मृदु दसनि लजाई त्योंहीं,
ज्योंही हँसि गरे भुजधारी ॥ सिया० ॥
दृगन दृगन जुरि भये दोउ भूरि भूरि,
पियत मदन रस प्यारी ॥ सिया० ॥
सिया मुख शशि की चकोरी, कैधों पिया मुख,
पिया मुख शशि की चकोरी ॥ सिया० ॥
"सरससंत" मनमोहना मोहनि छवि,
राखि लेहु हिया के विदारी ॥ सिया० ॥

खुशियाली

लूट लो री लुटन की वारी।
तव तो दुलारी सिया रहीं सुकुमारी, अब भईं, पिया जू की प्यारी
सिया की सोहाग भाग इन नैनन, पूरथो विधि त्रिपुरारी।
जनक लुटावैं गज, रथ, हीरा, रानी सोहाग, तन सारी।
ब्रह्मा, शिव लूटैं सुर सुरपति, लूटैं उमा शारदा री।
"सरससंत" दुल्लह दुलही की, छवि की लूट भई भारी॥

श्री किशोरी छोह

श्री सिया प्यारी हो, धन थिकन अहाँ के सोहाग॥
मिथिला सर कुञ्ज बीच, प्रणाय सूत्र, पुञ्ज बीज।
श्री सिया प्यारी हो, फूलि, फल भेलै अनुराग॥ श्री०॥
हम सव सुकृत जन, पूरि भेल नृप प्रन।
श्री सिया प्यारी हो, वँधि गेलै प्रेम तंतु ताग॥ श्री०॥
कौशिला कुमार इंदु, सुखमा अपार सिंधु।
श्री सिया प्यारी हो, भरि देलन अहाँ सिर सोहाग॥ श्री०॥
जोगी, जपी, तपी, सिद्ध, शेष, शिव, विधाता वृद्ध।
श्री सिया प्यारी हो, मुनि तन तपावैं जेहि लाग॥ श्री०॥
कोटि जन्म सुकृत फल, जोग, जप, तप फल।
श्री सिया प्यारी हो, वारौं चिरजीवैं तव सोहाग॥ श्री०॥
"सरससंत" कृपा केर, देहु वर दृग फेर।
श्री सिया प्यारी हो, अहीं के पिया पद अनुराग॥ श्री सियाप्यारी०

जेवनार

चंदनवाँ के चौकी बैठो मोरे लाल।
मुखन रसाल मंद मुसुकनि करि, नैन सैन करि तिरछे रसाल॥ चं०

सारी सरहजियाँ सहज सजि ठाढ़ीं, मेवा, मिठाई, कनक भरे थाल।
दूध, खीर, कलकंद, समोसा, दालमोट, मठ चनवाँ क दाल॥
खुरमा, खाझा, पापड़, पूड़ी, रसगुल्ला गुपचुप, बंगाल।
चिउड़ा दही, मधुर सुरभी-गौ, घृत-सरसित तरकारी भाल॥
कटहल कोवा, सोवा, आलू, वंडा, सेम, तिलौरी, लाल।
चटनी, चटक पुदीना पाती, धनियाँ मिर्च, अचार रसाल॥
रुचि-कारक रुचि-व्यंजन बहुविधि, पूवा, पकौड़ी, कचौड़ी कमाल।
जेंवत कुँवर राय दशरथ के, भूल, चूक, चित धारो न ख्याल॥
जो रुचि वस्तु रुचै लीजो कहि, सकुच न लहब अवध सुत लाल।
"सरससंत" सिधि सुरति न बिसरै, सिया धिया हिया के हे अंकमाल॥

कोहबर मनोज

कोहबर में बैठे चारो भइय्या रघुवंशी दुलहा।
मुक्तामनि मानिक जड़े, सुन्दर शुचि पीढ़न पड़े।
गंगा-जल गरुआ, कनक थरिया ॥ रघुवंसी० ॥
रुचि शुचि व्यंजन विधान, छप्पन पकवान पान,
रचि रचि संवारी सारी सरियाँ ॥ रघुवंसी० ॥
सिद्धि शारदा दुलारी, उमा आदि सखियाँ वारी,
हँसि हँसि जिवावैं अलख लखइया ॥ रघुवंसी० ॥
रानी सुनैना ऐन, कौशिला के कमल नैन,
भाग बड़ सोहाग सिया दइय्या ॥ रघुवंसी० ॥
हिल-मिलि सब गावैं गारी, हव्य सुत दुलहा चारी,
धन-धन अवध के नर, नरियाँ ॥ रघुवंसी० ॥
दुलहा सुनि रूसल जावैं, अलि सब कर जोरि मनावैं,
शांति मनावैं "संत" भइय्या ॥ रघुवंसी० ॥

अभिलाष

वड़े भागन ते तोरी देखी सुरतिया ॥
आजु सुकृत फल अगम सुगम भई, जेहि लगि मुनि तप तन कसिया।
श्री सुख मधुर अधर मुसुकनि में, दमकत दामिनि सी दँतियाँ॥
वरवस आइ जनक पुर वासिनि, नैन की सैन करी घतिया।
जालिम जबर जुलुम जहरीले, लहर सी सर्प कुटिल जतिया॥
प्यारे दुलह तुम अवध छबीले, मारि नैन सर बेंधी छतिया।
"सरससंत" तेरे छटा घटा नित, विहरन चाहत दिन रतिया॥

—:०:—

मन के हरन मनोहर प्रीतम, सुघर संवरिया, हो छयलवा,
करिह कृपा नजरिया ना॥
चिक्कन कच कुंचित कपोल शुचि, मधुर रसीले बैना।
भाल तिलक, शुभ खौर सोहावन वंक भृकुटि मृदु सैना।
सकजल सने पुतरिया ना।
खंजन मीन लजावनि हारे, तोहरी नजरिया हो छयलवा,
करिह कृपा नजरिया ना॥
घूँघर केश फुलेल सने पै, भली मौर की शोभा।
श्रुति कुँडल मकराकृत हलकन, कोटि मदन मन लोभा॥
कपोलन अलक वहरिया ना।
उझकि झुकि नासामणि झुमकारे, मध्य अधरिया, हो छयलवा,
करिह कृपा नजरिया ना॥
पीत वसन पीतांवर कटि में, कसे वियहउती धोती।
कंठा-कंठ, विजायट भुज, उर सोह नवलखा मोती।
सुछवि वारे धनुधरिया ना।
विहरैं मोद बढ़ावनिहारे-जनक शहरिया, हो छयलवा॥
करिह कृपा नजरिया ना।

नष-सिख छवि कवि, दशा मूक जिमि देखतही वनि आई।
पद-तल ललित महावर रंजित "सरससंत" चितलाई।
वने दुलहा मनहरिया ना।
मिथिला चित्त चोरावनिहारे, मंद मुसुकनिया, हो छयलवा,
करिह कृपा नजरिया ना।
सिया साजन मनमोहन मोहन जोहनि की वलि जावों।
कृपा वारि धर दृग चातक पै मुसुकन रस वरसावो,
रसीले रसिक सँवरिया ना।
प्रेमी, प्रेम सुधामृत के घन, वरसि बदरिया, हो छयलवा,
करिह कृपा नजरिया ना॥

—:※:—

सांवली सुरतिया, तोरी मोहनी मुरतिया, हो दुलरुवा दुलहा।
देखे विनु परै नाहीं चैन॥ हो दुलरुवा दुलहा॥
चिकने कपोलवा पै, श्याम रंग विंदुलिया॥ हो दुलरुवा दुलहा॥
लाली, लाली ठोरिया मृदु वैन॥ हो दुलरुवा दुलहा॥
काली काली केशिया तोरी, वाँकी घुँघरिया॥ हो दुलरुवा० ॥
कंज मुखचंद सुधा ऐन॥ हो दुलरुवा० ॥
भृकुटी कमान बान तान शान धरिया॥ हो दुलरुवा० ॥
काम धनु बान शान सैन॥ हो दुलरुवा० ॥
प्यारी प्यारी अँखिया तोरी मृदु मुसुकनियाँ॥ हो दुलरुवा० ॥
नेक हँसि हेरो मन लुभैन॥ हो दुलरुवा० ॥
"संत" सुख सोहाग भाग, जनक किशोरिया॥ हो दुलरुवा० ॥
सदा चिरजीवैं सुखदैन॥ हो दुलरुवा० ॥

विशेषाधिकारिनी की छोह

दुलहा दुलरुवा सुघर बड़ा लागै, नजरामें कजरा जहरिया। हाय राम
भौहें कमान कसे गरवीले, जुल्फन की फाँसै फँसरिना॥ हाय० ॥

चन्दन खौर हँसनि जनु टोना, छौना की छोटी उमरिया ॥ हाय० ॥
एरी सखी कोउ टोना न डारो, ई हैं पूरब सुकृत की गठरिया ॥हाय० ॥
अब सीय संग संग हौंहूँ जइबै, वसबै महल पिछुवरिया ॥ हाय० ॥
सिंह द्वार की डगर बुहारब, पइबे जो नेह नजरिया ॥ हाय० ॥
कौड़ी दुकान दुकान से माँगब, गइबै बजा के खंभरिया ॥ हाय० ॥
"सरससंत" दिन ऐसे बितैबे, लेबै अवध को बहरिया ॥ हाय० ॥

अभिनन्दन

सदा चिरजीवी मेरे प्यारे दुलारे दुलहे ।
बढ़े अकबाल दिनों दिन-बदिन तेरे दुलहे ॥
अनेक कर्म धर्म तप तपाय तन मुनि जन ।
न पाये ध्याय बहुत जन्म विचारें दुलहे ॥
सो मिले भाग जनक राय सुनैना की सुकृत ।
सिया सजन सगे मेहमान हमारे दुलहे ॥
यहाँ न मुक्ति मुक्ति चाहिये सुयश न कछू ।
फ़क़त मधुर मिलै मुसुकान नज़ारे दुलहे ॥
ललन सुकौशिला विदेहजा के हे जीवन ।
पलक निमेष दृग के होउ न न्यारे दुलहे ॥
सिया सोहाग भाग स्नेह सिंधु मिथिला के ।
दृगन के पाहुने अवधेश दुलारे दुलहे ॥
रहे नित चन्द्र, सूर्य जब तलक गगन तारे ।
जियो युग युग में "संत" प्राण अधारे दुलहे ॥

सदा चिरजीवो राजिव नैन ।
सदा निकुञ्ज कुञ्ज हिय विहरो, सिय-पिय सुखमा ऐन ।
सदा सोहाग भाग मिथिला के करुणाकर सुख दैन ।
रघुबर राजकुँवर दुल्लह वर, करिय कृपा की सैन ।
विचरहु मोह दृगन तन मन नित, 'सरससंत' दिन रैन ॥

बाह्य-निवेदन

बहुरि कब ऐहो हे लालना हो ॥
मिथिलापुरी सुखद धन जीवन, प्राण-सजीवन बालना हो ॥
सुषमा सिंधु स्नेह गुन आगर, नृप दशरथ सुत महराजना हो ॥
सकल सुकृत पुरजन प्रिय पाहुन, जनक सुनैना के आँगना हो ॥
शुभ कर कंज मंजु मुदिता के, उर शोभित वर जय-मालना हो ॥
सिय सौभाग सोहाग भाग बड़, नटनागर रघुवर राजना हो ॥
"सरससंत" दृग-चंद कबहुँ लिखि, कर चीठी दइहो बालनाहो ॥

ललन चलि जइहो, जो अवध नगरिया ॥
रघुबर राजकुँवर राजा बनरे, मारी नेह नजरिया ॥ ललन० ॥
जल बिन मीन दीन बनितन की, दृगन वही जलधरिया।
मधुर सुधा सम बचन बोलि नित, डारी प्रेम फँसरिया।
हे प्यारे दृग चंद चकोरी, जइहैं कौन डगरिया ॥
कौन जतन अब कहहु ललन हे, बीती अगम उमरिया।
'सरससंत' बिछुरे तोहिं लालन, व्याकुल बिकल महरियाँ ॥

आत्म-निवेदन

जनि जइहो ललन तजि मिथिला की गली।
बसि जइहो ललन मिथिला की गली ॥
सदा सुगन्ध त्रिविध वायु यहाँ की बाँकी,
सुतर सुगन्ध डगर चौक चिमन की चाँकी।
कनक अटा औ अटारी सुरुचि सुहाई है,
महल चहल-पहल सखा, सखी सुभाई हैं।
तोर सजन, पुर बसी मिथिला की गली ॥ बसि० ॥

सदा सोहावना निकट विदेह की बखरी।
महल सिया की सामने मनोज की नगरी।
नज़र नज़र मिलेगी स्नेह छटा उमड़ेगी।
गयल गयल में घटा छवि की सदा घुमड़ेगी।
रस वरसी प्रेम, मिथिला की गली ॥ बसि० ॥

सिया सोहाग बाग सघन कुञ्ज की छहियाँ।
ललकि सिया सी सारियाँ मिलेगी गलबहियाँ।
कटाक्ष नैन सैन मैन सी मदन माती,
मिलेंगी संग सहेली सिया की मदमाती।
रस जइहो रसिक मिथिला की गली ॥ बसि० ॥

भली थली में मैथिली के बसि के हरषोगे,
किसी प्रकार मन मनोर्थ बिन न तरसोगे।
बसंत फाग का फागुन विधान जब होगा,
चलेंगे रंग औ गाली-गलोज सब होगा।
मनचाहा करो मिथिला की गली ॥ बसि० ॥

अवध किशोरी शांति बहिन को बुलाऊँगी,
श्रृंगार षोडषों करके उन्हें सजाऊँगी,
आम की छाँह में होगी बहार झूलन की।
छवीली शांति बहिन संग बहार सावन की।
बनि जइहो सुघर मिथिला की गली ॥ बसि० ॥

यदा कदा जो याद आयगी अवधपुर की,
पठा के पत्र खबर लीजियो अवधपुर की।
बढ़ेगा प्रेम 'सरससंत' सब बिसरि जइहो,
राजा बनरे ससुर औ सास सुख कहाँ पइहो।
गुन गइहो, सुखद, मिथिला की गली ॥ बसि० ॥

आरती

आरती युगल बिहारी की,
अवध सुत जनक दुलारी की ॥

बनी छवि कैसी मन भाई, अनूपम जोरी सुखदाई,
सुघरता देखत बनि आई, सुनष-सिष शोभा अधिकाई।
खौर केशरिया, सुतिलक बहरिया, पीत-पट धरिया, चटक चूँदरिया।
मोहना मोहनी प्यारी की ॥ आरती० ॥

क्रीट इत चटकदार चसचस, चंद्रिका उत दमकति दमदम,
श्रवण कुण्डल झमकत झम्झम, लाढ़िली कर्णफूल छमछम।
सजे शुभ अंग, दोऊ अंग अंग, भई रति दंग, कामहू तंग।
सुछवि लखि पिय, सिय प्यारी की ॥ आरती० ॥

नीलमणि मंजुल वदन बनी, चंद्र सी आनन सिय सजनी,
दोऊ दोउ उर मन की बसनी, अधर दोउन की मृदु हँसनी।
कमल से नैन, सजित कजरैन, सरस सर सैन, मधुर मृदु बैन।
परस्पर चितवनि प्यारी की ॥ आरती० ॥

मदन मद मनमथ मनहारी, जुरे दोउन के दृग चारी,
सुछवि छाके दोउ मतवारी, दोऊ दोउन पै बलिहारी।
कल्पतरु छइय्याँ, सिया सँग सइय्याँ, दिये गलबहियाँ, सोह एक ठइय्याँ।
मनहुँ घन दामिनि प्यारी की ॥ आरती० ॥

गले मणि मोतिन की माला, सुगंधित फूल फूलमाला।
प्यार की मूरति रघुलाला, प्रेम-रस मैथिलि श्री बाला!
सोहनी बाँकी, मनोहर झाँकी, आजु की झाँकी, झमाझम झाँकी।
सुझाँकी प्यारे प्यारी की ॥ आरती० ॥

कनकमय जटित कड़े मणि रंज, पिया प्यारी चुरियाँ करकँज,
ललित अँगुरिन मृदुता की पुंज, लसित मुनरी शोभा की कुञ्ज।
मोद मुदकरण, युगल श्रीचरण, रंगे मनहरण, 'संत' जेहि शरण।
मधुप इव तन मन वारी की ।। आरती० ।।

आरती

करिये शुभ आरती, युगल वर की ।
मिथिला भाग सौभाग जनक को, हिय-जिय सिय-पिय छविधर की
सिय तन चूँदर चटक वियहुती, पिय पट-पीत सुजामा जर की
चंदन भाल पान मुख लाली, ललित ललाम युगल वर की
'सरससंत' दंपति संपति यह, मिथिला पुरी सुघर–घर की

सयन वंदना

चलिये महल को अंखियों के तारे ।
भोरो वदन भये मद छाँके, चंचल नैन भये सकुचारे
रैन विगत वहु उड्गन नभ में, आय विहाग बदैं गुनवारे
नौबत बजत गजर घड़ियालैं, पहरू वदले सिंह दुआरे
अति अवसेर वेर पौढ़न की, सखियन फूलन सेज सँवारे
आलस बस अंगड़ात छिनहिं छिन, झुकि झुकि परत मदन मतवारे
सिय भुज-अंश गहे कर सखि शुचि, उठत नींद बस सखिन सम्हारे
अलियन चहुँदिशि सजग चलहिं सब, दुलहीं संग, सिया दुलहारे
'सरससंत' कहि बनत न युग छवि, प्राण प्रिया जब कुञ्ज पधारे

चलिगे महल को अँखियों के तारे ।
सुन्दर सुघर गुलाब पंखुरियन, बिछी सुगन्धित सेजरिया रे ।।
पग पायल झनकार न आवै, सोइ रहे सिया राजदुलारे ।।
पहरेदार पगन पगपग पै, आवागमन चहुँओर सम्हारे ।।
'सरससंत' पुनि युग छवि जोहन, वहुरि अउब फेर राज दुआरे ।।

सोइ रहें, चलो सोइ गये, दोउ।
सिय दूलही, पिय दूलह प्रीतम, छवि-रस फेर नयन पइहैं सोउ।
सजग भये पहरे पग-पग पै, तनक झनक चहुँओर न ह्वै कोउ ॥
'सरससंत' दोउ छटा दृगन धरि, सोइ रहो चलो, सोइ गये दोउ ॥

ध्यान

करु मन दिव्य दुलह ध्यान ॥
ललित नष-सिष नील तन पै, पीत पट पियरान।
मनहुँ नीरज विविध द्युति, नभ, इन्द्र-धनुष समान ॥
अंज खंजन दृग लजन मृग, वंक भृकुटि कमान।
तिलक भाल विशाल चंदन, खौर खचित खचान ॥
मौर मणिमय मंजु मानिक, जटित शोभा खान।
मनहुँ छवि शृंगार मंदर, प्रभा कोटिन भान ॥
हेम कर-कमलन कड़े, शुचि धनुष, वान, कृपान।
भवन कोहबर वर-वधू को, मंद मुद मुसकान ॥
'सरससंत' भिमान निशिदिन, राम मम मेहमान।
जियत दुलह, सिय सु-छवि रस, मधुकरी करि पान ॥

निर्भिकता

हम तो दुलहा राम के दिवाने हैं, और उन्हीं के आसरे मस्ताने हैं।
हम हैं मिथिला के वासी, श्री सिय जू चरण सुपासी,
जहँ दुलह भ्रमर सुखरासी, करता नित गुंज प्रकासी।
महल की शाने हैं ॥ हम तो दुलहा राम० ॥

रौशन रोशनी यहाँ है, कर सकता कौन बयाँ है,
शारद औ उमा रमाँ हैं, जहँ शोभित सिया समाँ है।
दुलह परवाने हैं ॥ हम तो दुलहा राम० ॥

मिथिला गुलशन की क्यारी, विधि के शोभा ते न्यारी।
जिसकी कलियाँ सुकुमारी, बारी श्री जनक दुलारी।
भ्रमर मेहमाने हैं ।। हम तो दुलहा राम०।

मदमत्त मोहना माता, जुल्फें जिस्की बलखाता।
मुख मंद हँसनि बरसाता, प्रेमी हिय कंज खिलाता।
छवी रस साने हैं ।। हम तो दुलहा राम०।

श्री कौशिल्या के बाँके, शोभा सींवाँ की चाकें।
मणिमौर खौर कजरा के, आँखें कलकंज कटा के।
भौंह खरसाने हैं ।। हम तो दुलहा राम०।

मिथिला की शान क्या गायें, ब्रह्मादिक जहाँ लजायें।
दुल्लह का भेष बनाये, बनि ब्रह्म भिखारी ध्याये।
शक्ति की दाने हैं ।। हम तो दुलहा राम०।

वह मूरत सुघर सलोना, दुल्लह दशरथ सुत छोना।
छवि रस पी दृग भर दोना, बेगम मुँह ढँक कर सोना।
चादरा ताने हैं ।। हम तो दुलहा राम०।

दुलहा ही तन, मन घरवा, दुनियाँ की कौन फिकरवा।
है बढ़ा शान बेडरवा, हूँ रामलला का सरवा।
मस्त सैलाने हैं ।। हम तो दुलहा राम०।

निज 'सरससंत' क्या गम है, अलमस्त रहैं बेगम हैं।
है लगा ध्यान हरदम हैं, सिय दुल्लह हैं, और हम हैं।
निपट क्या जाने हैं ।। हम तो दुलहा राम०।।

❀❀❀❀❀:❀❀❀❀:❀❀❀❀

श्री जानकीवर की जै

❀❀❀❀❀:❀❀❀❀❀❀❀❀

तृतीय भाग

कौशिल्या-नंदन की होरी

दोहा

नैंना नीके मद भरे, भौंहें ज्यों खरसान।
घूँघर जुल्फैं लहलहे, मदन मधुर मुसकान॥
गोरी सिय साँवरि पिया, दोऊ रस के खान।
उत पचरंगी चूनरी, इत पटपीत सुजान॥
सखा, सखी संग में लिये, दोउ रसकेलि प्रधान।
होरी खेलन को चले, करत मधुर मुसुकान॥
कोउ झोरी कोउ मूठ भरि, कोउ गुलाल शुभ हाँथ।
कोउ कुंकम कर कमल में, 'सरससंत' सब साथ॥
कोउ कंचन पिचुका लिये, कोउ केशर को रंग।
कोउ सिर छत्र चँवर उभय, कोउ करताल मृदंग॥
अपनी अपनी दिशि खड़े, 'सरससंत' रंग बीच।
दोउन की छवि माधुरी, पियत दृगन रस सींच॥
इत उत जोरी जुरि रही, अपनी अपनी आन।
उमंग भरे खेलन लगे लखि सखि वारत प्रान॥

बसंत

आए वसंत हैं साँवलियाँ।
प्रफुल्लित वन प्रमुदित भामिनियाँ॥

वर वसन पीत शोभित सुअंग, झोरिन अवीर पिचुकारी संग।
तिरछी चितवन वर भ्रकुटि वंक, निरखैं छबि छकी सोहागिनियाँ॥आ०
शुभ तिलक भाल केशर को खौर, मणि जटित महाछवि शीश मौर।
पल्लव पहुँचा पर आम बौर, बाँकी झाँकी मन भावनियाँ॥आ०
खेलत वसंत गावत धमार, छिरकत सुगंध पिचुकारी मार।
डारत सुरंग सब नारि नार, हुलकैं पुलकैं सब कामिनियाँ॥आ०
मिथिला की गैल डोलत अनंद, संग सखा अनुज रघुनंद चंद।
वरषैं प्रसून सुर "सरससंत" जयजय रघुवर मिथिला धनियाँ॥आ०वसंत

होरी चौपदा

खेलत नवल किशोरी, पिया संग सुंदर होरी॥ खेलत०॥
चारुशिला श्री चंद्रकला जू, होरी साज सजोरी।
केशर रंग भरी कुंडन में, अबिर की ढेर लगोरी,
सखी सब गावत होरी॥ खेलत०॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, फेंकत भरि भरि झोरी।
दौरि-दौरि पिचुकारी चलावहिं, बोरी गोरी भोरी,
लाज सब तृन सम तोरी॥ खेलत०॥
एक सखी धरि लखन लाल को, मली कपोलन रोरी।
रघुनंदन कर पकरि ओढ़ाई, चूँदर चटक भलोरी,
भली छवि श्यामा गोरी॥ खेलत०॥
पूरण ब्रह्म अंखंड संग सब, धनि-धनि मिथिला गोरी।
खेलत फाग देखि सुर हरषित, नभते सुमन झरोरी,
"संत" जन गावहि होरी॥ खेलत०॥

परस्पर केलि

रंग भरे आली खेलत दोउ होरी ॥
सिय कर पकरि मलत पिय मुख में, लै गुलाल की झोरी ॥
पिय अंशन भुज धारि मलत जब, प्रीति रीति उमगोरी ॥
'सरससंत' रसिया मदमाते, नृपति किशोर किशोरी ॥

छयल ने छलक कर जो पिंचुका चलाई ।
झपट कर लली जू ने गुलचें लगाई ॥
चले मूँठ भरि लाल लेकर गुलालें ।
तो चट कर पकर श्री ने चूँदर ओढ़ाई ॥
सुभग भाल वेंदी नयन बीच काजर ।
कनक मणि जटित हाथ चूरी पिन्हाई ॥
पगन में महावर सुहावन सुनूपुर ।
अखिल ब्रह्म बनिगे मनुज से लुगाई ॥
कही लाढ़िली अब कहो कैसी होरी ।
बड़े हो चतुर तो करो चातुराई ॥
कहा लाल करजोर सुनु प्राण प्यारी ।
"सरससंत" तुमसे नहीं कछु बसाई ॥

होरी चौपदी

संग मिथिलेश दुलारी, होरी खेलत अवध बिहारी ॥
रंग उड़ावत धूम मचावत, गावत रसकी गारी ।
अति इतरात शान यौवन के, मारत नैन कटारी,
भौंह तरवार सुधारी ॥ होरी० ॥

भरि भरि मूँठ गुलाल मलत हैं, सखि घूँघट पट टारी ।
मुसुकत मंद दसनि दुति दमकत, लटकत लट घुँघरारी,
जालिया अजब शिकारी ॥ होरी० ॥

"सरससंत" रसराज रसिक वर, रसिक सिया सुकुमारी।
विलसत मोद दिये गलबाँही, झखत वेद मुख चारी॥
रसिक जन सहज निहारी॥ होरी०॥

होरी के बीर—(काफी)

लढ़ैती रामलला दोउ खेलत रंग अबीर॥
कनक जटित मणि पिचुकारिन सों, इत सिय उत रघुवीर।
केशर नीर चलावत दोऊ, इत उत रंग रणधीर॥
इत सिय सखी, सखा उत सुंदर, इत पट उत शुचि चीर।
कजरारे नैना दोउन के, मानहुँ मदन कुटीर॥
लाल गुलाल कुमकुमा इत-उत, मारत उड़त अबीर।
"सरससंत" दोउ रंगे रंग में, श्री सरयू सुद तीर॥

रंगभरी झाँकी (डफ की)

रतनारे नैना साँवरिया॥ रतनारे०॥
चंचल चपल चातुरे नीके, अंजन खंजन रागरिया॥
भृकुटी कुटिल केश घुँघरारे, डँसत हिया जनु साँपरिया।
कल कपोल मृदु हाँस मधुर छवि, दिव्य दसन द्युति उँजियरिया॥
छटे छवीले, छैल चीकने, खेलत फागुन फागरिया।
निरखत 'सरससंत' सुर-नागरि, पिया छवि बाँकी पागरिया॥

बरजन रहस्य (होरी)

दूर खेलन जनि जारी भई, मनमानी करत हैं हाय दई।
श्री रघुनंदन-सखा संग मग, केसर रंग कमोरे भरे हैं कई॥
ऐसो बेदरदी दरदियो न बूझे, पिचुकारिन मोरी सारी भिजोइ दई।
लपटि-झपटि मोरी सब रस लीन्हीं, बहियां पकरि मुख चूम-चूम लई॥
'सरससंत' छैला मनहरिया, दृगन कटारिया हाय हिय धँस गई॥

विज्ञप्ति (कविता)

धर दो ताखन में लोक लाज, सजि धजि के करो निहाल उन्हें।
कर पकरि झपटि चटपट चटाक चट, चलो चलाँकी चाल उन्हें॥
चटकन मटकन चूरी चादर, पहना कर कर दो बाल उन्हें।
'सरससंत' साँवरा रंग कर, दो गुलाल से लाल उन्हें॥

(डफ की)

रंग डारो आज नृपवारे को।
छीन लेहु कर ते पिचुकारी, हितकारी जग प्यारे को।
हाव भाव अनुराग भरे रस, नारि बनावहु सारे को।
बेंदी भाल नैन बिच काजर, गजरा सुमन सँवारे को।
सुरंग चूनरी वेसर बीरा, टोना अधर नजारे को।
मुख भरि मलो गुलाल गुलच कर, नचवावहु नट कारे को।
'सरससंत' वर श्याम नारि छवि, विसरत नाहिं बिसारे को।

मनमानी

मल लो री आज मुख हिय भरि के।
आजु अखिल जगवंदन नंदन, कंदन दुःखद सुखद नर के।
जेहि ध्यावत चतुरानन शिव नित, जोगी जती सब मरि-मरि के।
ते आनन्द सिंधु करुणाकर, खेलत खेल विविध नर के।
चोखे छटे छबीले छैला, अबिर उड़ावत भर भर के॥
डोलत गैल झरोखन झाँकत, 'सरससंत' रसिया घर के।
धन्य भाग्य बड़े भाग भयो री, मन माने सो करु धर के॥

सिखावन (दादरा)

अहि ठाम होरी मचैता पहुन कत जैता।
रंग रंगैता होरी खेलैता, सिर चोटी सुन्दर माँग भरैता॥ पहुन० ॥
नपसिष शुचि श्रृंगार अनूपम, अंजन खंजन दृगन लगैता॥
कर मेंहदी पग ललित महावर, कटि किंकिन नुपूर पहनैता॥

चूरी पिन्हैता चादर ओढ़ैता, सिया जू के आगू में नाच नचैता ॥
सुखमय सरस मास फागुन में, कोहवर केलि सरस सरसैता ॥
'संत' सार तुम जी-जानन्ह के, कथमपि कहुना कोना क विलगैता ।

अभिलाष (काफी)

सखी री रंग भरे होरी सँवलिया से खेलन जइहौं ॥
अबिर गुलाल उड़ाय चहुँदिशि, होरी गाय सुनइहौं ॥
केशर घोरि कनक पिचुकारिन, भरि-भरि विहँसि चलइहौं ।
रंगिहौं रंग, रंगइहौं तन-मन, मगन मुदित फल पइहौं ॥
ललित कलित झलमलित श्याम सुचि, वदन सदन छवि पइहौं ।
'सरससंत' श्री जानकिवल्लभ, दुल्लह रंग रंगइहौं ॥

तोको आज सजनवाँ हिय भरि फाग खेलइहौं ॥
निज कर पकरि तोहिं रंग रसिया, सुन्दर नारि बनइहौं ।
चूरी चादर चटक चुँदरिया, नकवेसर पहरइहौं ॥
वेंदी बिंदा सुभग गाल में, अबिर गुलाल लगइहौं ।
कर्णफूल कर कंचन कंगना, नूपुर पगन धरइहौं ॥
येहि विधि साजि सँवारि 'संत' हिय सदन सुखद पधरइहौं ।
आत्म-राम संग होरी खेलो, हौं जीवन फल पइहौं ॥

परस्पर मनुहार (विहाग)

लखोरी दोउ दोउन के चितचोर ॥
दोउ कर मलत गुलाल कपोलन, करि कर धर बरजोर ।
करत परस्पर युगल केलि दोउ, रति-पति मति भइ भोर ॥
दोउ भुज अंश दिये दोउन जनु, घन दामिनि एक ठोर ।
विहँसत मन्द करत दोउ बतियाँ, मिलत दोउन दृग कोर ॥
दोउ रस रसिक रहस मदमाते, 'सरससंत' चहुँ ओर ।
वरषत सुमन परसि चरनांबुज, लखत सुछवि तृन तोर ॥

अभिनन्दन

राजी रहना नवल वर रसिया।
नवल रंग पिचुकारी नवल कर, नवल सखा औ सखिया।
नवल नैन मृदु बैन नवल रस, नवल नेह की फँसिया।
नवल हँसनि नव नीरद आनन, सुन्दर फाग रहसिया।
केलि खेलि भुज मेलि परस्पर, 'संत' हिया करु निवसिया॥

हनुमानजी की होरी

लखोरी, अरी मोरी आली, दुलारे के गाल गुलाल॥
श्रवण सोह मकरकृत कुंडल, गले मोतिन की माल।
लाल जाँघिया लाल दुपट्टा, कुरते लाल रसाल।
गजमुक्ता की कंठा राजत, अरु फूलन को माल।
भाल तिलक केशरिया सोहै, नैना लाल रसाल॥
दायें हाथ गदा शुभ राजत, बायें शैल विशाल।
शुचि फागुन भगतन हितकारी, बाँके वीर विशाल।
रसिक शिरोमणि अवध छैल के, सुत श्री हनुमत लाल।
श्री सीताजी के गोद खिलौना, अंजनि सुत शुभ लाल॥
'सरससंत', के हृदय हंस जे श्रीश्री दुलारे हनुलाल।
तिनके कृपा हरी रंग राते, होरी में अधिक निहाल॥

हनुमानजी की चैती

देखत तोहि बनि आवै दुलारे अँखियन तारे॥ देखत०॥
शंकर स्वयं केशरी नंदन, हनुमत लाल हमारे हो दुलारे॥ अँखिया०॥
चितवन कृपा अभय वरदाता, जनमन प्राण अधारे हो दुलारे॥
धीर वीर तव आस सुजन जन, डोलत साँझ सकारे हो दुलारे॥
अंग-अंग सीताराम गूँज की, निसरत प्रभुरस धारे हो दुलारे॥
निशिवासर श्री सीय रामपद, सेवहु कृपा अगारे हो दुलारे॥
'सरससंत' तव चरण शरण बिनु, नाहिन और अधारे हो दुलारे॥

★

फगुआ

आज जनक पुर में मोरी आली, आली हो दशरथ के लाल—
वाँकी झाँकी सोहनियाँ॥
केशर खौर भ्रकुटि वर बाँके, वाँके हो नैना रतनार—बाँकी ०॥
कटि पट फेंट कनक पिचुकारी, मोहना घुँघुरारे बाल—बाँकी ०॥
खेलत फाग सुघर मुख मंडल, गरवा मोतियन की माल—बाँकी ०॥
डोलत गैल झरोखन झाँकत, सँगवा सब सखा, रसाल—बाँकी ०॥
दौरि दौरि पिचुकारी चलावैं, कुंकुमा दूनो हाथ गुलाल—बाँकी ०॥
सिय पर रंग सखिन पर डारत, टोनवाँ रघुवंशी लाल—बाँकी ०॥
जय जय "संत" सुमन सुर वरषैं, हरषैं, सब मिथिला बाल—
वाँकी झाँकी सोहनियाँ॥

मति मारो गुलाल, बारी मोरी उमरिया।
सुनि लीजै गरज हमारी, कौशिल्या लाल,
मन में लेहु विचारी, सब मिथिला वाल,
रूप रसिक मतवारी॥ हे दशरथ लाल, हे दशरथ लाल॥ बारी०॥
बोरी रंग में मोरी सारी, जरिदार किनार,
रचि रचि अंग सँवारी अँगिया बूटेदार,
सुंदर पाँच हजारी॥ बरबस भई लाल, बरबस भई लाल॥ बारी०॥
जनि कीजै लाल लंगराई, मिथिला के भाग,
पुर जन मन सुखदाई, सिय जू के सोहाग,
श्री मिथिलेश जमाई॥ रघुवंशी लाल, रघुवंशी लाल॥ बारी०॥

हे "सरससंत" मनभावन, एहि फागुन मास,
रंग रस मोद बढ़ावन। चरणन में वास,
दीजै यह वरदायन ॥ भक्तन प्रतिपाल, भक्तन प्रतिपाल ॥ बारी० ॥

चहका।

होरी खेलैं सब मिथिला बाल, खेलैं दशरथ के लाल,
चाँचर परी नेवारे में ॥

फागुन फाग खेलन सब सुंदरि—२, बौरी सखि सब हरषाय,
दौरीं मन में हुलसाय, चाँचर परी नेवारे में ॥
चपल नयन कजरार कटीलो, २, तिरछी चितवन की धार,
बरछी सी कनखी की मार। चाँचर परी नेवारे में ॥
एक ओर राजकुँवर रघुवंशी—२, एक ओर निमिवंशी लाल,
एक ओर सब मिथिला बाल, चाँचर परी नेवारे में ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल २, सरसै पिचुकारी हजार,
वरषै केशर रंग धार। चाँचर परी नेवारे में ॥
खेलत फाग सिया रघुनंदन २, सखियाँ मुख मलैं अबीर,
अँगिया वह मसकैं चीर, चाँचर परी नेवारे में ॥
मिथिला की गलियाँ में अलियाँ नचावें २, नाचैं कौशिल्या लाल,
नाचैं सब मिथिला बाल। चाँचर परी नेवारे में ॥
होरी होरी चहूँदिशि धूम मची है २, गाजै चहका चौताल,
वाजै डफ ढोलक ताल। चाँचर परी नेवारे में ॥
गगन विमान सुमन सुर वरषैं २, होरी खेलैं मिथिला मेहमान,
खेलैं 'संतन' के प्रान। चाँचर परी नेवारे में ॥

कैसे दूनों आज, खेलैं होरी राम सिया सुकुमारी ॥
जुरि जुरि नारि चतुर सब साजीं, सोरह शृंगार,
नयना में सोहै कजरवा। अंग अंग लहराय, अंगअंग लहराय ॥खे०॥

छैला चलावै कनक पिचुकारी, बरसै। बरसै रंगधार,
गोरी की भींजी चुँदरिया। गुलेनार किनार, राघो की
भींज पगरिया। पटुका फहराय, पटुका फहराय॥ खेलै०॥
छाई अँधियरिया गुलाबी नगरिया, मिथिला। मिथिला
की बाल, चंचल चपल नजरिया। कुंकुमा गुलाल,
मारत भरि भरि झोरिया। रसिया रसिजाय,
रसिया रसिजाय॥ खेलैं होरी राम०॥
औचक रंग जनि डारो लँगर, मोरी करकै।
करकै मोरी यार, अँखिया नवल हे रसिया।
सरकै मोरी यार, सारी सवुज मनबसिया।
अँगिया खसि जाय, अँगिया खसि जाय॥ खेलै०॥
होरी होरी धुधकै पखाउज सरंगी, बाजै, बाजै ढफताल।
होरी की धूम सुहावै। संतन प्रतिपाल, रसरंग
मोद वढ़ावैं। फगुवा सरसाय, फगुवा सरसाय॥
खेलैं होरी राम सिया सुकुमारी॥

रंग वरसै हो रंग वरसै रंग वरसै अरी मोरी गुइयाँ,
अवध में खेलैं होरी सांवलिया।
झर झर परै फुहार रग की–२, जनु सावन की नईयाँ॥ अवध०॥
उड़े गुलाल अबीर चहूँदिशि–२, छाई गुलावी बदरिया॥ अवध०॥
चलै कुंकमा औ पिचुकारी–२, घूँघट ओट नजरिया॥ अवध०॥
पिय की भींजत पाग पिछौरा–२, सिय की सुघर चुँनरिया॥अवध०॥
बीना वेनु शंख डफ वाजत–२, ढोल मजीर खजरिया॥अवध०॥
'सरससंत' हरषित वर्षावैं–२, सुर सुमनन की झरिया॥ अवध०॥
अवध में खेलैं होरी साँवलिया॥

मोरी मुरकी नरम कलइय्या, आज वहियाँ जनि पकरो साँवरिया
अँगिया मसकी चुरिया चरकी, लट वेसर से अरुझी,
सँवरिया लट वेसर से अरुझी।

विथुरे अंग श्रृंगार साँवरे, टूटी गर की हार ॥ आज० ॥
भरी गुलाल नैन मोरी करकै, सघन जलद ज्यों वरसै,
सँवरियाँ सघन जलद ज्यों वरसै।

सिहरे अंग रंग से भींजी, वेवस भई विहाल ॥ आज० ॥
इतनी अरज 'संत' प्रतिपालक, सुनिये दशरथ लाल,
सँवरियाँ सुनिये दशरथ लाल।

मिथिला बाल विहँसि बोली, फिर खेलन अइहौं काल।
आज वहियाँ जनि पकरो साँवरिया ॥
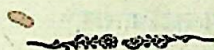
केशर के चले फुहारैं महल में भींजैं दुल्लह साँवलिया।
कर गहि गई लिवाय सखी सब, २ दशरथ राज दुलारैं—म०
लखन लाल रिपुदमन भरत सब, २ संग सखा सुकुमारैं—म०
अविर गुलाल कनक पिचुकारी, २ चलैं कुंमकुमा मारैं—म०
भींजे पट पटुका पीतांबर, २ पगिया शीस मझा रैं—म०
लसित गुलाल कपोल गुलाबी २, नैना दोउ रतनारैं—म०
रंगे रसिक वर सिय रंगन में २, श्याम भये गुलेना रैं—म०
वारैं "सरससंत" तन मन सब २, रघुबर छटा निहारैं—म०

चौताल

मोरी करकै आँख गुलाल छैल रंग डारी।
मैं अपनी मग जात रहीं सखि,
प्रमुदित मन हुलसात ।। छैल रंग डारी।
औचक घेरि लियो रघुनंदन,
नवल सखा संग साथ ।। छैल० ।।
घूँघट टारि गुलाल मली मुख,
बोलत अटपट बात–छैल रंग डारी।
भरि भरि रंग कनक पिचुकारी,
बोरि दई मोरी गात ।। छैल० ।।
'सरससंत' बरजो नहीं मानत,
वह रघुवंशी जात ।। छैल० ।।

मोरी अँखियन अटके आजु सखी री राजकुँवर छवि मोहनियाँ
सुंदर सुघर नीलमणि आनन, कमल नेन रतनार,
अरे हाँ, कमल नयन रतनार।
झलकत पट पीताँबर पगिया, चमचमात जरिदार ।। सखीरी० ।।
कटि पट फेंट कनक पिचुकारी, गले मोतियन की हार,
अरे हाँ, गले मोतियन की हार ।।
अबिर गुलाल रंग बरसारी, गावैं गीत धमार ।। सखी री० ।।
टप टप चुवै रंग चुनरी से, बोरि दई मोरी यार,
अरे हाँ, बोरि दई मोरी यार।
कर गहि चूमि कपोल गुलालन, भरि दई अंग हमार ।। सखी री० ।।

आँख गुलाल अजौं लौं करकै, धोइ थकी मैं हार,
अरे हाँ, धोइ थकी मैं हार ॥
'सरससंत' हियरा में कसकै, दशरथ राज दुलार ॥सखीरी राजकुँवर॥

—:※:—

खेलैं महराज दशरथ राज दुलारे ॥
एक ओरी जनक दुलारी, सब सखी समाज,
एक ओर राघो बिहारी। बनि ठनि सब आज २ ॥ दशरथ०
सजि सब उमंग में डोलैं, केशर रंग घोर,
कर गुलाल की झोलैं, सरयू तट ओर,
होरी होरी बोलैं। बाजैं बहु बाज २ ॥ दशरथ०
दोउ अपनी अपनी ओरी, कुंमकुमा गुलाल,
इत सियवर उत गोरी, सरसैं रंग डाल,
करि कर धरि बरजोरी। बिसरे सब लाज २ ॥ दशरथ०
लै कर कंचन पिचकारी, कर दीन्हीं लाल,
सुंदर सिय तन सारी, दुनों हाथ गुलाल,
मारत छैल बिहारी कौशलाधिराज २ ॥ दशरथ०
दौरी गुलाल लै सखियाँ, प्रीतम की ओर,
उमड़ि पड़ी सँग अलियाँ, रघुबर चितचोर,
घेरि लई गहि बहियाँ। जइहो कहाँ आज २ ॥ दशरथ०
चट चूँदर चटक ओढ़ाई, आँखन की कोर,
काजर नथ पहिराई, रंगन में बोर,
अबिर गुलाल लगाई। रसिया रस राज २ ॥ दशरथ०
नष सिख रचि श्यामा गोरी, चुरियाँ कर डार,
निरखहिं छवि तृन तोरी, होरी के यार,
बने किशोर किशोरी। छैला रघुराज २ ॥ दशरथ०

लखि जोड़ी सुघर मनोहर, हरषैं नर नार,
फाग की अचल धरोहर, 'सुरसंत' सँवार,
सुमन विधाता औ हर। वरषैं सुरराज २॥ दशरथ०

श्री राधा श्याम की फाग

वृन्द्रावन की कुंजगलिन में होरी खेलैं श्याम, बाँके साँवरिया ॥
कटि काछनी पीत पीतांबर सुघर गुलाबी गाल॥ बाँके० ॥
केशर रंग कनक पिचुकारी, झोरिन भरे गुलाल॥ बाँके० ॥
राधावर राधा संग खेलत, गावत दे दे ताल॥ बाँके० ॥
चलैं कुंमकुमा रंग परस्पर, उड़ै अबीर गुलाल॥ बाँके० ॥
धुधुक धुधुक धुधकै मृदंग डफ, मुरली बजै रसाल॥ बाँके० ॥
'सरससंत' नाचैं ब्रजबनिता नाचैं मदन गोपाल॥ बाँके० ॥

—:-०-:—

खेलैं नंदलाल खेलैं नंदलाल, वृन्द्रावन की कुंजगली ॥
मोर मुकुट वैजंती माला मुरली मधुर रसाल,
भला हो मुरली मधुर रसाल ॥
कटि काछनी नैन रतनार, केशर खौर सोहावन पगिया,
वंक भृकुटि घुँघराले बाल॥ वृन्द्रावन की कुंजगली ॥
सरर सरर सरसै पिचुकारी उड़ैं अबीर गलाल,
भला हो उड़ैं अबीर गुलाल।
डभक डभक डफ बजै अपार, नाचैं गावैं गोप गोपिका,
नाचैं कुँवर कन्हैया लाल॥ वृद्रावन की कुंजगली ॥
अररर लाल गुलाल परी रे राधा कहैं पुकार,
भला हो राधा कहैं पुकार।
सररर सरकी सारी यार, छिन रोको छिन रोको रोको,
छिन रोके छिन रोके लाल॥ वृंदावन की कुंजगली ॥

धाये 'सरससंत' नंदनंदन धरि राधा की बाँह,
भला हो धरि राधा की बाँह।
पटुका कटि से लई उतार, आँख गुलाल निवारत मोहन,
मुख पोंछत घूँघट पट टाल ॥ वृन्दावन की कुंज गली ॥

—:०:—

झटकै हो मोरी बहियाँ सखिया ॥ झटकै० ॥
मैं जमुना जल भरन जात रहीं, २ करि घूँघट मुख पटकै ॥ स० ॥
इत उत सखन बटोरि लंगरवा, २ नित रहिया विच अटकै ॥ स० ॥
डारत रंग करत बरजोरी, २ होरी होरी रटकै ॥ स० ॥
मलत गुलाल अधर रस चाखत, २ रसिया वंशीवटकै ॥ स० ॥
लपटि झपटि अटपट बतरावत, २ चूमि कपोलन मटकै ॥ स० ॥
को बचिहैं बसिहैं क्यों एहि पुर, २ बान परी नटखटकै ॥ स० ॥
"सरससंत" प्रतिक्षण निशिवासर, २ ब्रजवनितन उर खटकै ॥ स० ॥

चतुर्थ भाग

काव्य-कुञ्ज में होली

फूले कुसुंब, कचनार, जंबु अमलतास,
पनस, रसाल डार-डार रंग छाये हैं।
गेंदा, गुलदाउदी, गुलाब गुलबागन में,
सरसों सुफुलन ने सोहाग भाग पाये हैं।
"सरससंत" मिथिला सर कुंजन, निकुंजन में,
फूलन प्रति पराग अनुराग रस सुहाये हैं।
फूली सी मैथिली सु-फूली फिरैं अलियाँ सब,
फूलन सों फूले ऋतु बसंत कंत आये हैं॥

श्री किशोरीजू की टोली

चूँदर चटकीली मटकीली औ रसीली नैन,
नागर नवेली नव यौवन चढ़ी रहीं।
द्वादसहु भूषण औ षोड़स शृंगार करि,
होन बलिहार रामलाल पै अड़ी रहीं।
होरी-होरी हेरि-हेरि हूकि हूकि हल्ला करि,
जनकपुर महल्ला की अलियाँ सब खड़ी रहीं।
"सरससंत" संग अलबेली, अलबेली सिया,
लीन्हें अबीर पिचुकारी खड़ी रहीं॥ १॥

श्री किशोरीवर की टोली

अवध नरेश के दुलारे अवधेश आज,
लाज काज आजि एरी साज सजि अड़े रहे।
पीत पट, पाग औ पिछौरा, कमर फेंट मारे,
कारे घुँघरारे केश, भौंहन चढ़े रहे।
मन्द मुसुकान आन बान बाँकी कौन कहै,
लहे ललकि लोचन लंगर लाल से लड़े रहे।
शिव ब्रह्मादि 'संत' सुर मुनि सखा अनुज संग,
लीन्हें अबीर पिचुकारी खड़े रहे॥ २॥

रंगारंगी

चतुर सहेली इतै, उतै अवधेश लाल,
दोऊ ओर तनातनी तानि तानि बेरि बेरि।
केशर कमोरी रंग कुंकुम गुलाल कुंड,
झुंड झुंड सखा सखी दुहुँदिश ते घेर घेर।
खेलत परस्पर फाग विहँसि विहँसि दौरि दौरि,
मलत अबीर मुख मसकि-मसकि फेरि-फेरि।
'सरससंत' फगुवाने फँसे लसे राम सिया,
डारत सुरंग दोऊ पकरि-पकरि हेरि हेरि॥ ३॥

अपनी अपनी दाँव

वाह रे खेलाड़ी खासे वासी अवध छैल यार,
बार बार तार तार चूनर करि गारी दै।
मलत अबीर हठि गुलाल लाल आँखिन में,
ताकि तन पिचुका मारि ठाढ़े हँसे तारी दै।

बारी बारी सखियन नचावत बजावत बाजे,
गावत सुराग गान तान पारापारी दै।
शिव ब्रह्मादि 'सरससंत' सुर देव वृंद,
वरषैं सुमन मन ध्वनि जै जैकारी दैं॥ ४॥

—:※:—

पकरि छबीले को छबीली सिय अली की टोली,
होरी है होरी कहि लाल ललचावती।
पीत पट पाग औ पिछौरा झट झटकि छीन,
चटपट चटाक दैं चूँदर ओढ़ावती।
डारती सुरंग रंग लाल पै गुलाल लाल,
लाल लाल ललित लली गुलचें लगावतीं।
नूपुर पिन्हाय नव-फाग विलसाय,
हुलसाय 'संत' जनमन लाल गहि कर नचावती॥ ५॥

बरजोरी पर चेतावनी

मन में बिचारो लाल फेरि पछितइहो अरे!
सम्हरि रंग डारो ना तो कसक निकारोंगी।
डारोंगी केशर रंग मानोंगी न काहू बीच,
खींच पाग पगरी तार तार करि डारोंगी।
हाँ! हाँ! मानते ही नहीं डारत अजहूँ गुलाल,
मान जाहु लालन तोपै तन मन सब वारौंगी।
ना तो दुहाई 'सरससंत' श्री किशोरी पद,
देखत ही लाल तोहिं लाल करि डारौंगी॥ ६॥

रसमय हार

केशर कमोरी रंग घोरी बरजोरी गोरी,
धाय धाय सिय सजन साँवरो धरतु हैं।
अविर गुलाल लाल कोमल कपोल लोल,
मलत सुकंज मुख रंग सरसतु हैं।
लाल करि लाल लाल ह्वै कै विहाल कहैं,
बलि जाउँ बाल तेरी सौहैं करतु हैं।
'सरससंत' हारि गये होरी बरजोरी में,
जोरि कर साँवरो किशोरी पग परतु हैं॥ ७॥

आँखों में करक (किसी कवि की छाया)

छाये गुलाल रामलाल लाल लाल है,
झूमि झूमि आये नैंन आनन मढ़ै नहीं।
करि करि कोटिन कलान धोइ हारी अरी,
'सरससंत' दूजो युक्ति अब तो चित चढ़ै नहीं।
कैसी कहैं आली नेक मोरी करु ख्याल,
कैसों छूटै यह वेहाली जामें दरद बढ़ै नहीं।
नैंनन ते जैसे तैसे कढ़िगो अबीर लाल,
पै री रामलाल तो करकैं औ कढ़ै नहीं॥ ८॥

पंचम भाग

सिय-पिय-झूला-झलक

दोहा

सावन सरस सोहावनो, डोलत त्रिविध समीर।
चपला चमकनि द्युति दमक, श्याम घटा गम्भीर॥
सरसत बरसत बूँद झुकि, झूमि झमकि घनघोर।
झींगुर झनकारत झनक, बोलत दादुर मोर॥
लखि वरषा, वर साँवरो, और मैथिली संग।
झूलन उत्सव काजहीं, रुचिर सँवारी अंग॥
मिथिलानी अवधेश सुत, सरयू, कमला छोर।
सखिन संग चित चोरहीं, दोउ चित्रित चितचोर॥
चन्द्रकला गुन आगरी, चारुशिला सुकुमारि।
छेमा च्छेम सहित चलीं, झूलन साज सँवारि॥
कोउ शिर छत्र, चँवर लिये, कोउ कर व्यजन प्रवीन।
कोउ गुलाब-जल केवड़ा, कोउ मुरछल कर लीन॥
अतरदान कोउ कर लिये, कोउ बीरी को थार।
'सरससंत' निज कर लिये, सुमन सुगन्धित हार॥
येहि विधि सरयू तट निकट, सघन कदम की छाँह।
झूलत झूला रस भरे, सिय-पिय शाहंशाह॥

झूलन

झुलैं दोउ रसिया झूलन बाँकी।
श्री जनक लढ़ैती श्री रघुनन्दन, समता नहिं उपमा की।
झुकि झुकि झोंका देत झुलत दोउ, गलबहियाँ बरबाँकी।
लट छहरत फहरत पट झीनी, छहरत छवि छकि छाँकी।
'सरससन्त' तन मन सब वारत, देखत युगल सुझाँकी॥

दोउ ललित हिंडोला झूलैं।
दोउ दमकि दमकि, झम झमकि झमकि,
झुकि झुकि झूलन पै हूलैं॥ दोउ ललित०॥
क्या छटा, छटा अलबेली, मनो फूलि मनोरथ वेली।
कल केलि करत, रस बुन्द झरत, छवि कहि न परत, जब दृगन जुरत।
अधरामृत रसवस फूलैं॥ दोउ ललित०॥
गलबहियाँ दीन्हें विलसैं, बतरात परस्पर विहँसै।
लखि 'सरस संत', यह छवि अनन्त, नहिं मिलत अन्त, थाके वेदांत।
सोइ झूलैं सरयू कूलैं॥ दोउ ललित०॥

झूले की छटा

रसिक की झूला छवि ते न्यारा।
कोटिन चन्द दमक दुति दमकत, मोतिन लगे हजारा।
कनक पाट मणि जटित जड़ाऊ, कुलिश पिरोज किनारा।
बिच बिच मुकुता मरकत झलकत, झीनी चँदर सँवारा।
तापर नील पीत दोउ छविनिधि, झूलत प्रिया पियारा।
प्रेम डोर करि, प्रेम पेंग भरि, प्रेमिन पै मारैं नजारा।
'सरससंत' झूलन पै वारत, त्रिभुवन को शृङ्गारा॥

वरषा बहार

उमड़ि घुमड़ि घन घेरे वदरिया।
पवन चलत सूम सन न न न न न न, उड़ि रहे पिय-पट सिय की चुंदरिया।
रिमझिम-रिमझिम बूँद परतु है, विजुली की चमक, चमक उँजियरिया।
सरजू पुलिन सघन द्रुम छाँही, सावन की दोउ लेत बहरिया।
उमगि-उमगि सिय गरे भुज दीन्हें, झुकि रहे केश कपोल निअरिया।
'सरससंत' तन मन सब वारत, झुलवत झुकि-झुकि कनक पटरिया॥

सरयू के तीरे झूला झूलै मेरो यार रे।
माधुरी मुरतिया बाँकी शोभा मजेदार रे॥
छोटे छोटे छौना संग में गावैं ध्वनि मलार रे।
छवि छटा छाई मानो मदन बजार रे॥
उमगि उमगि झूलैं अमवाँ की डार रे।
सिया पिया झूलैं भली वरसा वहार रे॥
दीन्हें गलबाँह नैन जुरि जुरि चार रे।
हँसनि हँसावनि की शोभा मजेदार रे॥
भली छवि छाँकी बाँकी झाँकी लच्छेदार रे।
"सरससंत" मोहनी के मोहना हृदय हार रे॥

झूलैं कदम की डारी रतनारी अँखियाँ।
झूला पड़ा मजेदार, बाँका सजा शानदार,॥
झूलैं आपहूँ झुलावैं प्यारी वारी सखियाँ।
संग में सिया सुकुमारी, पहिरे पचरंग सारी॥
बार बार बलिहारी, दीन्हें गलबहियाँ।
छबि छाई चहुँओर, लखि नाचै मन मोर॥
"संत" पियत सुछवि, दृग मधु मखियाँ।

आज झुलत हिंडोला बाँका छैला अवधेशी ॥
सिर पै पाग पट पचरंग कटि कसि, उमक झुमक झमकेला।
अतर फुलेल गले बिच गजरा, नजरा कजरा भरेला।
अधर अरुण नाशमणि झूमनि, कुटिल केश घुँघरेला।
विहँसि विहँसि बतरात परस्पर, ललित लड़ैती छैला।
'सरससंत' छवि छाँकी बाँकी, झाँकि मदन उमगेला।

झमकि झमकि झूलैं रुचिर हिंडोलना,
ऋतु सावन की बहार रामा ॥ झमकि० ॥
सरयू तीर कदम की छहियाँ, जहँ लगै मदन बजार रामा।
जुरि जुरि सखी सब साजैलीं हिंडोलना,
युगल विहारी बहार रामा ॥ झमकि० ॥
पपिहा की पिहक कुहुक कोइलिया, झिंगुरा झमक झुँझकार रामा।
मोहत मन दादुर ध्वनि सुनि सुनि,
रिमझिम परत फुहार रामा ॥ झमकि० ॥
पवन झकोर घटा घन घेरे, तड़ित तड़प चटकार रामा।
डरपति सिय पट छाँह करत पिय,
बिथुरि गये शृंगार रामा ॥ झमकि० ॥
इत फहरत पट झीनी बीनी, उत चूनर की तार रामा।
'सरससंत' छबि लखि मुद प्रीतम,
हरषित चरन निहार रामा ॥ झमकि० ॥

झुलैले राजा रनियाँ रे, हिंडोरवा।
बड़ी बड़ी अँखिया में कजरा कटीलो ॥
जुलुम चितवनियाँ रे, चोखे कोरवा ॥ झु० ॥
काली काली केशिया जैसे लहरैं नगिनियाँ,
मन्द मुसुकनियाँ रे, लाली ठोरवा ॥ झु० ॥

उझकि उझकि झूलैं अमवाँ की डारी,
कमर लचकनियाँ रे, बाँका छोरवा ॥ झु० ॥
'सरससंत' अरुझे दोउ झूलैं,
रसिक पटरनियाँ रे, मनचोरवा ॥ झु० ॥

झुलैं दूनो रसिया अमवाँ की डारी।
रिमझिम रिमझिम मेहा बरसै, गगन घटा अँधियारी ॥
रेशम डोर धरे कर दोऊ, अंशन भुज सुख भारी।
मंद हँसनि बतरात परस्पर, उरझि उरझि पिय प्यारी ॥
'सरससंत' यह झूलन छवि पै, वार वार बलिहारी।

कुंजन बिच झूलत युगल किशोर ॥
इत उत उमड़ि घुमड़ि घन गरजत, गगन घटा घनघोर ॥
झनन झनन झींगुर झनकारत, दादुर ध्वनि चहुँओर।
बरसत बूंद झमकि रिमझिम झिम. बोलत नाचत मोर ॥
चपला चमक देखि सिया डरपति, पुनि पुनि करत निहोर।
'सरससंत' जब पवन झकोरत, छिपत पिया पट छोर ॥

अरे रामा, रिमझिम बरसै पनियाँ सँवलिया नैनन में छाये ॥
घेरि आये बदरवा कारे, चहुँ ओर झिंगुर झनकारे।
अरे रामा, चपल चमक दामिनियाँ ॥ सँवलिया ॥
श्री सरयू जी के तोरे, शुचि शीतल त्रिविध समीरे।
अरे रामा जुरी सकल कामिनियाँ ॥ सँवलिया० ॥
श्री सीताराम हिंडोरे, अंशन भुज कर करजोरे।
अरे रामा, झूलत कदम की डरिया ॥ सँवलिया० ॥
बतरात मदन मद छाँके, दोउन दृग जुरि जुरि बाँके।
अरे रामा मंजु मधुर मुसुकनियाँ ॥ सँवलिया० ॥
छवि 'सरससंत' मन भाई, मनभावन सावन छाई।
अरे रामा, छई छटा सोहनियाँ ॥ सँवलिया ॥

झमकि झुकि झूलैं सिया पिया झुलना।
सघन कुंज द्रुम लता मनोहर, श्री सरयू की कुलना।
चपला चमक चहूँदिशि चमकत, वरसत पावस सवना।
चंद्रकला बिमलादि आदि सब, झुलवत ललित लढ़ैती छलना।
'संरससंत' प्रफुलित दोउ झूलत, मिथिलानी मनमोहना।

अरे रामा, देखत लागैं नीक, झुलनवाँ झूलैं रे हरी।
पचरंग पाग सिर सोहैं, द्दग कंज कटीलो जीहैं।
अरे रामा, कच कपोल कल ग्रींव।। झुलनवाँ०।।

शुभ तिलक खौर केशरिया, श्रुति कुण्डल हलनि बहरिया।
अरे रामा, कुटिल केश लहरीय।। झुलनवाँ०।।

मुसुकान मधुर मनहरिया, जनु सोहित शरद उँजरिया।
अरे रामा, अधर अधिक कमनींय।। झुलनवाँ०।।

बनि बैठे सुघर सलोना, सिय संग अंग सुठि लोना।
अरे रामा, भूषण मणिमय हीय।। झुलनवाँ०।।

नष-सिष छविरस में माते, रति-पति लखि चकित लजाते।
अरे रामा, बनी छवी छलनीय।। झुलनवाँ०।।

छवि 'सरससंत' द्दग हूलैं, झूलैं दोउ सरयू कूलैं।
अरे रामा, शोभा त्रिभुवन सींव।। झुलनवाँ०।।

—:०:—

रुमझुम, रुमझुम, रुमझुम, बरसै बदरिया आली काली।।
श्री सरयू तट सघन कुंज छिति, छहरत छलक छटारी।
वीर वहूटी झींगुर झनकत, झर झर परै फूहारी।। रुमझुम०।।
चपला चपल चमक उँजियरिया, गगन घटा अँधियारो।
पवन झकोर पूरुवा लहरै, झम रहे द्रुम डारी।। रुमझुम०।।

तापै नाचत मोर शोर चहुँ, सखियन की रचनारी।
जनक लली औ श्री रघुनन्दन, झूलन साज सँवारी ॥ रुमझुम० ॥

हरित वसन मनि मानिक भूषन, हरित सजीं सिया प्यारी।
हरित रेशमी डोर हिंडोरा, परयो कदम की डारी ॥ रुमझुम० ॥

केशर चन्दन तिलक भाल शुचि, कल कपोल अरुनारी।
कच कुंचित रतनार नैन, तिरछे बाँके कजरारी ॥ रुमझुम० ॥

झुकि झुकि झोंका देत झुलत दोउ, अंशन भुज मुसुकारी।
'सरससंत' झूलन झाँकी छवि, हिय बिच लेहु बिठारी ॥ रुमझुम० ॥

—:०:—

झुलैलें राजा रनियाँ, रे हिंडोरवा।
काले काले पीले पीले घेरं बदरवा,
चमकै दामिनियाँ, रे चहुँओरवा ॥ झुलैंले० ॥

सरयू की तीर कदमियाँ की डारी,
झमकि बरसै पनियाँ, रे नाचै मोरवा ॥ झुलैंले० ॥

झमकि झुलावैं सखि झुकि झुकि गावैं,
कजरी धुनमुनियाँ, रे रस बोरवा ॥ झुलैंले० ॥

'सरससंत' छवि कहि न परैं जब,
झुलत सिया धनियाँ, रे चितचोरवा ॥ झुलैंले० ॥

—:०:—

झुलावैं राघो, झूलैं सिया झुलना।
सुन्दर सघन कदम की डारी, श्री सरयू की कुलना।
रेशम डोर धरे कर कंजन, झुलवत मुद मृदु हलना।
झोंका देत झुलावत निरखत, श्री मैथिलि छवि छलना।
अति श्रम पिय जानी सिय कर गहि विहँसि विठाई पलना।
'सरससंत' अनुपम जोरी छवि, दृग लखि हिय धरु ऐना ॥

हृदय के झुलैया

जिया की जरनियाँ हिंडोले में झूलैं ॥
विहँसि विहँसि तकि नैन कटीले ।
ललकि ललकि छकि छकि दोउ फूलैं ॥
फहरत पट छहरत छवि मुख पै ।
लहरत लट दोउ कोउ नहिं तूलैं ॥
सरसत सरस सुछवि माधुरि रस ।
वरसत सरसत सरयू कूलैं ॥
उझकि उझकि झुकि झुकि झूलत दोउ ।
झमकि झमकि झर झर रस घूलैं ॥
उमगि उमगि अंशन भुज दीन्हें ।
पियत दृगन रस सुधि-बुधि भूलैं ॥
लखि छवि यह सखि वारत तन मन ।
'सरससंत' हिय दोउ धन मूलैं ॥

झुलौंगी झुलना, पिया संग गोइय्याँ ।
शान्ति कुंज, भावना सरित तट, गुरुन कृपा की छहियाँ ।
नेह की डोरी, प्रेम को पलना, नेम सुदृढ़ की गछियाँ ॥
सुरति सुहागिनि पेंग बढ़ावति, ध्यान, ज्ञान, गुन गाइयाँ ।
श्रद्धा, भक्ति, शृङ्गार साजि सजि, नचि नचि ताता थइय्या ॥
'सरससंत' विधि यह झूलन की, झुलि झुलावो सइय्याँ ॥

झूलन प्रचार

चलुचलु रखिया, कदम जुरि छहियाँ, बाँका रसिया, हिंडोला लगउले बा ।
कंचन रचित जड़ाऊ पलन में, रेशम की डोरी डरउले बा ॥
मणिमय जटित मुकुट शुचि कलंगी, कुंडल कलित झमकउले बा ।
वंक भृकुटि घुँघरारे केश में, अतर फुलेल लगउले बा ।

खंजन मद गंजन अंजन दृग, गजब की शान बनउले बा ॥
श्री जनक दुलारी सुकुमारी बारी प्यारी संग, गरे भुजधारी धरउले बा।
हँसि-हँसि बतियाँ करत सिया पतिया, नैना में नैना मिलऽउले बा।
'सरससंत' छैला अवधेशी, झूलन झमकि झमकउले बा ॥

ताना

तोहीं बाट नोखे क झुलइय्या राम रसिया ॥
तनी धीरे से झुलावा, ऐसन झोंका ना, बढावा,
हाय ! सिया तन देख लरिकइय्यॉं राम रसिया ॥
देखऽ घेरे घटा घोर, बिज्जु चमकैं अथोर,
तापै सननन बहै पुरवइय्या, रामरसिया ॥
तोहे दरदो न आवो, आज काहें इतरावो,
मंद झोंकनि झुलावो सिया सइयाँ, राम रसिया ॥
कइसन बाटै तोर हीय, नाहक भइल सिय पीय,
'सरससंत' कहैया रघुरय्या राम रसिया ॥

मिथिला-झूलन (बीहट की पद छाया)

मिथिला के भाग आजु झूलैं, सावन की महिनवाँ।
झूलैं अनुराग भाग, त्याग तपसी के झूलैं।
सिया के सोहाग आजु झूलैं ॥ सावन के० ॥
सुर, मुनि, शिव ध्यान झूलैं, भक्ति भगवान झूलैं।
मेरे तो मेहमान आजु झूलैं ॥ सावन की० ॥
रघुकुल कमल झुलैं, नयन प्रति फल झूलैं ॥
हम सब सुकृत आजु झूलैं ॥ सावन की० ॥
दुलहा मनभावन झूलैं, सिया संग कमला कूलैं।
दोऊ सुफल आजु झूलै ॥ सावन की० ॥
दै दै गलबाहीं झूलैं, जुरि जुरि दृगन हँसि फूलैं।
'सरससंत' हिय में सदा झूलैं ॥ सावन की० ॥

झूलन के नौशाह

सोहते कैसे हैं नौशाह आज झूलन में।
मनो छवि-सर में नीलकंज राज झूलन में॥
जड़ित जड़ाउ कलित ललित हेम के पलने।
सजे हिंडोर आम छाँह आज झूलन में॥
हरित वितान तने हरित तट निकट सरयू।
दिये गलबाँह सियानाह आज झूलन में॥
महा प्रमोद मगन मोद से भरे प्रीतम।
हुलैं झुलैं किये तिरछे निगाह झूलन में॥
सम्हल-सम्हल के 'सरससंत झूलते सिय संग।
अवध नरेश बादशाह आज झूलन में॥

निहोर

धीरे से झुलावो झूला सिया सुकुमारी रे।
जोर से झुलइहो, रस झूला को न पइहो,
मधुर झुलावो ऊँचे कदम की डारी रे॥ धीरे० ॥
चपला चमक घटा घन कारे।
बुंदन फुहारे बहै ब्रहद बयारी रे॥ धीरे० ॥
डरपति सीय सुमुखि शशि वदनी।
रसिक छयल तुम निठुर विचारी रे॥ धीरे० ॥
धड़कत हिया हँसी तोहिं आवत।
'सरससंत' वेपीर अनारी रे॥ धीरे० ॥

अरमान

झमकि झुलावो सब अपने पियरवा के।
कुञ्जन सघन कदम द्रुम छाहीं॥
सरयू के नीरे तीरे रचहु हिंडोरवा के॥ झमकि० ॥

सजि सब साज प्रिया प्रीतम के ॥
हरित हार दृग कोर कजरवा के ॥ झमकि० ॥
झमकि झुलावो, मन भावो, रस पावो सब ।
गावो री बजाओ ले लो सावन की बहरवा के ॥ झमकि० ॥
"सरससंत" रसिया मनमोहन ॥
सिया सुकुमारी प्यारे बाबू चितचोरवा के ॥ झमकि० ॥

नैनों के मधुकरी

आजु बनी छवि छाँकी बाँकी झाँकी ताकी उठत लहरिया ।
झूलत झूला सघन कुंज द्रुम, छाई घटा चहुँ काली बदरिया ।
सरयू तीर नीर कल कल ध्वनि,
त्रिविध समीर चलत सर-सरिया ॥ आजु० ॥
रेशम डोर धरे कर कंजन, अंजन खंजन दृगन पुतरिया ॥
जब तब सिय पिय झुलत झमकि झुकि,
मुरि मुरि जात कदम की डरिया ॥ आजु० ॥
रंग रसीले राज रसिक दोउ, करत बहुत विधि रहस प्रचरिया ॥
एलि केलि कंदुक उछलावत,
पावत मोद प्रमोद महरियाँ ॥ आजु० ॥
सियहिं पवावत पान पिया शुचि, पियहिं पवावत जनक दुलरिया ॥
बतरावत भुज मेलि परस्पर,
उरझि उरझि दोउ चित मनहरिया ॥ आजु० ॥
मृदु जोहनि मोहनि मनभावनि, मुसकावनि जनु शरद उँजरिया ।
'सरससन्त' दोउ युगल छटा की,
छवि-रस लेत नयन मधुकरिया ॥ आजु० ॥

नैनों में झूलनोत्सव

नजरिया में झूलैं रे साँवरिया।
आली चलु देखु कुंजन की छहियाँ, वरषाऋतु की अजब बहरिया।
अंजन कोर चहूँदिशि ते मानो, छाइ रही सावन की बादरिया ॥
पलक डार में पड़ल हिंडोला, लागि रही लाली, लालो डोरिया।
'सरससन्त' सिय-पिय दृग झूलैं, सुन्दर प्रेम की पाट पुतरिया ॥

पावस छटा

उझकि उझकि झूलैं असवाँ की डारी नृपति किशोरी, किशोर रामा ॥
रेशम डोर कनक मणि मानिक, विरचित पाट हिंडोर रामा।
डांड़ी मरकत मंजु मनोहर, चित्रित खचित अकोर रामा ॥ उझकि० ॥
श्याम घटा घन छटा सोहावन, कोयल, कीर, चकोर रामा।
वीर बहूटी, झींगुर झनकत, चपला चमक अंजोर रामा ॥ उझकि० ॥
झमकि झमकि बरसै पावस ऋतु, बोलत दादुर मोर रामा।
'सरससंत' सुर सुमन बरषि नभ, निरखत रुचिर हिंडोर रामा ॥ उझकि० ॥

कहवाँ से आई गोइयाँ काली रे बदरिया, पड़ैला झीर झीर बुँदिया ॥
सखी सब गावेलीं कजरिया, पड़ेला झीर झीर बुंदिया।
पूरब से आइल गोइयाँ काली रे बदरिया, पड़ेला झीर झीर बुँदिया,
सखी सब झूलैलीं झुलनवाँ, पड़ेला झीर झीर बुँदिया।
केकर भींजेला जामा पिछौरा, पड़ेला झीर झीर बुँदिया,
केकर भींजै धानी चिरवा, पड़ेला झीर झीर बुँदिया।
रामजी के भींजैला जामा पिछौरा, पड़ैला झीर झीर बुंदिया,
सीताजी के भींजै धानी चिरवा, पड़ेला झीर झीर बुँदिया।

सरजू के तीर कदम जुरि छहियाँ, पड़ैला झीर झीर बुँदिया,
ताही तरे झूलैंलै झूलनवाँ, पड़ेला झीर झीर बुँदिया।
चन्द्रकला सुभगादि सखी गन, पड़ैला झीर झीर बुँदिया,
झमकि झुलावैं सिय सजनवाँ, पड़ैला झीर झीर बुँदिया।
रिमझिम रिमझिम बरसै बदरिया, पड़ैला झीर झीर बुँदिया,
शीतल मन्द बयरिया, पड़ैला झीर झीर बुँदिया।
दादुर मोर पपिहरा बोलैं, पड़ेला झीर झीर बुँदिया,
चारो ओर नाचै वन मोरवा, पड़ैला झीर झीर बुँदिया।
सरसत'संत' सरस पावस रस, पड़ैला झीर झीर बुँदिया,
सरसत सरस सवनवाँ, पड़ैला झीर झीर बुँदिया।

—:::ॐ:::—

पिया प्यारी की झुलनियाँ मन में वसी ॥

झुलैं कदम डार में झूला झमकि झुलावैं सखियाँ।
कवहूँ उझकि झुलावैं, प्रीतम कवहूँ सिया सजनियाँ।
झोंकी झोंका की झुलनियाँ मन में बसी ॥

मणिमय मौर लगे लर मोती नासामनी अधर पै।
मौरी मंजु सुवेसर शोभा रति पति छके सुघर पै।
दुलही दुलहा की झुलनियाँ मन में बसी ॥

भाल तिलक शुभ अष्टगंध की केशर खौर सुहाई।
सिंदुर माँग भाल में बेंदी, बुँदा लाल रचाई।
बबुआ बबुई की झुलनियाँ मनमें बसी ॥

जरीदार चपकन चादर पै रचे कसीदा कारी।
प्यारी की जरिदार किनारी मीनाकारी सारी।
सजनी सजना की झुलनियाँ मन में बसी ॥

कंठा कंठ विजायट भुज में गोप माल उर राजे।
चंपा हार मणिन की माला दुलरी तिलरी साजे।
श्यामा श्याम की झुलनियाँ मनमें बसी ॥

"सरससंत" रसिया मन मोहन, रस निधि जनक दुलारी।
झुलति झमकि मंद मुसका के, रसे नैन मधुकारी।
छौनी छौना की झुलनियाँ मन में बसी ॥

प्रीतम छबि प्यारी को निरखैं प्रीतम की छवि प्यारी।
राज दुलारी राज कुँअर दोउ झलैं गरभुज डारी।
रानी राजा की झुलनियाँ मन में बसी ॥

झूलैं कदम की डारी। मन हर छविधर पिया प्यारी ॥
झुकि झुकि झमकि झुलत बतरावत,
हरित वसन अंग-अंग सरसावत,
प्रीतम प्यारी के मन भावत, झुलत गरेभुज धारी ॥ झू० ॥
रेशम डोर गहे कर प्यारे,
चंचल चपल नयन रतनारे।
विहँसनि हँसनि अधर अरुनारे,
लटकैं लट घुँघरारी ॥ झू० ॥
नषसिष छवि लखि छटा सोहावन
प्रेमिन के हिय मोद बढ़ावन।
रिमझिम रिमझिम बरसै सावन। छाई घटा घन कारी ॥ झू०॥
वरषैं सुमन हरषि सुर मुनि गन, जैं जै करत वेद बंदीजन।
'संरससंत' वारत तन मन धन।
प्राण करैं बलिहारी ॥ झू० ॥

झुलो-झूलो झूलो झूलो हो, तनि धीरे झूलो हो ॥

बरसत मेह बहै पुरवइया, छाइ रही अँधियारी,
पिय प्यारे प्यारी तन हेरो, भींजि गयी तन सारी।
उड़ि उड़ि अँचरा पट खूलो हो ॥ तनि० ॥

रेशम डोर गहे हो प्रीतम डरपत हिया हमारो,
प्यारे कहुँ दुखिजाय न तेरे अति कोमल कर प्यारो।
छिल जइहैं कंज से फूलो हो ॥ तनि० ॥

राज दुलारे रसिक शिरोमनि झूलन की बलि जइये,
रमकि झमकि उझकनि झुकि झूमनि, बरबस मन बस जइये।
लगि जइहैं नैना शूलो हो ॥ तनि० ॥

पावन पावस हू मनभावन सावन सगे संघाती,
"सरससंत" मनमोहन प्यारे अब लगि जावो छाती
सिय संग हिलि-मिलि नित झूलो हो ॥ तनि० ॥

झूला झूलैं सीताराम किशोर, कदम की डरिया में।
झुकि झुकि झूलत गावत राग हिंडोर कदम की डरिया में
हरित वसन मनि मानिक भूषन अजन दृग की कोर —
पिय प्यारी दोउन छवि राजैं, लाजैं काम करोर —कदम० ॥
चितवनि चपल परस्पर चंद चकोर—कदम की० ॥
गावहिं सखी कजरिया निरखैं आपन प्रिय चितचोर—
रमकि झमकि झूलैं सिया साजन, गहि रेशम की डोर—कदम० ॥
बाँकी छवि जनु घन दामिनि इक ठोर—कदम की० ॥
उमड़ि घुमड़ि घन गरजत तरजत, गगन घटा घनघोर।
छहरि छहरि बरसै बादरिया, भींजत युगल किशोर—कदम० ॥

उड़त पीत पट मारत पवन झकोर—कदम की० ॥
गावत राग मलार गुनीजन जै जै ध्वनि चहुँओर।
"सरससंत" झूलैं दोउ रसिया, नित नयनन की कोर—कदम० ॥
मनमोहन मनभावन झाँकी तोर—कदम की० ॥

अरे रामा आली श्यामा श्याम सुंदर छवि प्यारी लागे ना ॥
सिय अंग सुरंग चुनरिया, प्यारे पट पीत पगरिया।
अरे रामा झूलत झलकैं इंद्र धनुष दुतिकारी लागे ना ॥
रतनन की माल विराजै, दोउन उर सुंदर छाजै।
अरे रामा मदन हरन मन रति चित चोरनिहारी लागे न ॥
कर कंगन हेम पिया की, चुरियाँ चौबंद, सिया की।
अरे रामा लटकैं लट जुल्फैं घूँघर मधुकारी लागे ना ॥
हुलकैं श्रुति कुंडल दमकैं, प्यारी कानन की झुमकैं।
अरे रामा झमकैं चमकैं दामिनि सी उँजियारी लागेना ॥
जब बिहँसि झमक्कि दोउ झूलैं, झुक्कि झूलनि की को तुलैं।
अरे रामा झोंकँन में झुकि जात कदम की डारी लागे ना ॥
धन धन यह पावस आवन, 'संतन' मन मोद बढ़ावन।
अरे रामा जल-थल सरसै बरषै सावन प्यारी लागे ना ॥

भोजपुरी

नैन के सलोने झूलैं, कौशिला के छौने झूलैं,
झुकि झुकि झोंकै झूलैं, झूलेलै झुलनवाँ,
झुलैं झमिक रे झुलनवाँ।

सिया को झुलावैं ऐसे, सिया हिया झूलैं तैसे।
अंग-अंग हुलसैं जैसे,
बिछुरल परनवाँ॥ झूलैं झमकि०॥

बेरि बेरि झूलैं फेरि, प्यारी मुख हेरि हेरि,
आवैं जैसे घेरि घेरि,
चंद्रमा पै घनवाँ॥ झूलैं झमकि०॥

सुंदर रसीलै सैन, स्वामिनी सिया की नैन
पिया सिया निरखैं नैन,
जैसे भँवरनवाँ॥ झूलैं झमकि०॥

"सरससंत" प्रीतम घटा, दामिनी सी सिय की छटा,
प्रेमी मन मोर नटा,
निरखैं नयनवाँ॥ झूलैं झमकि०॥

धीरे धीरे झूलऽ, पुतरिया जनि फेरऽ
नजर लगि जइहैं ये करेजऊ॥
कजरा सो मानो घटा घेर, नजर लगि जइहैं ये करेजऊ॥
खंजन नैन गजब चितवनियाँ, नजर लगि जइहैं ये क०॥
तिरछी तकनियाँ करेर, नजर लगि जइहैं ये क०॥
लहरत केश सुचंद्र वदनियाँ, नजर लगि जइहैं ये क०॥
नागिनी सी घेरे बेर बेर, नजर लगि जइहैं ये क०॥
मंद हँसनि तोर मानो जोगिनियाँ, नजर लगि जइहैं ये क०॥
करी आज कौनो मोपै फेर, नजर लगि जइहैं ये क०॥
अधर अमिय रस पै बुलकनियाँ, नजर लगि जइहैं ये क०॥

झुकि झुकि करत झमेर, नजर लगि जइहैं ये क० ॥
'सरससंत' झुकि झुलनि मोहनियाँ नजर लगि जइहैं ये क०॥
मनमोहना से मोहनी करेर ॥ नजरि लगि० ॥

डरिया कदमियाँ कै झुकि-झुकि जाय,
बबुआ धीरे धीरे झुलऽ बबुआ० ॥
वादर बरसे पवन झकोरैं, भींजे झूलन रेशम डोरैं,
विथुरे भूषन बसन खसो हैं, सर-सर सारी सरकि खसो है।
फर-फर उड़े चुनरिया लाढ़िली आँखिया झपि-झपि जाय।
बबुआ धीरे धीरे झुलऽ बबुआ० ॥
चंपक बदनी सियतन गोरी, कोमल हृदय वयस को थोरी।
देखत चपला चमक अँजोरी, डरपैं घन गरजन सुनि कोरी।
अरे निर्दई मान सिया जू सिसकि सिसकि रहि जाँय।
बबुआ धीरे धीरे झुलऽ बबुआ० ॥
दीजै झोंक सम्हल कर प्यारे, हचकै झूला लचकैं डारें,
थर-थर कंप प्रिया तन बारे, अलियाँ बिनय करैं बहु बारें।
'सरससंत' मनमोहन तोरा कठिन करेजा बाय ॥
बबुआ धीरे धीरे झूलऽ बबुआ० ॥

बाँके रजवा तोरी झुलनियाँ पै दिवानी भइलीं ना ।
उझकि उझकि झुकि झुलनि पै हुलसानी भइलीं ना हो ।।बाँके०।।
कामदार टोपी कलंगी पै लहरै खौर केशरिया,
लगि जइहैं कहुँ नैन करेजा तानी अइलीं ना हो ।।बाँके०।।
अधर सुधारस गाल गुलाबी कल कपोल गभुराई,
चमकत पान हँसनि में हाय हेरानी भइलीं ना हो ।।बाँके०।।
काले कुटिल केश लहरीले नागिन सी बल खाय,
छुये छटपटी डँसे लहर मस्तानी भइलीं ना हो ।।बाँके०।।
बाँकी अदा गजब गरुआई, बोलत बैन रसीला,
मोहि लेत बिनु मोल सखी मनमानी भइलीं ना हो ।।बाँके०।।
'सरससंत' झूलत मनमोहन फँसिया मोपै डारा,
लोक लाज कुल कानि छाँडि वे पानी भइलीं ना हो ।।बाँके०।।

झूलैं झूला लाल लाड़िली संग, मोरे हरी के लाल,
देखत रचना रति पति मति भई दंग, मोरे हरी के लाल ।।
अगर चंदन के बने पालना, हाटक मनि के खंभ ।
बिच बिच मुकुता मानिक मरकत, जड़े कुंज तरु अंब ।। मोरे० ।।
झूलैं रेशम डोर धरे कर कंज ।। मोरे० ।।
अतर दान कोउ छत्र व्यजन सिर ढारत पुलकित अंग ।
सारंगी सरोज वीणाकर, प्रमदागन बहु संग ।। मोरे० ।।
धू-धू धुधकत धमकत ताल मृंदग ।। मोरे० ।।
गान अलाप कलानिधि कौशल, गावहिं मुनि जन वृंद ।
राग मलार मेघ की गरजन, ऋतु वरषा सुख कंद ।। मोरे० ।।

दमकै दामिनि नाचहिं मोर अनंद ॥ मोरे० ॥
लता-पता-पावस रस भीने, चम्पक बकुल कदंब।
उठत, पराग सुकंज सरोवर, डोलत वायु प्रसंग ॥ मोरे० ॥
झूलैं तहाँ प्रिया प्रीतम दोउ संग ॥ मोरे० ॥
रिमझिम रिमझिम बरसै मेहा, सरसै युगल मयंक।
'सरससंत' जब तब दोउ झूलैं गहे परस्पर अंक ॥ मोरे० ॥
झमकि झुलावैं सखियाँ बिहँसि निसंक ॥ मोरे० ॥

ग़ज़ल

सदके झूले में आज चाँद उतर आया है।
चाँद अकेला नहीं चाँदनी भी साथ लाया है ॥
सजा हिंडोर आसमाँये खूब है खूबी।
खुशनुमा सनम आज खुशमिज़ाज़ आया है ॥
रुख़ पे बिख़रे हुये गेसू जो यार के काले।
शोर हरसू में हुआ मार पाल आया है ॥
सुरमई आँख की प्याले में भरी मस्ती है।
हुश्न के आशिकों की मौज छान आया है ॥
खमसा अवरू कमान तोवा है यह जालिम।
मिज़गये तीर तहे दिल पै तान आया है ॥
चोट करता है "सरससंत" करेगा जो हो।
सदके आये बक़लस खुद ही आज आया है ॥

तोरे सँगै सँवलिया निकरि चलवै।
रूप अनूप विलोकत लालन, चित चँचलहिं फँसइवै ॥
लोक लाज कुल की मर्यादा, तजवै काहू न डरवै।
सरयू किनरवां कदमियाँ की छहियाँ, बैठी पलँगिया पर पान खइवै ॥
हिय सों लगाइ निहारि नयन भरि, आपनि जरनि बुझइवै।
'सरससंत मम तन हँसि हेरो, अधरामृत रस बस करवै ॥

आज हिंडोरे झूलत सिय पिय झमकि झुलाय रहीं कामिनियाँ,
अगर चंदन के रुचिर पालना, स्वर्ण जटित मणियन की रचनियाँ।
रेशम डोर धरे दोउ झूलैं, गोप हार उर हरित वसनियाँ ॥आ०॥
बरसत मेह पवन झकझोरत, झूलत में झुकि जात टहनियाँ।
उड़त पीत पट पिय, सिय चूँनर, भींजत साजन प्यारी सजनियाँ ॥आ०॥
झुकि, झुकि झोंका देत साँवरो, कहि न परत झुकि झुलनि झुकनियाँ।
मानहुँ जनु झुकि आई बदरिया, सावन की तरसैं विरहनियाँ ॥आ०॥
नील वदन नीलांवुज आनन, सकजल जलज नैन मस्तनियाँ।
हेम वरण प्यारी सँग झूलत, जनु नभ विहरत घन दामिनियाँ ॥आ०॥
करत परस्पर केलि कलानिधि, पावत मोद प्रमोद सजनियाँ।
'सरससंत' भुज अंश किये दोउ, झूलत बना वनी महरनियाँ ॥
आज हिंडोरे० ॥

आजु री कैसी सुहानी छवि वनी है।
आजु री श्रृङ्गार छवि जनु सोहते सुषमा घनी है ॥
स्वच्छ सरजू तट निकट में ललित झूला शुचि पड़ा है।
रेशमी डोरे लगे और पाट में मानिक जड़ा है।
लता द्रुम फूले-फले शोभा सनी है ॥ आंजु० ॥

त्रिविध शीतल वायु कीर चकोर चहुँदिशि डोलते हैं।
गगन कारी घटा नाचत मोर कोकिल बोलते हैं।
दादुरन की धुनि सोहानी सावनी है ॥ आजु० ॥
उमड़ि घन घनघोर चपला चमकि नभ लेती बलइया।
झूलते झूला कदम की डार सिय संग राम सइयाँ।
सोहते जनु एक संग घन दामिनी हैं ॥ आजु० ॥
गीत राग मलार गुनिजन नाचते गन्धर्व सोहैं।
झाँझ, बीन, मृदंग ध्वनि सुनि, कामिनी मुद सुछवि जोहैं।
देत झोंका झुलत दोऊ, बना औ नीकी बनी हैं ॥ आजु० ॥
आजु री पावस सुहावन अधिक शोभा पा रहा है।
हरित डार कदम्ब प्रीतम प्रिया संग झुला रहा है।
'सरससंत' सुझूलनी मनभावनी है ॥ आजु० ॥

झूलतीं झूला पिया संग स्वामिनी जू।
झूलती घन संग दामिनि, सोहतीं जनु स्वामिनी जू ॥ झूलतीं० ॥
सरस बरषा बरोबर बरसात बर बरसा रहे हैं।
अति उमंग, प्रमोद बन बरसात रस बरसा रहे हैं।
साँवरो बरसात वर, बर भामिनी जू ॥ झूलतीं० ॥
वदत दादुर, मोर शोर, पपीहरा पी कह रहा है।
मन्द मधुर सोहावना सुख त्रिविध वायू बह रहा है।
झूमते तरु सोहतो सरयू तटनि जू ॥ झूलतीं० ॥
झमक झींगुर, चमक दामिनि, यामिनी अँधियारियों में।
झूलते झूला झमकि झुकि, कदम तरु की डारियों में।
पड़त झर-झर बूँद सरसत सावनी जू ॥ झूलतीं० ॥
हरित भूषन वसन सुन्दर प्रिया प्रीतम सुघर तन में।
सखीगन दुहुँ दिशि झुलावैं, झूलते करि भुज गरन में।
गीत राग मलार की धुनि गावनी जू ॥ झूलतीं ॥

सुछवि नष-सिष अंग प्रति पावस सोहावन भा रहा है।
'सरससंत' समाज की जैंकार चहुँदिशि छा रहा है।
जै राम वल्लभ कुंज की श्री स्वामिनी जू ।। झूलतीं०।।

अथवा

जै कनक भवन निकुंज की श्री स्वामिनी जू ।। झूलतीं० ।।

उपसंहार (बीहट की छाया)

गुनि गुनि गनि गनि दिवस बितैलों से,
सोऊ दिनवाँ आजु पूरि गेलैं हो पहुनवाँ ।।
पूरव सुकृत फल पैलों भरि सावन से,
तोहें प्रेम पलना झुलैलौं हो पहुनवाँ ।।
अब तो बरस भरि तरसि तरसि रहिहैं,
नैना दूनों सलिल वहइहैं हो पहुनवाँ ।।
अली सब रूप रस रसिक चकोरी तोरी,
तोहिं बिनु कैसे कल पइहौं हो पहुनवाँ ।।
चंद्र अरु चाँदिनी रहथि एक संग सदा,
कोना विधि ताहि बिलगइहौं हो पहुनवाँ ।।
अब तो अरज एक एहो प्राण, प्राणधन,
नित नव नेह बढ़इहौ हो पहुनवाँ ।।
'सरससंत' नित शरद शशिहि जिमि,
हिया नभ बीच लखइहौ हो पहुनहाँ ।।

षष्ठम भाग

काव्य-कुंज में झूलन

हरित निकुंजन में हरी-हरी लतान बीच,
हरे-हरे कीर कोकिलान कीं बोलैं।
हरे हरे डारन पै हरित हिंडोला पड़े,
हरे हरे पटरी पाट हरित डोर डोलैं।
अंशन भुज दीन्हें हरित चुरियाँ सोहाई त्योंही,
हरित मणि अँगूठी में हरित रंग घोलैं।
हरित 'सरससंत' सारी पट हरित झीनी,
हरित मुसुकान देत लेत मन मोलैं।

झूलत हिंडोले आजु लाढ़िली के संग संग,
अंग अंग हरित हरे वसन वेष धारे हैं।
विज्जु की छटान में घन की घटान में,
छवि की छटान में हरित रस ढारे हैं।

शुभ ऋतु अमल विमल चपला सी चमकि रहीं,
सखियाँ की अँखियाँ मधुमखियाँ रतनारे हैं।
'सरससंत' बरबस मनमोहन मुसुकान बान,
अंशन भुज दीन्हें झूलैं कौशिल्या के वारे हैं॥

सघन निकुञ्ज झुकि झूमत लता बितान,
मन्द मन्द त्रिविध समीर तरु फूलैं री।
दादुर, पपीहा, कूक, कोयल रसाल डार,
पारावत, तींतर, मोर शोर करि हूलैं री।
'सरससंत' सावन सोहावन मनभावन कैसो,
आली चलु देखि छटा सरयू सु-कूलैं री।
रिमिझिम बरसा वहार, प्यारी पिय करि शृंगार,
रुचिर कदंब डार झूमि झूमि झूलैं री॥

आली चलु देखु आजु विपिन प्रमोद कुंज,
फूले बहु फूल लता पता अनियारी की।
बोलत मयूर नभ घटा छटा छाई चहुँ,
ओरन वहार बरसा दामिनि उँजियारी की।
'सरससंत' तामें रचि झूलन कदंब डार,
अधिक छवि छाई चंद्रकला आदि नारी की।
सिया सुकुमारी पिया गरे भुजधारी झूलैं,
झूलन सु बाँकी श्री बिहारिणी बिहारी की॥

रमणीय अवनी हठि हरत मन पावस अति,
कमनीय पुरी अवध ऋतु सरसावन की।
दादुर ध्वनि, मोर शोर, मधुर घनघटा छटा,
चातक, कीर, कोकिल, तड़ित हरि धनु सोहावन की।
सुन्दर हिंडोर, शुचि मरकत भँवर डाँड़ी
कनक मणि जटित पाट पुरट मनभावन की।
"सरससंत" प्रीतम प्रिया झूलन अपार छवि,
झमकि झुलावन की बहार आज सावन की॥

—:o:—

राघो ने रुचिर हिंडोरा रच्यो है आजु,
तीर सरयू के जहाँ त्रिविध बह बयार हैं।
नाचि नाचि मोर चहुँओर शोर घन घमंड,
दामिनी दमक झमक झींगुर झनकार हैं।
डार-डार पात-पात पावस सोहावन शोर,
"सरससंत" झूम झूम बरसत जलधार हैं।
कदंब के डार झूलैं सिय-पिय सुखमा अपार,
उमगत आनंद कंद बरषा बहार हैं॥

—:o:—

आनंद के कंद रघुनंदन रसिक बर,
कदम की डार आजु झूलते उमंग में।
मंद मुसुकावैं, सिया संग मन भावैं,
प्रेमी मन को लुभावैं हुलसावैं अंग-अंग में।

'सरससंत' गावैं सब सुजन मलार राग,
नाचैं गंधर्व औ गुनिजन तरंग में।
पावस उमंग झूलैं, सरयू तट तरंग झूलैं,
सीताराम झूलैं झमकि झूला एक संग में।।

सप्तम भाग

—•—

कविता-कुंज

(श्री अवध-सद्‌गुरु-सदन-बिहार)

प्रथम झलक

काले घनघोर घटा छाये उत घनाकाश,
इतै घनघोर श्यामताई है वदन में।
उत चपला चमकि श्याम तन में लुभानी मानी,
शानी श्री किशोरी इत लुभानी श्याम तन में।
'सरससंत' कैसो बहार उत बरसत बुंद,
इतै आनन्द रस सरसत सुतन में।
उत दिव्य दामिनि संग झूलत सुघन अकाश,
इत झूमि झूलैं झूला सद्‌गुरु सदन में ॥१॥

—:०:—

छाई चहुँ झूलन झुलावन झकोरा झाँकी,
बाँकी छवि छाँकी आँखी पाई अकोरे में।
डोरे में रेशम मंजु मानिक जड़ो रे पाट,
थाट-घाट बाट झूलैं सिय पिय हिंडोरे में।

कहूँ झूलैं कुंज, कहूँ कूल, कहूँ डार मूल,
कहूँ अनुकूल, झूलैं नैन मम हिलोरे में।
'सरससन्त' सद्गुरु सदन से न झूलैं कहूँ,
झूलन में, झुलावन में, झूलन झकोरे में ॥२॥

द्वितीय झलक

श्री सरयू तीरे

दीन्हें गलबाँह औ उछाह भरे सावन के,
अतिही मनभावन पुलिन सरयू सुखारे पै।
सारी रैन सद्गुरु सदन कदन वदन,
छर छर छरकि झूलि झूलि झुकि रारे पै।
सुन्दर अनूप रूप शोभा किमि कह्यो ना जाय,
रैन में जगे ते झपि जात बार बारे पै।
मेरे प्राण प्यारे 'सरससन्त' आधारे,
प्रेमी नैनों के तारे बने राजत करारे पै ॥१॥

—:o:—

धन्य यह घरी धन्य संवत् सुधन्य दिन,
धन्य यह मास धन्य बार······वारे❀ पै।
धन्य सब नेमी प्रेमी धन्य भाग 'सरससन्त'
धन्य यह सुन्दर सदन सद्गुरु निहारे पै।

❀ इस कविता में जो रिक्त स्थान है। उसमें जिस दिन श्री सद्गुरु सदन का झूलन उतरै। उस दिन का नाम "वारे पै" के पहले मिला लें। जैसे—चंद्रवारे पै, गुरुवारे पै—

धन्य यह झूलन झूला मन फूला देखि,
धन्य भई सजनी रजनी धन्य आलि द्वारे पै।
झूलत झुलावन में धन्य भयो भोर आज़ु,
धन्य युगल जोड़ी बाँकी राजत करारे पै॥२॥

—:o:—

नीकी नव नागरी औ नीको नवल बर,
नीको यह प्रातःकाल सुन्दर बहारे पै।
नीको अंग दोउन के वसन सुरंग रंग,
दीन्हें गलबाँह नीके नैन मतवारे पै।
'सरससन्त' ता समै समता कहे को और,
नीके भानु फीके भये युगल निहारे पै।
मानो भूमंडल नभमण्डल बने हैं नीके,
नीके चन्द्र, भानु प्रगट राजत करारे पै॥३॥

—:o:—

कारे जंजीर ज़ुल्फ़ क़ातिल केश बेसुमार,
छाई नूर हूर सी दमक सितारे पै।
तिरछी निगाहें खम खाये बल खाये अबरू,
तीखे तेज धारे दुधारे नैन वारे पै।
मिज़गां सिपाह के कतार पै कतार जनु,
चोखे चोखे भाले धार वारे कजरारे पै।
'सरससंत' खाशा शहंशाह अवध शैदा आज
शान भरे शौक भरे राजत करारे पै॥४॥

—:o:—

आज एक अजबै मजा बा तनी देख यार,
सजले सब साज औ सजउले बहिन द्वारे पै।
छवि से छजत बाटन, मन में मुसुकियात बाटन,
धीरे धीरे बोलैं सिया प्यारी से इशारे पै।
करते सँवारैं वसन गहना गरूर भरे,
मानो आजु झूलि फूलि व्यर्थ भये हारै पै।
'सरससंत' प्यारे नैन प्यासे मधुप पान करैं,
सिया मुखचंद सुधा-सर में किनारे पै ॥५॥

—:०:—

चिरंजीव पावस ऋतु सावन सोहावन पावन,
चिरंजीव द्वार श्री सद्गुरु सुख सनी रहै।
चिरंजीव तीज तिथि भादौं दिन...वार,❀
अहर्निशि झूलन छवि छाँकी छनी रहै।
'सरससंत प्रात: आजु प्रिया पिय चिरंजीव,
सरयू तट निकट छटा घटा सी घनी रहै।
चिरंजीव, प्रमी और नेमी चिरंजीव रहैं,
चिरंजीव छाँकी बाँकी झाँकी बनी रहै ॥६॥

—:०:—

चिरंजीव सद्गुरु सदन शुभ द्वार धूम,
भूम झूम झूलन बाँकी झाँकी तने रहैं।

❀ इस कविता में जो रिक्त स्थान है। उसमें जिस दिन सद्गुरु सदन का झूलन उतरै। उस दिन का नाम "वार" के पहले मिला लें। जैसे—शुक्रवार, शनिवार।

चिरंजीव दिवस तिथि बार शुभ चिरंजीव,
चिरंजीव सरयू तट बिहार छवि छने रहैं।
'सरससंत' चिरंजीव नेमी प्रेमी सब रहैं,
रामसूर्त मूर्ति के चकोर जे घने रहैं।
चिरंजीव मिथिला दुलारी मैथिली जू रहैं,
चिरंजीव बबुआ रघुरैया बने रहैं ॥७॥

तृतीय झलक

एहो सुजान सरकार कृपा करके जरा,
शीघ्रता न कीजै नेक उतही अड़े रहौ।
'सरससंत' विनय मम छूटै शरीर जब,
पक्छी या काहू यहीं वृक्ष से अड़े रहौं।
या तो श्री अवध बीच नीच गृह स्वपच आदि,
सरयू पुलिन कच्छ मच्छ तन पड़े रहौं।
जौ लौं यह प्राण, प्राणनाथ पद पास जाय,
तौ लौं गलबाही दिये सामने खड़े रहौ ॥१॥

—:o:—

तेरे गली में खड़े सैकड़ों फ़क़ीर यार,
तेरे डेहरी पै कितने क़त्ल भये परे हैं।
आप फ़ानूस की तरह से खड़े मंजिल पै,
यहाँ परवाने, परवाने हाथ धरे हैं।

क़बर बनेंगे यहीं आशिक शहीदों के,
कसम तुम्हें है यार अभी हरे भरे हैं।
'सरससंत' जीने से उतर आवो सीने बीच,
जीने में न कसर होगी आस खरे हैं ॥२॥

—:०:—

फाटि जात हिया बुद्धि विकल ऐसो बैन सुनि,
काहू भाँति नैनन ओट होहु जनि सुने रहो।
खड़े रहो पास, दूर, जैसी रुचि मानै प्रभू,
चाहे एक मंजिल या दुमंजिल ठने रहो।
'सरससंत' जावो कहाँ, बात एक हमारी सुनो,
आँखन के तारे सितारे दोउ जने रहो।
बना रहे सावन, औ बनाये रहो हमहूँ सबके,
बना रहै सद्गुरु सदन आपहू बने रहो ॥३॥

प्रथम भाग

श्री रामनगर की ललित लीला रहस्य

प्रथम झलक

कैसी बनी है आजु अजब छटा है आली,
काले केश घूँघर तापै नैना रतनार हैं।
मन्द मुसुकान तान भृकुटी कमान बान
रैन में जगे ते झपि जात बार-बार हैं।
सुन्दर सिरताज भ्राज कर में कृपान शान,
मैथिली के संग संग सोहैं भ्रात चार हैं।
प्रेमिन उर हार 'सरससंत' प्रतिपाल,
कपि काँधे पै सवार राम बिहरत बजार हैं ॥१॥

—:०:—

नीकी बनी हैं संग मैथिली अनूप रूप,
नीको भूप रामचन्द्र विश्व करतार हैं।
नीको भक्त भगवत् के पथिक प्रधान निधि,
महामोह सागर के भरत पतवार हैं।
लवण सुरघाती शत्रुसूदन सुजान नीको,
नीको लाल लखन दुष्ट दलन में अगार हैं।
नीको हनुमान 'सरससंत' शुभ काँधे आजु,
नीको भ्रात चार नीको बिहरत बजार हैं ॥२॥

लेत मन मोल बिनु दाम ही बिकाय जात,
देखत मुख मंद हँसनि दसनि दुतिवार हैं।
कच की कचक हचक लचक श्रुति कुण्डल केश,
नासामणि झुमक झुकि झूमन बहार हैं।
रूप रिझवार नैन बाँके रतनार लाल,
कौशिला के चार चारु मैथिली सुनार हैं।
सबही निहार 'सरससंत' उर हार आजु,
राज ताज साज राम बिहरत बजार हैं।।३।।

—:o:—

शरद चंद निंदित मुख नीरज समान नैन,
चितवन चिरचोरन जिय जात बलिहार हैं।
कुंचित कल-कपोल श्रुति-कुण्डल चिबुक चारु,
सुंदर मृदु बोल अधरानन सुख सार हैं।
'सरससंत' मंद मृदु हास नाशा, ग्रीवाँ, भाल,
तिलक विशाल राज ताज शिरधार हैं।
नष-सिष शोभा अपार सिय समेत भ्रात चार
त्रिभुवन मनहरन राम बिहरत बजार हैं।।४।।

—:o:—

बड़ा न मजा बा आज रावरे के आँखिन में,
खंजन से खासे श्वेत श्याम रतनार हैं।
कुण्डल कृपान तापै भृकुटी खरसान बान,
जुल्फ जंजीर कैधौं आलगन बेसुमार हैं।

हाँसी के फाँसी में फँसाये पुरवासी सबै,
संग लगे डोलैं छांड़ि-छाँड़ि घर बार हैं।
'सरससंत' कांधे शहंशाह अवध शैदा आज,
शान भरे शौक भरे बिहरत बजार हैं ॥५॥

—०—

श्याम रंगवारे नीलमणिका लजान वारे।
पीत पटवारे सिर राज ताज धार हैं।
कर कंजन कृपानवारे धनुष-बान वारे,
उर मणिन मालवारे शक्ति संग भ्रात चार हैं।
'सरससंत' कोटि काम शोभा अपार वारे,
नीरज समान अंगवारे भरे प्यार हैं।
नैन कोरवारे बंक भृकुटी मरोरवारे,
मंद हँसनिवारे राम बिहरत बजार हैं ॥६॥

—०—

कैसन आज बानक बनउले बाटैं देख भइय्या
इहई हउवैं वेद औ पुराण 'संत' सार हैं।
एनहीं क नाम लेहले उतरैं लोग भव पार,
सो देखऽ कइसन सुंदर संग सोहैं भ्रात चार हैं।
हाथी औ घोड़ा रथ बाटै ना सवारी कौनो,
अबहीं भी बाबाशाही बाटै सब व्यवहार हैं।
राजौ मिलले पै बाटै काँधे क सवारी सबके,
औ अपने चढ़ि काँधे कपि के बिहरत बजार हैं ॥७॥

देखब्रऽ आजु भाई सँगवाँ साथ में लुगाई लेहले,
राजसी बनउले ठाट 'संत' साथी हजार हैं।
तनिक तनिक हँसत बाटन मन में मुसक्यात बाटन,
कैसन कैसन मनइन के मोहन मन अपार हैं।
राम भइलैं राजा, श्री जानकी जी रानी भइन,
हनुमत के काँधे चढ़ि घूमत सरकार हैं।
प्रेमिन के प्रेम के पूरण करैं बदे,
आज राज ताज साज बिहरत बजार हैं ॥८॥

—०—

आजु क भोर भरसक विधनै सँवरले हउअन,
औ विधनै क सँवारल राज द्वार पै बहार हैं।
की रात भर रामराज उत्सव अनन्द भयल,
बड़े भिनुसरही भयल आरति उपचार हैं।
'सरससंत' साधू जटाधारी मठाधारी सब,
काशी रामनगर क मनई बहु हजार हैं।
छान घोंट चन्दन लगउले लोटा सोटा लेहले,
निरखत बहार राम बिहरत बजार हैं ॥९॥

—०—

भोरे-भोरे कंज कल कोमल मुखारबिन्द,
भृकुटी मनोज की चढ़ी सी चापधार हैं।
बिथुरे अलक पलक जात झपि छपके से,
रैन में जगे ते नैन उझपैं बार बार हैं।

'सरससंत' सोहतीं विदेह जा सुबाम अंक,
भ्रातन समेत राजतिलक की बहार हैं।
राजपद माते अंग अंग अलसाते,
भक्त मन को लुभाते राम बिहरत बजार हैं।

—:o:—

विश्व मनमोहन दुःख मोचन कृपा के घर
त्रिभुवन नहिं दानी कहूँ ऐसे करतार हैं।
केते भिखारी सब सुखारी भये अन्न धन,
पाइ पाइ गजरथ धेनु अगनित अपार हैं।
'सरससंत' अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, चारो फल,
मुक्ति औ भक्ति की छाई भरमार हैं।
बैठे रामराज हर्षे सकल समाज आज,
अवध महाराज राम बिहरत बज़ार हैं।

द्वितीय झलक

अजब चुहचुहाते चंद चाँदनी चँदोवा से,
चोभदार चमक चहुँ कपोल गभुआरे पै।
नैन चटकीले मटकीले औ कटीले भौंह,
घायल परे लौटैं फेते नेक से नज़ारे पै।
अधर अरुनारे पै मुसुकन जिउ फारि डारैं,
दसननि की दिव्य दुति दामिनि दुतिकारे पै।
जुल्फ छिटकारे 'सरससंतन' के प्राण प्यारे,
प्यारे दशरथ दुलारे आज बिहरत करारे पै॥ १॥

काले केश घूँघर मानो भ्रमर गुंजार रहे,
लटकि रहे नियरे कल कपोल कचनारे पै।
झूलत झमकि झूमि झूमि झुकि नासामणि,
चूम चूम चाखत सुधा अघर अरुनारे पै।
नैन कजरारे पै करारे भौंह धारे मानो,
मदन के दुलारे ये दुधारे तेग़ धारे पै।
'सरससंत' काँधे साँधे मन्द मुसुकान बान,
बेंधत हिय तान तान बिहरत करारे पै॥ २॥

—:०:—

कलित ललित माल उर नासामणि सुंदर शुचि,
रुचिर बर भाल तिलक श्याम वदन वारे पै।
चितवन चित चोरन मरोरन मन भ्रूकुटि बंक,
ताप-त्रय मोचन शुभग लोचन निहारे पै।
अलक झलक कुण्डल श्रुति राजमुकुट कल कपोल,
चारु चिबुक कुञ्चित कच अधर अरुनारे पै।
मंद हँसनि वारे 'सरससंत' प्राणप्यारे,
प्यारे कौशिला दुलारे राम बिहरत करारै पै॥ ३॥

(गोरी से श्याम)

प्रकृति पुरुष ते परे परातत्त्व रस रासि जे,
ते सोइ उपासना उपास्य हैं बिचारे पै।
एकाकी रमन नहिं, चाहत सदा यह सोई,
रमत ब्रह्म एकइ पति-पत्नी तन धारे पै।

एक चित्त, एक वपु, एक नेह, एक प्राण,
एक रूप, एक वेष, क्रीड़त दोउ वारे पै।
"सरससंत" ताते राम साँवरे सुगोरे भये,
औ गोरी सिया साँवरि ह्वै बिहरत करारे पै ।।४।।

पंच विभूतियाँ

भक्ति की प्रसाद जासु अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष,
सोई पर सरूप यहीं पंच रूप वारे पै।
धर्म रूप भरत, शत्रुसूदन अथ देह धरे,
काम रूप कारक लखन लक्षण बिचारे पै।
पूर्ण ब्रह्म मोक्ष परातत्त्व सोई रामचंद्र,
चंद्रमुख चकोरी सिया भक्ति तन धारे पै।
"सरससंत" पंचतत्त्व, पंचप्राण, पंचवायु,
पाँचो पाँच होइ मानो विहरत करारे पै ।। १ ।।

श्री किशोरी-विशेषता

लाढ़िली किशोरी जू की अंगन की प्रतिभा पै,
प्रतिभा प्रभा न पाई श्याम रंग धारे पै।
मंजु सुघराई श्याम अंग प्रति छाई सो तो,
सिय की सुघरता छाँह आई रिझवारे पै।
"सरससंत" सीय सम पीयहू न सुघर श्याम,
दयावान, करुणा, कृपा, शील बेसुमारे पै।
जंबु फल वर्ण राम, चंपक वरणी श्री सिया,
छवि के रसिक राम विहरत करारे पै ।। २ ।।

सिंहावलोकन

रारे पै रगर तिहारी औ हमारी नाथ,
साथ मातु मैथिलि भूमि भार के उतारे पै।
तारे पै सुसेवक काँध सजत सजीले आज,
मन्द मन्द आवन प्रभु सुरसरि किनारे पै।
नारे पै रामनगर काशीपुरी के लोग,
योग औ वियोग लीन्हें ठाढ़े सब तुम्हारे पै।
हारे पै हरहु पीर दीनबंधु "सरससंत"
अंत रहिय नाथ इहइँ बिहरत करारे पै॥ ३॥

कल्पना

जन्म ब्याह आनन्द और बास बनवास कइलन,
भारी अघी दुष्टन कऽ कालिमा सुधारे पै।
मेहरी समेत बइठ राज सुधि आइल तनिक,
धीरे धीरे अइलन गंगामाई के किनारे पै।
'सरससंत' तात मातु कैकई से कहलन की,
तोर ई कलङ्क लङ्क होइ नहिं जारे पै।
ओहर पितु वचन येहर कालिमा बहावै बदे,
मति घबराइल याते बिहरत करारे पै॥ ४॥

वही हैं

छाँड़ि चले श्रीकर कमला कमलासन ते,
औ छाँड़ि दीन्हें गरुण एक गज के पुकारे पै।
द्रौपदी की टेर सुनि द्वारिका ते धाये नाथ,
अंबरीष लागि दस बार अवतारे पै।

पावन पतित दीन सेवरी, अजामिल आदि,
निशिचर औ बानर बनाये अधिकारे पै।
'सरससन्त' विरद विशाल मुख कैसे कहौं,
भक्ति आधीन आज बिहरत करारे पै॥ ५॥

—:०:—

जेई बलि बावन परसुराम गर्वहारी अरु,
जेई मच्छ, कच्छ आदि शूकर बपु धारे पै।
जेई नरसिंह ह्वै हिरण्य गर्भ हारे औ,
जेई ब्रजभूमि झूमि नष पै गिरि धारे पै।
जेई बसुदेव देव देवकी सुकोष जाये,
जसुदा सुत कहाये नन्द नन्दन दुलारे पै।
जेइ परब्रह्म 'सरससंत' प्रतिपाल तेई,
काँधे पै सवार होय बिहरत करारे पै॥ ६॥

श्री किशोरीजी औ गंगाजी

उत चामर सी, चन्द्रिका सी, चन्दो सी, मातु गंग,
इत चाँदनी, चँमेली चारु चाँदी सी सुधारे पै।
कुन्द सी, कुमुद सी, कपूर सी, कपासी उतै,
इत कल्प तरु कुसुम-सी संखपुष्पी सुखारे पै।
उत पूरण प्रकाश हाँस सुखमा की घर ऐसी,
इत शरद प्रकाश, राजछत्र सिर धारे पै।
उत पाप को जहर, शिव जटा बिहार,
इत 'सरससंत' काँधे सिय बिहरति करारे पै॥ ७॥

अपनी पुकार

सुन्दर शुभ कलि की कहानी हम सुनावत बाटी,
तनी करिहऽ तूँ विचार सब अनाथ जन बिचारे पै।
कठिन कराल कलिकाल बिकराल काल,
कवर दिन चार विश्व नाहीं कोउ अधारे पै।
जोग, जग्य, जप, तप व्रत, संयम ना बनत बा कौनो,
कौनो प्रकार सब संग अइली तिहारे पै।
'सरससंत' चरण शरण अचल बनावा,
देखऽ हम हई करारे आप बिहरत करारे पै ॥ ८ ॥

—:o:—

करारे पै जीवन क नइय्या कब लगी हो राम,
हाय! कब होई का? कैसन सब बिचारे पै।
कैसे दिन बीती? कैसे दया धर्म होई नाथ?
कैसे बनी बिगरल? कलि में नाम ही अधारे पै।
'सरससंत' पेट भर अन्नहू मिली की नाहीं?
भूखे भजन कैसे होई? कौने आस धारे पै।
बाटा का करैया? कौनो करबऽ उपइय्या?
की होबऽ घूसखइय्या तुहँऊ बिहरत करारे पै ॥ ६ ॥

—:o:—

तोहँई से कहत बानी सुनऽ मोरे बबुआ राम,
केहर क तयारी करिके चललऽ भिनुसारे पै।
एक मास बीतल जैसे तैसे तनी येहरो देखऽ,
अब कहाँ जहहैं 'सन्त' केकरे दुआरे पै।

रहबऽ कि जइबऽ आजै साँची बतावऽ हमसे,
कैसे दिन बीती बिना दरस अधारे पै।
जाये के जाऽ देखीं नावहू मिलेला तोहें,
रहई के परी आजु बिहरत करारे पै॥ १०॥

—:०:—

सुनऽ हो अयोध्या राज साहब बहादुर राम,
ऐसै जो बाढ़ी पाप तऽ बनी का सँवारे पै।
पर्वत ढहि जाई औ धरतिऔ समाइ जाई,
खसि जइहैं शेष, कलि कलुआ अनाचारे पै।
रिषी, मुनि बम्हनन क नवग्रह बनत बाऽ खूब,
'सरससंत' तोहरै अब आशा सब बिचारे पै।
दशरथ के पूत भइय्या सम्हरै तऽ सम्हार लेतऽ,
हम सब बाटी करारे, आप बिहरत करारे पै।

निराला झलक (६० ईस्वी)

जाही पद रज ते शिला गौतम तिय सोहाई भई,
औ जाही पद धोय जनक पाहुने बनाये हैं।
जाही पद कंज मंजु मुदिता महीतल भई,
सिय को संजोइ सुख सोहाग रंग छाये हैं।
जाही पद धोइ धोइ केवट सनाथ भये,
सेवरी गरीबिनि की सुयश फहराये हैं।
'सरससंत' धोइ-धोइ वाही पद श्रीकाशीपति,
काशीराज वंश की शिवंश पूत पाये हैं।

जेहि पद शंभु शुक शारद भुसुंडी आदि,
सेवत सनकादि जेहि श्रीपद खगराज जू।
जेई पद पराग बुंद गंगा की धवलधार,
प्रगटी अपावन किये पावन समाज जू।
जेई पद कमल उर्धरेष आदि चिह्न जामें
मुनि मन मधुप इव लुभाये शेषराज जू॥
'सरससंत' वेद यश गायो पद पुनीत ताको,
बार बार धोये आज काशिकाधिराज जू॥

तृतीय झलक

नीकै द्वै गयंद जाकी नीकी बनी है छटा,
राज रहे जापै नीके नीके मेहमान हैं।
नीके राजद्वार नीके षट्रस पकवान पान,
नीके रायरानी जिन्ह कीन्हें सनमान हैं।
नीके अटा पै ठाढ़े छटा छवि विभूति नीके,
लाजैं सुर सिंहाँहिं देखि देखि मघवान हैं।
नीके सिय भ्रात "संत" भाषत निकाई नीकी,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं॥ १॥

—:o:—

वारौं रति रम्भा कोटि कोटि छवि सिंधु वारौं,
कोटि काम वारि डारौं युगल मुसकान हैं।
खंजन, शुक, पिक, वारौं नाशिका सुनैन बैन,
कोटि काम धनु वारौं भृकुटी कमान हैं।

"सरससंत" अधरन पै बिम्बाफल वारि डारौं,
वारि डारों विज्जु छटा दसननि दमकान हैं।
विश्व उपमान वारौं दंपति छवि संपति पै,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं॥ २॥

श्री किशोरीजी रामजी

अंग अंग छवि की छलक झलक अमंद,
मंद मुद मोहन विश्व मोहनि सिया शान हैं।
मंजु मुसुकान, कृपा दयाखानि शीलवान।
उपमा न आन अह्लादिनि प्रेम दान हैं।
"सरससंत" रामचंद्र छवि निधान प्रान सो तो,
सिय जू की छाँह अस्तु सिय सम न आन हैं।
करुण खानि सिय जू से करुणानिधि लघूही लगैं,
करुण अंश लखन बने बाँके पीलवान हैं॥ ३॥

झलक

शरद-मयंक कल कोमल कपोल लोल,
अधर सुधा-सिंधु बंक भृकुटी कमान हैं।
अमल कमल लोचन, कंध केहरि, कंबु, ग्रीवाँ, कंठ,
चारु चिबुक, नाशामणि झूमन झुकान हैं।
"सरससंत" सोभासींव उपमा असींव आजु,
त्रिभुवन मनहरन करन करुणा निधान हैं।
कपि हनुमान फल अभिमत प्रदान शान,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं॥ ४॥

वदन इंदु लोचनांभोरुह शुचि शोभासींव,
कोटि काम सुखमा असींव पंच बान हैं।
शंकर हिय-सर निकुंज अतिसय आनंद पुंज,
भंजि सर्वशूल रंजि तन मन धन प्रान हैं।
"सरससंत" करि विमान राजत रघुवंश शान,
जानकी जनक प्रन सजीवन जग जान हैं।
अगनित मनमोहन अंग, दनुज-बन बिहंग संग,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं॥ ५॥

—:०:—

ठमकि ठमकि ठाँम ठाँम देत अभिराम राम,
भक्तन मन पूरत काम अभिमत प्रदान हैं।
अर्थिन कहँ अर्थ देत, धर्मिन कहँ धर्म पूर्ण,
कामिनि के स्वयं काम, मोक्ष वगरान हैं।
"सरससंत" जाके जस भाग सुकृत पुन्य पुंज,
ताके महाभागन को को कर बखान हैं।
कोऊ सनमान, अर्च वंदनादि कोऊ लखैं,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं॥ ६॥

—:०:—

ढूँढ़्यो पुरान ब्रह्म वेद श्रुति शास्त्र आदि,
अनुभव भेद ढूँढ़्यो न पायो पहिचान हैं।
देख्यो नहिं कैसो वह सुखंद स्वरूप रूप,
विषद विशाल स्वाभाविक शीलवान हैं।

"सरससंत" ढूँढ़ि ढूँढ़ि हारे ना निहारे कहूँ,
पूछि पचि हारे लोग कोन्हें अनुमान हैं।
बनि साकार, शक्ति संग गज सवार सोई,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं ॥ ७ ॥

—:o:—

चलु छवि देखु आज शंकर सदन सों री,
छबि सों छलकि छकि छाई छान छान हैं।
सो छवि महिमा बखानत बनै ना मोपै,
गज ह्वै सजे हैं जनु इन्द्र को विमान हैं।
तापर श्री सीताराम छवि से छजे हैं इतै,
उतै छवि चातक "संत" भरत सुजान हैं।
उतै शत्रु सूदन, इतै पाछे हनुमान आगे,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं ॥ ८ ॥

युक्ति-प्रमान

सब कोई कहाला की, ई झाँकी, जौन बा तौन
कौन ? कि लक्ष्मण भइय्या काहें पीलवान हैं ?
बाटै प्रमान ? अरे तऽ ! देख नऽ निहारऽ खूब,
देख लेहलऽ, सुनऽ अब येकर प्रमान हैं।
"सरससंत" रामनगरै हौ पुरान वेद,
इहाँ एक का कई ठे प्रमान क पुरान हैं।
भरत पुरान ! शत्रु सूदन पुरान ! हनु सिपपति,
पुरान बड़का ? लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं ॥ ९ ॥

उपसंहार

गुनि गुनि गनि गनि दिवस बितायो सबै,
सोऊ दिन पूरे न पूरे अरमान हैं।
पूरब सुकृत फल पायो भरि मास दास,
जन्म व्याह राज साज बाजत निशान हैं।
अब तो वरष भरि तरसि तरसि रहिहैं,
नयना दोउ सलिल बहइहैं तजि कान हैं।
"सरससंत" ओट जनि होउ इन नैनन ते,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं॥ १० ॥

(६० ईश्वरी)

बनी रहै कौशिला सुकोष जिन जाये इन्हैं,
बनी रहै पदतल की महिमा महान हैं।
बनी रहै हौदा मणिजटित झलमलित पै,
राजत निहार मघवानहू लजान हैं।
"सरससंत" ऐसो यह अनुपम अपार छवि,
बनी रहै बानक यह सुषमा की खान हैं।
बने रहैं अनंत नारायण राजरानी गोद,
बने रहैं लखन बने बाँके पीलवान हैं॥ ११ ॥

—:o:—

पलना में ललना बनि इहई सवार रहलन,
गोद में सवार होके कइलन दूध पान है।

लरिकन के संगे घोड़ा चढ़ी क सवारी कइलन,
चिरई क सवार वही गरुड़ जग जान हैं।
दुलहा बनि घोड़ा पै सवार होय मिथिला में,
लेहलन चोराय चित के करि मुसुकान हैं।
"सरससंत" आज कइलन हाथी क सवारी देखऽ,
लखन सुजान बने बाँके पीलवान हैं॥ १२॥

पूर्वार्द्ध भाग

प्रथम झलक

श्री किशोरी दरबार

जगमगति ज्योति दिव्य दंपति दिवाकर सों,
लज्जित करोर रति मति लखि भेष की।
छाई छवि छितिज छपाकर न पाई ऐसी,
शोभा सराहत मति सकुचत है शेष की।
देखि के निकाई "संत" मुनि मन लुभाई,
जासु कीर्ति नहिं पाई सुकीर्ति अवधेश की।
नाह नेह नद्दी करि विधि विभु रद्दी करि,
गद्दी पै बैठी आय वेटी मिथिलेश की॥

छटा

देखि देखि लाढ़िली की सरस सुघराई आली,
कौशिला के पाली आजु भूले चित्त चैना की।
अधर अरुणैना देखि नेह भरी नैना तैसी,
लाल भाल बेंदी शीस चंद्रिका सुहैना की।

"सरससंत" आनन निहार बलिहार भये,
देखि द्युति दसनि लसनि हँसनि मृदु बैना की।
सुधि बुधि भुलयना लागी एक टक नैना,
देखि बावरे भये हैं रूप बेटी श्री सुनैना की।

चरण

बिहरैं निरंतर तिहुँताप के सुबाग मध्य,
इनसों प्रतिकूल आत्मनुकूल सुख लीवे पै।
देखे विष्णुपुरी, शिवपुरी, ब्रह्मपुरी और,
स्वर्ग इन्द्रलोकहुँ लों नाना सुख लीवे पै।
देखे धाय बद्रीविशाल, रामेश्वरनाथ,
गंगा, जंमोत्री देखि अमृत जल पीवे पै।
देखे दास "सरससंत" विश्व सृष्टि नेक जन्म,
सिया चरण देखे ना तो छार ऐसे जीवे पै।

—:०:—

सुन्दर रच्यो नाहिं अंग-अंग युगल छवि,
गोइय्याँ तुषार परै नाना कर्म कीवे पै।
संत धन चरण पखार के पान कीन्हें,
येरी अग्नि बर्षै देव सीरो जल पीवे पै।
बिहरे न बन प्रमोद कुंज-कुंज कुंजन में,
गाज परै अन्य फुलवारी सुख लीवे पै।
"सरससंत" व्यर्थ ही बितायो दिन एरे मन,
सेये जो न सीय पद तो छार ऐसे जीवे पै॥

द्वितीय झलक

श्री रामदरबार

व्यंग प्रार्थना

तेरे सदा से हैं आजु लौं न युग-युग से,
खाता उपखाता सब खोल के दिखावेंगे।
पाप के प्रपंचन की रंचहू कमी न होगी,
दुगुनो गीध, गनिका ते सौगुनो गिनावेंगे।
सेवरी ते नीच औ सुदामा से दरिद्र महा,
दीन द्रौपती से कहो कैसे कहावेंगे।
"सरससंत" इनहूँ ते पातकी प्रपंची घने,
तारो तो तारो नहीं मसखरी उड़ावेंगे।

—:०:—

किया था करार कि नेह को निबाहेंगे,
हमें क्या पता था कि ऐसे मुँहचोर हो।
पहले बढ़ा के यारी कैसी करी बेकरारी अब,
औरन के तौरन से प्रीतहू में थोर हो।
ऐसी निठुराई जौ विरद विसारन 'यह,
कियो अख्तियार तूँ तो "संत न" सिर मौर हो।
खैर ! चाहक न होता और दूसरा तुम्हारा तो,
देखता मैं कैसे तुम हिय के कठोर हो।

हम तो सदा ही से आपके कहावैं प्रभू,
हमसों दुराव कौन सो है सो बताओ तो।
मान क्यों कीन्हों मैं सनेह रीत दीन्हों तोपै,
लोकलाज भार परे अजहूँ पतियाओ तो।
"सरससंत" नेह को निबाहिबो कठिन है प्यारे,
यामे नीति रीति जाय नेक बतियावो तो।
सौंहैं हैं तोहिं प्यारे दशरथ दुलारे, करके,
कृपा की नज़र जरा मंद मुसुकावो तो।

—:०:—

सेवरी अजामिल गीध गनिका गयंद जाति,
केते अघ अधिन अघनाशक कारतूस हौ।
भक्त प्रहलाद औ सुदामा दरिद्र हारी,
जन सुखकारी हे बिहारी बरबूस हौ।
याही जानि निपट निलज्ज ध्वज्ज "संत" दीन,
आयो सरन तापै भये ऐसे मनहूस हौ।
मेरी बेर कृपा की पेटारी दई छाँड़ि कहूँ,
सुना था उदार पै बड़ो ही कंजूस हौ।

—:०:—

अब तो दीन दासता पै नेक ना सुरति करैं,
काहू दीन दुखियन की आह से कढ़ै गयो।
दीनबंधु बंधुता बगरि गो बिवेक बिनु,
दया को दुआर दीन दुनियाँ से तै गयो।

संयम समानो सत्य तोषहू बिकानो कहूँ,
"संत" भगवंत को अनंत नियमै गयो।
सूख्यो समुद्रशील, लाज को जहाज डूब्यो,
दया के खजाने की ताली काहू लै गयौ॥

—:०:—

कैधों करन पान अंगुष्ठ बटपात बीच,
कैधों क्षीर मध्य जाय घोर नींद स्वै गयो।
कैधों बलि द्वार बनि बावन करत छल,
कैधों व्रजमंडल जाय पुण्यभूमि च्वै गयो।
कैधों गये भूल, फूल तोरत सरस बाग,
कैधों संग ग्वाल बाल कुंजखोर ख्वै गयो।
"सरससंत" दीन की पुकार ना सुनै हैं कैधों,
कलि की रवैया देखि घूसखोर ह्वै गयो॥

विरद

एहो उदार सरकार अवधेश लाल,
अतिही कृपाल और पर उपकारी हौ।
काहू के सखा भ्रात काहू के तात नात,
काहू के प्रीतम, प्रिया प्रानन हितकारी हौ।
"सरससंत" काहू द्वार अजब बने धाये फिरे,
काहू के चौका, चाक करत बे-बिचारी हौ।
काहू के सारथी सुधारक धरम बीर,
हरन भवपीर साँचे भक्त भयहारी हौ॥

बलैया

एहो सुघर श्याम काम सम सुंदर हो,
कैधों काम रूप तुम बाँके बिहारी हौ।
कैधों श्री जशोदा गोद माखन से मचल रहे,
कैधों नंद नंदन गोप गोपिन बिहारी हौ।
'सरतसंत'' कैधों प्रभु बावन परसु आदि,
छद्म वेषधारी बलि के भिच्छुक बिहारी हौ।
एते बिहारी बलिहारी गई वापै तूँ तो,
प्रानन बिहारी फेर अवध बिहारी हौ॥

निवासस्थान

मेरो मन सुंदर बिहार थल आदि जामें,
कंचन बन, चित्रकूट सुखद अभिराम हैं।
सुखपुर अयोध्या, जहाँ सुजश तिहारो नित,
भाषत वेद चार, चहुँओर ठाँम-ठाँम हैं।
कंठ मुद मिथिला, मनहरन गारि गान जहाँ,
नैन दोउ सरयू औ कमला जू ललाम हैं।
"सरससंत" रोम-रोम कुटिया यह शरीर विश्व,
चाहे जहाँ बसो जू तिहारो सब धाम हैं॥

कौशिला के गोद

कुरै परी कठिन करतूत रावणादि वंश,
अति ही अशंक कुकलंकियाँ कुरै परी।

जुरै परी जम की जमात सी जगत बीच,
नीच कर्म कामी कुल पापियाँ पुरै परी।
पुरै परी तिनकी आतंकता स्वतंत्रता,
"सरससंत" मानवी सुसभ्यता थुरै परी।
थुरै परी देखि जग रक्षक भद्र्य क्रूर वंश,
कौशिला के कोरे एक बारही कुरै परी॥

तृतीय झलक

मिथिला-सोहाग सौभागकी सोहनी झाँकी

गलियों में

जैसियै सुसुख की खानि हैं किशोरी गोरी,
तैसियै अवधेश को दुलारो सुख सीना हैं।
"सरससंत" जैसियै पै जगमग जगी है जोति,
तैसियै सुवंश सूर्य पूरन प्रवीना हैं।
सुखद संयोग यह विधना सँवारि निज,
आली लखि लोचन सुलेख लिख दीना हैं।
टूटै न टूटै धनु, बात नात साँची सखी,
सिया सोने की अंगूठी राम नीलम नगीना हैं॥

बगिया में

पूजन गौरि चलीं सखियाँ, बगिया बिच कंत बसंत जहाँ हैं।
प्रेम छकी एक बावरी सी, लखि श्यामल गौर किशोर तहाँ हैं॥

जानकि जोग विचारि कहैं, सुनि बैन सखी नहिं जात रहा है।
पूछत धाइ बोलाई अली अरी, वेगि बता, न दुराउ कहाँ हैं ?

आशीर्वाद

प्रगट विदेह की सुता हैं श्री किशोरी जेहि,
पाई अशीस रिषि नायक मन मान की।
तुम हौ उदार कृपा मूर्ति राय दशरथ के,
दोउन की जुरी नैन बाग बागवान की।
"सरससंत" कौशिक प्रवीन जी विचारि कहैं,
अनुभव प्रत्यक्ष यह बात सु-प्रमान की।
उन्हें तुम मिलोगे सहजही सहज बर,
तुम्हें वह मिलेंगी सुप्यारी प्रिया जानकी॥

छटा

क्रीट की चटक औ मटक बंक भौंहन की,
सैनन सुबैनन बैन ऐनन पगी रहै।
कच की कचक औ हचक श्रुति कुण्डल की,
नाशामणि झमक झूमि झूमत झगी रहै।
"सरससंत" जानो युग चंद कंद बंद अधर,
विहँसत मुखमंद तब दुचंद जनु उगी रहै।
ऐसी छबि छाँकी बाँकी झाँकी जिन झाँकी,
ताकी प्रबल त्रिताप ताप आपही भगी रहै॥

सुन्दर शोभा खानि मनोहर जोति जगामग होती हैं।
मौर खौर कुण्डल कपोल पै लहरैं गुच्छे मोती हैं॥
काले कुटिल केश जहरीले अजब नागिनी सोती हैं।
"सरससंत" क्या रसिक राज की गजब केशरिया धोती हैं॥

गज लिये फेरि मुख हंस लजे, इस अवध राज की चालन में।
रवि छटा चमक दबि गई, भई जग जोती मोती मालन में।
पट पीत केशरिया छवि मनहरिया नाशामणि मृदु हालन में।
"सरससंत" रस थली भली, क्या झलक गुलाबी गालन में॥

आजु छबि छाँकी नवनीत सी भलीरी माई,
रोम-रोम छाई चहुँ चंद, मंद परितो।
को कवि बखाने, औ केहि विधि बखानै,
शुंभ, शुक, शारद, मुनीश मति छरितो।
छबि हियन समाई, तब नैन ललचाई,
जब नैनन समाई, तो हियन पीर परितो।
"सरससंत" लाढ़ले की शोभा अवलोकिबे को,
रोम-रोम होते दृग, तौ न पेट भरितो॥

संयोग फल

पूरब सुकृत औ संचित सुकर्म फल,
सकल, सफल फल पायो, जोग जूटो री।
सिया श्री सोहाग, भाग जाके अनुरागिन के,
पागे पुरवासी प्रेम, पूरन अटूटो री।

"सरससंत" कैसी करूँ, हिय में धरूँ नैन रूठै,
औ नैनन बिठाऊँ, तो हिया चहत फूटो री।
रूठो या फूटो, जग झूठौ बरु छूटौ,
जूटो सिय को संयोग, छवि अनंद रस लूटा री॥

चेतावनी

गंगा, गोदावरी, गणेश, औ महेश, शेष,
शारदा, दिनेश, सबै पूजि-पूजि आई हौं।
चन्द्र, भौम, बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनि उपासी रवि,
प्यासी रहीं निर्जला एकादशी जगाई हौं।
गौरी, नवो दुर्गा, महा कालिका, कुराहु, केतु,
प्रेत, पितर, सबही सिय सोहाग लागि धाई हौं।
"सरससंत" पूजे पुन्य सबही की मुनि की कृपा,
नजर न लागै, अनमोल लाल पाई हौं।

मौर वाले

अष्टादश पुराण, शास्त्र, श्रुति संहितादि, आदि,
पाई न पार जाकी नेति नेति गाई हैं।
शंभु, शुक, शारद, विशारद भुसुंडी शेष,
चंद्रमा, दिनेश, जाकी प्रगट प्रभुताई हैं।
"सरससंत" वेदहू प्रत्यक्ष गान गावैं तौऊ,
पावैं न ध्यावैं जन्म कोटि कोटि जाई हैं।
सोई सुखदाई के सोहाई मौर माथे,
देखो कैसी छवि छाई बने मिथिला जमाई हैं।

दुल्लह और दुलही

दुल्लह दुलारो और दुलही दुलारी तैसी,
इन्हैं शीस मौर उन्हैं मौरी शुभ प्रवीना हैं।
पीत पट-फेंट-कटि जामा केशरिया इत,
त्योंही उत चमकदार चूंदरी लसीना हैं।
'सरससंत' जटित जड़ाऊ हीरा-हार उभै,
उभै-कर कंगन त्योंही छविरस भीना हैं।
कनक मणि खंभ प्रति छाई सुझाँकी बाँकी,
सिया सोने की अँगूठी राम साँवरो नगीना है।

व्याह-मंडप अवलोकन

आजु बनी औ बने की छवी, छिति छहरि छटा की घटा उमड़ी हैं।
छवि सागर गागर सी मिथिला मणि-मंडप मंडल को न अड़ी हैं।
'संत' सुजान सुरेश, गणेश, महेश, दिनेशहु भाग्य बड़ी हैं।
जानकि राम सयोग निहारन, कोई खड़े, अरु कोई खड़ी हैं॥

युगल झाँकी

देखु आली आज श्री अवध दुलारे पै,
कोटि काम सुखमा की उपमा छवि छीना हैं।
छविरस भीना हैं, सनेह सरसीना हैं,
मन बस कीन्हा, प्रीति नूतन नवीना हैं।
'सरससंत' मंद मधु मधुर मिठाई जैसी,
बोलनि, चलनि, और हँसनि, हँसीना हैं।
सिय गरे भुज दीन्हा, चारु चितवन प्रवीना,
सिया सोने की अँगूठी, राम साँवरो नगीना हैं॥

भुज अंश किये मुख मंद हँसी, विकसी दँतियाँ जनु हीरक से।
बतरात परस्पर हेरत चंचल, नैन नचै नव नेह फँसे।
नव नागरि के छवि नागर हैं छकि, नागरि नागर 'संत' लसे।
क्या खूब बनी बाँकी झाँकी, जनु दामिनि घन एक ठौर बसे॥

चंचल चपल नैंन कजरारे श्वेत श्याम रतनारे हैं।
भृकुटी कुटिल केश घुँघरारे मानो फनिक हजारे हैं।
मुसुकन मंद कंद सों आनन त्रिभुवन प्रान अधारे हैं।
'सरससंत' घन हृदय हार यह प्यारी, प्रीतम प्यारे हैं॥

मुसुकान माधुरी

नोखे मद गंजन कंजन अंजन रंजन खंजन खासी है।
बाँके भृकुटी, बड़री अँखियाँ, मधु की मखियाँ सुखमा सी हैं।
'सरससंत' यह कुटिल केश डँसिबे को नित अभिलाषी हैं।
श्री रामलाल की हाँसी, क्या प्रेमी पथिकों को फाँसी है।

भौहैं कमान सर नैन बान संधान अनोखा छूटा है।
चटकन मटकन लटकन बाँके, बाँके दुपटे पै बूटा है।
घुँघराले बालों के मरोर, अलिगन समूह जनु जूटा है।
श्री राम लाल हँसि 'सरससंत' हर दिलवालों को लूटा है।

अजब तोहार ई मन्द मुसुकान बाटै,
देखि देखि मनइन क मनुवाँ भुलाय जात।
अँखिया के पुतरिया क दाँव पेंच खूबै बा,
क़तल करै में लाल तनिको न ई अघात।

नागिन के तरह से बाटै लहरत ई तोहार केश,
जान जोखिम में बा करी ई जरूर घात।
'सरससंत' तोहरे ई छवि इन्द्रजाल बीच,
योगी, यती, सती, विधि, विधान सब भुलाय जात॥

विनोद

फँसि जाते मना मधु 'संत' कहीं, पड़ि जाते जो हलकन अलकन के।
धँसि जाते सरोवर में कितने, मरि जाते केते इन मुसुकन के।
परि जाते पतौवन से कितने, चलि जाते समीर जो पलकन के।
तुम होते कहीं जो लली हे लला, तो गला कटि जाते जु अरबन के॥

छोह

नवल उमंग अंग अंग वंदनार्विन्द,
पूरन प्रकाश शरद चंद सी सनी रहै।
कच की कचक औ मटक बंक भौंहन की,
ढीली ढीली जोहन सों नैना तनी रहै।
मंद मुद हाँस अलिगन मन मान फाँस,
दास जन दीनन पै करुणा घनी रहै।
'सरससंत' सर्वदा प्रसन्न चित्त चाह यही,
सदा मनमोहन की मोहनी बनी रहै॥

तृतीय झलक

नैन कैफ़ियत

मतंग से झूलत हूलत अनियारे वारे,
श्वेत, रतनार मध्य, सुघर श्याम पाले हैं।

पलक कोठरी के बीच, लाल लाल डेहरि पै,
रक्षक करोड़ मिजगाँ तीखे तेज भाले हैं।
तेग से निराले, खम खाये बल खाये अन्नू,
जीयत, मरत, झुकि परत ये मिसाले हैं।
'संत' मतवाले ह्वै विहाले करैं राघव नैन,
ये आम फाँकवाले जाने केते घर घाले हैं॥

चहचहे चहक चुभे हैं चहुँ कपोलन पै,
लहलहे लाँवे, लटैं लपेटे मार सोये हैं।
नूर सा वदन, रस ढारत सुबैनन में,
ऐनन में, नयनन में, सैनन में जोये हैं।
जख्म से भरे हैं, औ परे हैं प्रेम पथ की गैल,
ठगि से रहे हैं, "संत" सर्वस मन मोये हैं।
सोये हैं सो जोये जेहि नैनन निहारयो लाल,
ये लाल लाल कोये जाने केते घर खोये हैं।
रूप सुधासिंधु में डूवे नित रहिये "संत"
अष्ट पहर रसना सों रामनाम कहिये।
कुण्डल अधरामृत, नासिका, कपोल गोल,
भृकुटी मनोज चाँप दाप कोटि लहिये।
गोला, बारूद, और बरछी, तमंचा, तेगा,
भाला और छूरा को असंख्य घाव सहिये।
लहिये यह लाढ़िले के पाँयन सुभायन पै,
कोरदार नयना से करोर कोस रहिये।

सुनैना, सुनैना, कछू काहू की सुनैना देखि,
सुनैया, सुनैना भई, आजु ही सुनयना हैं।
सुनयना कहै पै क्यों ? सुनयना के बैना ना,
औ वैना कहै पै क्यों ? कि वापै ना सुनयना हैं।
"सरससंत" पुर नर नारि की सुनैनाहू,
ऐसी सुनयना कहूँ देखी ना सुनयना हैं।
कौशिला के बारे की, जैसी यह सुनैना, नैना
वह काम का दुलारा दुधारो सुनयना हैं॥

—:o:—

बाँके राम श्याम बाँकी उपमा सुहाई बाँकी,
कीरतिहू सुबाँकी सुनि धीरता फुरै जात।
उपजै अनुराग भाग बाढ़ै सुजन हिय,
जिय की जरनि मूल, तूल सम जरै जात।
"सरससंत" बाँके श्याम छाये तन वदन जाके,
ताके रोम रोम रंग श्यामता दुरै जात॥
परि जात बाँकी चोट चितवन चपल चित,
लगत नहीं बार, एक बारही तरै जात॥

अधर छवि

लोचन लुनाई चारु चपल अनियारे औ,
डोरे लाल कोर कोर कज्जल सँवारे हैं।
खंजर दुधारे जनु काम ने निकारे तापै,
मन्द मुसकानैं जान जोखिम करि डारे हैं।

"सरससंत" समता लजाने औ हेराने सब,
केशन कुटिल मानो फनिक वेसुमारे हैं।
नासा बुलाक, श्रवण कुंडल झमाकदार,
सुंदर चिवुक चारु अधर अरुनारे हैं।

जुल्फ जाल

शोभा शुभताल पै लोभा मन सिवार जनु,
मखतूल तन्तु श्याम मनमथि मनि गयो।
मुख मकरंद मधु-सिंधु पै सुभृङ्ग कैधौ,
कैसो मन फाँसिवे को प्रेम फाँस तनि गयो।
घूँघर केश, अधिक उछाह में भरे हैं "संत"
लटकि कपोल दुहुँ दिशि ऐसो बनि गयो।
कैधों शशि मुख, पै कुंड में, अमी के हेतु,
दोऊ काली जुल्फन में, झगर जोर ठनि गयो॥

—:o:—

मार डाला यार तुम जुल्फ लटका के प्यारे,
मदन मुसुकान आन बान यह तेरी है।
घायल सी जिगर है, औ हस्ती मिटी है अभी,
बड़ा वेढब जखम है चोट चितवन करेरी है।
ठहर सकेंगे क्या ? प्रेमधन पथिक प्रेमी,
भौंह तलवार ओट अँखियाँ जो बड़ेरी हैं।
बचेंगे नहीं ही 'संत' रुख़ से रिहाई पर,
चरण में लगा लो जान जाने में न देरी है॥

इधर-उधर की

कोऊ कहे वह भूतल में, अरु कोउ कहैं परलोक ठहा है।
क्षीर समुद्र में कोऊ कहैं, पुनि कोउ कहैं बैकुण्ठ लहा है।
कोऊ कहैं वह भूतल में, हिय 'संत' कहैं वह सारे जहाँ हैं।
न जाने यहाँ हैं, न जाने वहाँ हैं, यहाँ है, वहाँ है, न जाने कहाँ है॥

सिर गोद में लेइ के बावरे से, भये रावरे नैन बहैं जलधारे।
मुख पोछि पटंबर अंबर से, धरि धीर समीरन प्राण सम्हारे।
'संत' सदा जिन सेवत साधु, मुनीश, महेश, सुरेश सकारे।
राम सों ऐसो दयाल कहाँ जो जटायू के धूर जटान ते झारे॥

सर्वोपरि लक्ष

कोई करोड़ जपै, कोई लाख जपै, कोई खाक पै खाक रमाये रहैं।
कोई बैठि के ध्यान अखंडहि ब्रह्म को, ब्रह्म में, ब्रह्म, मिलाये रहैं।
कोई मेचक, रेचक, कुंभक आसन, साधन, साध्य समाये रहैं।
सबकी न कहैं, रुचि 'संत' यहीं, प्रभु बाँकी ये झाँकी दिखाये रहैं॥

जेहि कारन अंग विभूति रमा, तन तीव्र तपा तन झाँपे रहैं।
सब तीरथ धाम, सुगंग नहा, नित भूतल भ्रमि पग नापे रहैं।
कर जापे रहैं, चहुँ व्यापे रहैं, जिन सिद्ध, शिवा, विधु आपे रहैं।
सोई चाहत 'संत' महाछवि झाँकि, सुराम सिया पग चाँपे रहैं॥

श्री

राम रसिया

वक्तव्य

अनंत श्री गुरुपद पद्म पराग अनुराग के अगाध आशीर्वाद एवं दुल्लह मेहमान श्रीरामजी और लाढ़िली लढ़ैती श्री किशोरीजी की प्रेरणा से प्रेरित यह प्रेरणा मिली कि वृज के "वृजरसिया" गान शैली में भी कुछ काव्य रचनाओं का प्रतिवादन हो। यद्यपि एक बार हमारे अंतरंग प्रेमी परम भक्त गंगादास जी 'निषाद' ने ऐसे सुझाव भी अवश्य दिए थे। परन्तु उस समय आखिर होता ही कैसे यह तो चितचोर त्रिभुवन मोहन मेहमान श्रीराम और उनहूँ के मनमोहिनी श्रीकिशोरी जी जब कभी विशेष प्रकार से निश्चिंत होकर हृदयकुंज से बुद्धिवाटिका में विहार करने आ जाती हैं, तभी हो पाता है। अन्यथा हमारे समेत बुद्धि की वही दशा है :—

कवित प्रभाव एक नहिं मोरे।

सत्य कहौं लिखि कागद कोरे॥

अतएव यह पुस्तक "रामरसिया" नाम से प्रस्तुत है इसमें गुरुपद माहात्म्य, मन-बुद्धि प्रार्थना, एवं मेहमान से अनुनय विनय के बहुत ही मार्मिक, प्रार्थना तथा श्री अयोध्या, मिथिला की झाँकी और मेहमान तथा सियादुलही छवि छटा की झाँकी आदि के बहुत ही आकर्षक प्रेरणा मिली है। और फिर प्रियवरों बात तो यह है कि—

'निज कवित्त केहि लाग न नीका।

सरस होउ अथवा अति फीका।'

इसलिए हमें जो अच्छा और प्यारा लगा। तो प्रस्तुत किए देता हूँ। अब आप जानें और प्रेरक। हाँ ! हमारा निवेदन पाठकों से अवश्य है कि—

'करहु मनोरथ अति अनुहारी।

सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी॥'

—संत भैयाजी

श्री राम-रसिया

श्रीगुरु-चरण-माहात्म

तन, मन, धन, सुख सारो, गुरु पद पै वारो।
श्री गुरुपद नष जोति प्रभा लखि, भाग महा तम भारो ॥ वारो तन० ॥
भारो भीरहू में भीर, जीव अधिक अधीर, जग नाचै जैसे कीर,
पड़े कर्मन के दंड। दंड छूट जो चहो, श्री गुरुपद गहो, सदा
छेम से रहो, कर्म छाँड़ि सब उदंड ॥

कर्म छोड़ि सब निपट लपट गुरु, कल्प वृक्ष पद डारो ॥ वारो तन० ॥
पद कंज को पराग, पंच बास. जाय भाग, छन छन अनुराग,
बढ़ै प्रेम को तरंग, रंग अंग में बढ़ै, कलिमल सब कढ़ै, भाव
भक्ति उर गढ़ै, पद सरिता सी गंग ॥

गंग गोदावरि तीर्थराज से गुरुपद रज शिर धारो ॥ वारो तन० ॥
पद कोमल ललाम, छवि शोभा सुख धाम, ध्यान धरु अष्टयाम,
बड़े काम को चरन, चरन चित्त चट देइ, भाव भक्ति भरे सेइ,
फल चार झट देइ, ऐसो मंगल करन ॥

मंगलमय महिमा मंजु चरण गुरु मोद भरो भंडारो ॥ वारो तन० ॥
पद परम पवित्र, चित्त भीति लिख चित्र, तरै कोटि कुल पित्र,
गुरु सन्मुख जो होय, होय गुरु की शरन, छूटै जनम मरन,
भव तारन तरन, गुरु पद रज धोय ॥

पद-रज धोवन मधुर मधूमय अमृत की सी धारो ॥ वारो तन० ॥
और कहूँ नहीं ठौर, मन बीच करो गौर, सब झूठ दौरा दौर,
बस गुरु पद की आस। आस सबही निरास, दृढ़ करि विश्वास,
भव भय अनायास, शूलनाश को सुपास ॥
सब सुपास पद पास गुरू के पद बिनु नहीं उबारो ॥ वारो तन० ॥
गुरु ब्रह्मा औ महेश, शुक मुनि कहैं शेष, नाश होय सब कलेश,
गुरु विष्णु परब्रह्म। ब्रह्म पद की निसेनी, भक्ति मुक्ति पद देनी,
गुरु पद में त्रिवेनी, गुरु पद पर्व कुम्भ।
"सरससंत" पद पर्व गर्व करि उतरो भवनिधि पारो ॥ वारो तन० ॥

—०—

श्री हनुमान वंदना

बंक बदन गरवीले, हनुमान रंगीले ॥
हाँक सुनत दस बदन सदन खल निशिचर मद भए ढीले ॥ ढीले बंक० ॥
ढीले ढीले लोह तन, शुद्ध बुद्धि सत्य मन, राम नाम जाप धन,
धरे ज्ञान के गुणज्ञ ॥ अज्ञ सर्व गुण प्रवीन, कीश कपिन तव
अधीन, श्री सुकंठ सारस दीन, हीन लीन दुखी अज्ञ।
अज्ञ कृतज्ञ करन, दुख मर्दन, प्रभु पद पथिक रसीले ॥ ढीले बंक० ॥
बड़े धीर कर्म वीर, क्षमा दया उर शरीर, धीर देत सब अधीर,
अंब केशरी के पूत ॥ पूत अंजनी सुजान, बुद्धि विधि से महान,
जग जान आन शान, रामचन्द्र अग्रदूत ॥
दूत पूत श्री पवन बली के जन्मत ही रवि लीले ॥ ढीले बंक० ॥
मेघनाद आदि दुष्ट, अगम सिंधु लाँघि रुष्ट, परे भूमि लगे मुष्ट,
बड़े बीर खल अजय ॥ जयति राघवेंद्र बोल, दहे लंक कोल खोल,
बजै झाँझ शंख ढोल, चहुँ ओर जयति जय ॥
जय जय करि किलकाय धाय गिरि औषधि लखन लगी ले ॥ढीले बंक०॥

मेरी वेर एती देर, कपि कीश क्यों अँधेर, करूँ वंद्य वेर वेर,
हरो दुःख भव अगम ॥ अगम सुगम करि देहु, राम भक्ति उरन
देहु, जग दूसरो न केहु, श्रुति शास्त्र कह निगम ॥
निगम निरंजन करु मुख भंजन खल कलिमलन नशीले ॥ ढीले वंक० ॥

हनुमन्त दयावन्त, अवधूत विमल संत, भगवंत "सरससंत"
हरो कष्ट नयन केर ॥ फेर नैन दया धारि, काम क्रोध खलन जारि,
सुधि नाथ सों दुलारि, कह्यो मोर वेर वेर ॥
वेर वेर सुधि मोर लेब सियारामहुँ कहब हठीले ॥ ढीले वंक० ॥

—o—

शिव वंदना

गिरजापति शिवमानी, अभिमत फल दानी।
विश्वंभर, कैलाशपती, अविनाशी, अवढर दानी ॥ दानी गिरिजा० ॥

दानी देव दीन बंधु, शुभ त्रिनेत्र काल इंदु, भाल जटा गंग विन्दु,
भस्म अंग भूतनाथ ॥ नाथ नीलकंठ सोह, सोक हरन भ्रम मोह,
विश्व वंद्य भरे छोह, पुरी काशिका के नाथ।
नाथ सच्चिदनन्द कृपामय करुणाकर अभिमानी ॥ दानी गिरिजा० ॥

मानी महा मुनि ईश, इन्द्र आदि सर्व ईश, दहन शत्रु बन गिरीश,
तेज कोटि रवि समान ॥ मान मर्दि अमित दुष्ट, काम क्रोध खलन
भ्रष्ट, होय नष्ट सकल कष्ट, बढ़ै भाव भक्ति ज्ञान ॥
ज्ञान, भक्ति, कैवल्य, परम सुख, हर वैरागी ध्यानी ॥ दानी गिरिजा० ॥

ध्यानी धरे कर त्रिशूल, हरैं त्रिविध ताप शूल, मुंडमाल व्याल
झूल, रहे अंग प्रति अनंग ॥ जंग कुंद तन चमक, तांडवित नृत्
झमक, डमक डामरू डिमक, डिमक बाजते सुढंग ॥
ढंग ढंग अर्धङ्ग नाचते, भंग गंग जल छानी ॥ दानी गिरिजा० ॥

छानी संखिया धतूर, अलमस्त भरपूर, नाम जाप छके चूर,
रामचरित के गुणज्ञ ॥ गुण अज्ञ बड़े तज्ञ, भक्तपाल में कृतज्ञ,
भोलानाथ सर्वज्ञ, औरो सकल देव अज्ञ ॥
अज्ञ अकोविद अंध मलिन मन, मम सुनिये प्रभु बानी ॥ दानी गिरिजा०॥

बानी आपकी सुनी, भक्ति मुक्ति के गुनी, जमराज शिर धुनी,
कहँ विधि से कुवेर ॥ वेर बेर सहसनेह, अधिकार सहित गेह,
सब सम्हार आप लेहु, परौं पाँव बेर बेर ॥
बेर बेर सब कहँ बावरो रउरे नाह भवानी ॥ दानी गिरिजा० ॥

बानी सुनो प्रभु मोर, बार बार यह निहोर, उमापति कृपा तोर,
भए होय सब सुलभ ॥ सुलभ होय परा शक्ति, 'सरससंत' हृदय,
भक्ति, राम नाम अनुरक्ति, दीजै भावना अलभ ॥
अलभ सुलभ कर देहु, सुस्वामी विश्वनाथ बरदानी ॥ दानी गिरिजा० ॥

—:०:—

देवि वंदना

असरन सरन सहाई, दुःख द्वंद नसाई ।
मंगल मुद सिधि सदन सोहावनि, जननि जगत की माई ॥ माई अस०॥

माई चंद्र सी चटक, मुख जोति की छटक, लट लहर सी लटक,
सोह भाल में त्रिनेत्र ॥ नेत्र नील कल कमल, स्वच्छ,
सुघर घर विमल, खल दैत्य तन अमल, होय भाग छोड़ क्षेत्र ॥
क्षेत्र स्वामिनी विंध्यवासिनी अगनित महिमा छाई ॥ माई अस० ॥

छाई अंग प्रति स्नेह, दिव्य दामिनी सी देह, क्षण-क्षण नवनेह,
अंब करुणा की घर ॥ घर भक्ति मुक्ति बर, काम क्रोध शत्रु घर,
कर देत चर्र मर्र, सदा सोहती निडर ॥
निडर निहाल भक्त सुख करनी, शिव घरनी, श्रुति गाई ॥ माई अस० ॥

गाई वेद औ पुराण, खड्ग औ त्रिशूल बाण, हरन महिषासुर प्राण, कर कठोर तलवार ।। बार बार संहार, करी दैत्य वंश मार, क्षमा शील भंडार, जन होत अवधि पार ।।
पार प्रकृति की मातु मोहिनी, गज खट्वदन को जाई ।। माई अस० ।।

जाई सिंह पै सवारी, सोह अष्ट भुजधारी, कर त्रिशूल शस्त्र भारी, भारी काल को कराल ।। काल कौल से बचाय, चरण शरण में लगाय, अब हूजियो सहाय, बिकट दुष्ट कलिकाल ।।
काल कठिन, कलि, कलुआ कूकुर, काटै देहु भगाई ।। माई अस० ।।

गाइ तेरो गुन मात, नहिं पूछ कोउ बात, पितु मात भ्रात नात, तूहीं एक अब अंब ।। अंबिका हो सुधि लेहु, रामभक्ति वर देहु, और जग में न केहु, जाते होय अवलंब ।।
अवलंब प्रदानी 'सरससंत' तेरो जै हो काली माई ।। माई अस० ।।

—०—

साकेत में रहस्य गान

(श्री मुख से)

कैसों छूटै नाहिं छुटाये, मम मन बँध्यो प्रेम की छोर ।
ऐसी प्रेम मयी लखि पुरी, अवध की मन में उठै हिलोर ।।

याकी शोभा सुखदाई, वेद करत बड़ाई, मन जात है लुभाई, फल चार देत नित । नित देत फल स्वच्छ, अर्थ काम धर्म मोक्ष, लक्ष होत हौं अलक्ष, मेरो प्रेम लीला नित ।।
सरयू जल मज्जन पान किये मिटै छन में पाप करोर ।। कैसों० ।।

यहाँ थके रवि चंद, पौन चलै मंद मंद, नभ छाये सुर वृन्द,
गावैं प्रेम भरे गित, गीत गावैं सुरभारी, जन्म भूमि मम प्यारी,
शुद्ध बुद्ध नर नारी, भक्ति भाव भरे चित्त ॥
ज्ञानी, ध्यानी सब ज्ञान ध्यान तजि फिरैं समाज बटोर ॥ कैसो० ॥

बड़ो भयो मेरा गात, मोकों गुरु पितु मात, संग संग सब भ्रात,
करी उपवीत रित ॥ रीत उपवीत कीन्ह, पाणनीय ग्रन्थ दीन्ह, गुरु
परम प्रवीन, जिन्हें सर्व शास्त्र चित्त ॥
मम चित धरि दीन्हीं वेद, शास्त्र, श्रुति, अल्पकाल ही थोर ॥ कैसो० ॥

देखन आये बाल केल, कैलाश ते अकेल, जगपति रहे खेल,
वह देखिहौं चरित ॥ चरित देखिवे को भोला, रनिवास गैल डोला,
धरे आगमी को चोला, छवि बाल केलि वृत्त ॥
संग में शिशु काग भुसुंडि संग दोउ आगम, निगम निचोर ॥ कैसो० ॥

कौशिल्या मेरी मात, बड़े प्रेम-सिंधु तात, लखन भरत शत्रु भ्रात, संग
खेलूँ खेल नित ॥ नित खेलूँ घोड़ा चढ़्ढी, सरयू तीर पै कबड्डी,
डंड कुश्ती लाँघूँ गड्ढी, मोको कौन सकै जित्त ॥
मृगया बन खेलूँ सखन संग जा, बन प्रमोद की ओर ॥ कैसो० ॥

सुत गाधि जग्य भ्रष्ट, खल सुबाहु आदि दुष्ट, करैं देव भाग नष्ट,
सोच आये मुनि इत, इत करके निहोर, चले बक्सर की ओर,
खल दल घनघोर, ठौर ठौर वन चरित्र ।
मख की रक्षा करि हरी पीर मुनि-तिय पाषाण कठोर ॥ कैसो० ॥

पहुँचे मिथिला में जाय, मग कोमल सुभाय, सर सरिता सोहाय,
जाकी उपमा न क्वित्त ॥ कित जाऊँ कहूँ डोल, लेत, मन बितु
मोल, सखी करत कलोल, योग जानकी के हित ॥
बरसै प्रसून चढ़ि अटा छटा लखि चक्रित नजरिया मोर ॥ कैसो० ॥

मुनि आयसु ते दौड़ि, शिव धनुषा को तोड़, सिया संग गाँठ जोरि, करी व्याह विधि विध। विध कहि नहिं जाय, मोको कोहबर लिवाय, सिद्धि उमा शारदाय, रस्म करी हार जित॥
श्री सिय जू पग पगतरी सजा कहैं कुल देवता हैं तोर॥ कैसो०॥

सुन्दर चतुर सुजान, भाँति भाँति पकवान, जेवैं जान औ अजान, जोगी, जपी, तपी, सिद्ध। सिद्ध आदि सब नारी, मम प्रानहू ते प्यारी, बड़ी प्यारी ससुरारी, याते कौन बड़ो सिद्ध॥
गारी ससुरारी प्रेम भरी सम वेद वंदना थोर॥ केसो०॥

जाको जैसो रुचि भाव, तहाँ तैसो मेरो नाँव, वेद नेति नेति गाव, सो मैं भक्तन के हित, हित दशरथ लाल, मेरो नाम रामलाल, कोई कहै रक्षपाल, मेरो नाम है अनंत॥
सब ते प्यारो मेहमान राम कहैं "सरससंत" करजोर॥ कैसो०॥

—❀—

नयनों में उपचार

नयनन बीच बिठाऊँ, दुल्लह छवि पाऊँ॥
पलक हलन करि व्यजन डुलाऊँ, पुतरिन सेज सोवाऊँ॥ पाऊँ नैनन०॥

लाऊँ दीप निज बोध, रमति सर्वगत सुबोध, वासनादि धूप सोध, प्रवर भाव विशद भोग॥ भोग प्रेम तांबूल, विज्ञान भक्ति मूल, औ विराग सानुकूल, अर्पि दीप पत्र योग॥
योग, क्षमा, करुणा, परिचारिक ऐन सैन में छाऊं॥ पाऊँ नैनन०॥

छाऊँ घटा जनघोर, अंज आँजि चहुँओर, लाल डोर कोर कोर, सजूँ सावनी सुसाजि॥ साजि प्रेम को पलन, नेम द्दढ़ तरु सघन, नेह डोर को गठन; भाव सरित तीर गाजि॥
गाजि साजि अनुराग स्नेह जल, वरसा झमकि झुलाऊँ॥ पाऊँ नैन०॥

लाऊँ लाल शुभ गुलाल, कल कपोल करूँ लाल, नाचि नाचि सरस ताल, सुभग फाग को जतन ॥ जतन श्रद्धा भक्ति रंग, घोरि प्रेम जल तरंग, करूँ डार रंग तंग, व्यंग मान से वचन ॥
वचन रसाल सरस पिचुकारिन रसमय फाग खेलाऊं ॥ पाऊं नैनन० ॥

जाऊँ ध्यान छाय बाँस, मंडि कुन्ज हृदय खास, सुरति सिद्धि संग-दास, 'सरससंत' सिया बंधु ॥ बंधु क्षमा, दया, संग, सजे अंग ढंग ढग, बिढ़ै परा प्रेम अंग, सुभग मंगलादि सिंधु ॥
सिंधुर सुधा सिंधु पिय से सिय माँग सोहाग भराऊं ॥ पाऊं नैनन० ॥

गाऊं अधिक भरि अनंद, हँसी गान गारि मंद, गाय गाय मधुर छन्द, बनै व्याह विधि विधन ॥ विधन देव शिव सुरेश, बसैं अंग अंग देश, मिटै सर्व कलि कलेश, महा मोद मन मगन ॥
मगन महा बिधि बासर निशि नित व्याह विधान रचाऊँ ॥पाऊँ नैनन०॥

—:०:—

छविरस

सुखमा सिंधु रसीलो, प्रभु छवि-रस पीलो ॥
केशर चंदन तिलक भाल, बाँकी भौंहें मटकीलो ॥ पीलो सुखमा० ॥
मटकीलो मंजु ऐन, पिक माधुरी से बैन, मैनका सी ऐसी सैन, करै छन-छन पलक ॥ पलक कोर लाल डोर, जैसे सरिता हलोर, सोइ अंज चहुँ ओर, घटा घोर सी झलक ॥
झलक झाँक झाँकी झिलमिल झल झल झलकै पट पीलो ॥ पीलो सु० ॥
पटपीत सजे अंग, भाँति भाँति के सुढंग, जैसे इन्द्र धनु रंग, छाय सोह तन वदन ॥ वदन चंद सी चटक, सुधा सिंधु सी घटक, केश, घूँघरे छटक, शुक नास को हलन ॥
हलन ललन, मन छलन छकीले छलिया छटो छवीलो ॥ पीलो सु० ॥

छन छन छूम छूम, अलकावली झुझूम, कंज मुखलेत चूम, सजे कुंडल जड़े ॥ जड़े हीरा मोती नील, कीट सोहै चमकील, बने सुघर रसील, मणि जड़ित कड़े ॥

कड़े कलामय कलित ललित कर कसलन पड़े कसीलो ॥ पीलो सु० ॥

कसे केहरी से कंध, भक्तपाल को सुगंध, भुजवंद भुजन बंध, मुख मंद मंद हास ॥ दाड़िम दलन, सोह कैसी सघन, जनु दामिनी मगन, बरबस मन फाँस ॥

फाँस फँसावन छटा हाट बिच नैना नचै कटीलो ॥ पीलो सु० ॥

कटि पीत पट फेंट, लेत चित्तको समेट, झाँकी झाँक भर पेट, हिया बीच धर झट ॥ झट झंझट से छूट, ऐसी छविरस लूट, जग छटा सब झूट, बापे धूर डाल हट ॥

'सरससंत' हट लटक बिटप प्रभु छवि पै अटक हठीलो ॥ पीलो सु० ॥

—:ॐ:—

झाँको

बाँका छैल अलक छटकैल कमर पटफेंट कसे पीली ।
रस से भरे सुधा सुखसिंधु इन्दु सम मुख छवि मणि नीली ॥

नील नीलघर श्याम, महाकामहू के काम, शुचि शोभा सुख धाम, रोम रोम प्रति अंग, अंग, कोमलाई, कल कपोल अरुणाई, अधराधर ललाई, रति पति भए दंग ॥

खंजन मद गंजन अंजि आँजि दृग तीखी परम कटीली ॥ बाँका० ॥

दिव्य दसन अनार, बंक भौंह ज्यों कटार, भाल तिलक बहार, शुभ सुघर सुघ्राण ॥ घ्राण शुक से झलक, झपकार से पलक, देखि जात है लपक, मन बुद्धि चित प्राण ।

सुन्दर रस भरे रसाल सुधा सम सुनि प्रभु बैन रसीली ॥ बाँका० ॥

कल कंवु कंठ ग्रींवं, कंध केहरी असींव, भुजबंद भुज लसींव,
धरे बाम धनु कंध ॥ कंधभूषण झकोर, नासामणि हल-
कोर, कर्ण फूल को अंजोर, जोति छाय जात अंध ॥
मुख हाँस मंद मृदु मधुर मदन मद मधु सी गरवीली ॥ बाँका० ॥

झीनी झीनी चमकदार, पीत जामाजरी धार, हीरा मोती जड़े
हार । आदि तुलसी की गुँज ॥ गुँज कुंज कुंज थली, मिथिलेश
की गली, बाँकीं झाँकी है अली, अली फूलन से पुंज ॥
शोभा मंदर शृङ्गार सिंधु, पीताम्बर पहने ढीली ॥ बाँका० ॥

नख सिख अनमोल, मन लेत बिनु मोल, कहूँ साँची सब खोल,
भाव भरे बैन बुंद ॥ बुंद सोह मिसु गाल, लाल होते कहीं
बाल, लुट जाते बाल बाल, अनुमान "सरससंत",
मरि जाते अपनी गला काट सब लै तलवार चोखीली ॥ बाँका० ॥

—:o:—

श्री किशोरी छवि माधुरी

झाँकी झाँकु जिया की, मनहरन सिया की ॥
सुखमा सुख की खानि महाछवि जनकराज बिटिया की ॥ याकी झाँकी०॥

याकी अंग में अनंग, शची रती भई दंग, कैसी सुधर सुढंग,
जनु चंप की कली ॥ कली की सी रही झूल, छवि कुंज सर फूल,
रघुबर मन भूल, मकरंद छवि अमल ॥
अमल कमल कल कोमल क्या जैसी कोमलता याकी ॥ याकी झाँकी० ॥

याकी रोम रोम मंद, छई मधुरस गंध, अधर मोद सुधा कंद,
मुख हाँस में दसन ॥ दसन दामिनी सी जोत, स्वच्छ विमल
ज्यों कपोत, मृदु बैन जैसे तोत, प्रभा चंद की चमन ॥
चमन चंद छवि क्या है जैसी मिथिलापुरी धिया की ॥ याकी झाँकी० ॥

धिया धीरता की तीर, छमा दया की समीर, छई वसुधा को चीर, अंग अंग में लहर ॥ लहर पाप को जहर, दीन हीन जनन घर, छविधर मनहर, प्रेम पुन्य सी अमर ॥
अमर प्रेमपन चक्र-चकोर क्या जैसी प्रेम प्रिया की ॥ याकी झाँकी० ॥

याकी उपमा न और, समता की नहीं ठौर, सब अंग दौर दौर, हिया बीच लिख चित्र ॥ चित्र चरण चट देइ, तन, मन, धन, सेइ, टुक पराग रस लेइ, मधुप होइ मन मित्र ॥
मित्र त्रिताप नासिनी सिय की पदरज हम दुखिया की ॥ याकी झाँकी०॥

याकी पद कल कमल, ललित कोमल विमल, 'सरससंत' पुट अमल, चरण वुंद अमृत स्नेह ॥ स्नेहता की शुद्ध पुज, भक्ति लतिका सी कुंज, राम श्याम भ्रमर गुंज, जके छके नव नेह ॥
नेह नवल बर राम नेह की पद हैं प्राण प्रिया की ॥ याकी झाँकी० ॥

—:o:—

श्री अवधपुरी

ऐसी अवध पुरी की गली, थली प्रति मंगल मयकारी।
सुन्दर सदन मदन मधुपुरी, पुरी सुरपति सी छवि भारी ॥

भारी मोटन कंगूर, रामपुर मशहूर, देखि भए मद चूर, श्री कुबेर से धनद ॥ धनद कोऊ न जगत, ऐसे नृप दशरथ, गज बाजि बहु रथ, और धेनुओं की हद ॥
मणि मानिक हीरा जटित हेम शुचि ढारी राज किवारी ॥ ऐसी० ॥

गली गली सब ओर, वेद सामगीन शोर, बाल वृंद जोर, जोर, रघुपति प्रतिपाल ॥ प्रतिपाल राम राय, पढ़े शुक्र शारिकाय, मोर हंस समुदाय, सोहैं भौन पै विशाल ॥
गुंजत मधुकर बाटिका सुमन सर त्रिविध समीर सुखारी ॥ ऐसी० ॥

धवल धाम नभ चुंब, भीति भाँति मणि खंभ, गच काँच रचे कुंभ, मुनि मन नचै देखि ।। देखि नौग्रह निकर, शुभ विशद अजिर, शुचि फटिक रुचिर, बहु जाति के अनेक ।।
मनियन की दीपैं भवन भ्राज विद्रुम की रची दुआरी ।। ऐसी० ।।

श्रुति शास्त्र औ पुरान, नाना रामचरित गान, दिन रात नहिं जान, ऐसी सुखमा सुदेश । देश औध नित आवैं, सनकादि दर्श ध्यावैं, नारदादि गुन गावैं, सहष शेष औ महेश ।।
घर घर में भक्ती भरी खड़ी मुक्ती लाचार विचारी ।। ऐसी० ।।

फूलि फलैं तरु मूल, सब ऋतु अनुकूल, चंपा वेली आदि फूल, लता लपटी तमाल ।। माल मौसिरी शृंहार, जलकंज कचनार, जंबु कदली अनार, नास पनस रसाल ।।
बन प्रमोद नित कदम डार झुकि झूलत जनक दुलारी ।। ऐसी० ।।

पुरी उत्तर की ओर, मंद सरयू हिलोर, कलुष पाप को बटोर, देत छन में बहाय ।। हाय कलि तन छाय, भाग जाय अकुलाय, '-सरससंत" बनि जाय, एक बार जो नहाय ।।
दुःख द्वंद भयावह मिटै महा हनुमत की चौकीदारी ।। ऐसी० ।।

—:o:—

श्री सरयू महिमा

सुंदर सरस सोहावन तीर नीर सरयू की कैसी हैं ।
कि मानो धवल धार रबि किरण छटा चंदा सी जैसी हैं ।।
खेत स्वच्छ सुघराई, ध्वनि कलकल सोहाई, देखि जिया लहराई, कैसी सुघर तरंग ।। रंग धरा पै अकेलि, छवि छलक सकेलि, देत प्रभु धाम ठेलि, जमदूत भए दंग ।।
पापन कुंजर खल पुंज दलन नृप केहरि जैसी हैं ।। सुंदर० ।।

आईं पश्चिम की बाट, मंद मंद बड़े थाट, राजघाट, गोलाघाट,
घाट-घाट पै उमंग ।। उमंग सर्गद्वार घाट, किला लक्ष्मण घाट,
नया घाट रामघाट, देखि स्वच्छ होय अंग ।।
घाटन प्रति मंदिर परमधाम श्री विरजा जैसी हैं ।। सुंदर० ।।

छोर छोर चहूंओर, कपि कीर नाचै मोर, बन प्रमोद घनघोर,
ठौर अधिक उछंग । छंग छलित कलित, खग मृग सब ललित,
लता पता जित तित, फूल फले ढंग ढंग ।।
शीतल ससीर या तीर सजीवन मूरि जैसी हैं ।। सुंदर० ।।

काम क्रोध खल बल, कर देत है निबल, नर होत हैं सबल,
अंग अंग बढै जंग ।। जंगदार कलि क्रूर, मशहूर बड़ो शूर,
ताको करै चूर धूर, बढै 'सरससंत' संग ।।
भवपार करै पलकन सें कली की ऐसी तैसी है ।। सुंदर० ।।

—:o:—

श्री रामनवमी उत्सव

चंदन चौक पुरावो, सब मिलि के गावो ।
आजु जन्म दिन रामचंद्र को वंदरवार छवावो ।। गावो चंदन० ।।
छाय पत्र तरु अंब, फले कदली सुथंभ, द्वार द्वार धरि कुंभ,
दीप जोति धेनु घृत् ।। घृत दूध दधि खंड, मधुपर्क भरे कुण्ड,
नर नारि मिलि झुंड, हाट बाट अरा छत् ।।
केशर चंदन दधी दूध बरसा दधिकीच मचावो ।। गावो चंदन० ।।

मचै धाम धाम धूम, झाँझ शंख नाद घूम, घड़ी घंट रूम झूम,
बजै सहनाई ढोल ।। ढोल डंक औ निशान, प्रेम पट ध्वज तान,
सजे पुष्प से विमान, ठटो ठाट अनमोल ।।
कुंकुम लाल गुलाल उड़ा नभ छटा घटा घुमड़ावो ।। गावो चंदन० ।।

दिव्य करि स्नान, दूब अक्षत औ पान, करि मंगल विधान,
धूप दीप नैवेद ।। वेद मूर्त रामचंद्र, अर्चि पूजि करो वंद्य,
गाय साम गान छंद, लोक रीत विधि वेद ।।
वेद मंत्र चहुँ ओर सुहावन राम बधैया गावो ।। गावो सुंदर० ।।

गाय गाय सतभाय, अन्न वस्त्र सब लुटाय, जन्म उत्सव मनाय,
सुर सिद्ध मुनि लोग ।। लोग भोग भव रोग, सब ओर ते वियोग,
कर कैसो संयोग, यही योग जप तप ।।
जोगी जती सती शावित्री घर घर बजै बधावो ।। गावो सुंदर० ।।

धाय धीर करि मन, सरवस तन मन, सब संतन को धन,
धन्य आजु को परव ।। पर्व पुन्य लोक तीन, 'सरससंत' मुनि
प्रवीन, अनदिन नित नवीन, करो मनमें गरव ।।
गर्व दूर हो जाय कली की नौमी तिथि मनावो ।। गावो सुंदर० ।।

—०—

श्री रामनौमी

पावन परम पुन्य मय धन्य अपावन पावन मिति माई ।।
शीतल मंद त्रिविध स्वच्छंद चैत शुक नौमी तिथि आई ।।

आई सुखद सुदिन, नभ तारे गिनगिन, रवि चंद जिन दिन,
जकि थकि भए मंद ।। मंद मंद सुर यान, आये चढ़िके विमान,
गुन करत बखान, वेद चार मुनि वृन्द ।
वृंदा, शारद औ उमा साजि चढ़ि सिविका श्रुति आई ।। शीतल० ।।

बाजै नगन निशान, घनघोर घमासान, स्नेह सुरा छान छान,
महा मघवा मगन ।। मगन मनमें भरे, नभ जोरि कर खरे,
कमल कंज अंजुरे, झरैं झर झर सुमन ।।
सुमनन की ऐसी झरी झरी जनु बरषाऋतु आई ।। सीतल० ।।

गाँव गाँव देश देश, राजा राजा रंक औ नरेश, सजे अंग अंग भेष, रामचंद्र जन्म पर्व ॥ पर्व गर्व से मनावैं, कलि क्रूरता भगावैं, नव ज्योति उपजावैं, गाय हिल मिलि सर्व ॥

सर्वस श्रीराम चरित मानस दिन तुलसीकृत आई ॥ शीतल० ॥

द्वार द्वार मंद हसि, धरे कंचन कलश, तनमन सर्वस, धन धरे करि ढेर ॥ ढेर अन्न वस्त्र भूरि, नर नारि सब जूरि, मणि मोती करि चूर, चौक करी चहुँ फेर ॥

चहुँ फेर फिरी पल्लव रसाल जनु ऋतु पति रति आई ॥ शीतल० ॥

जै जै बंदी वेद बैन, पंचगान शब्द ऐन, छन छन दिन रैन, औध अधिक अनंद ॥ नंद राय गोद जाये, दिन आजु ही में आये, गावैं मंगल बधाये, "सरससंत" संत सिद्ध ।

सिद्धन रिधि सिधि प्रकटाय मूर्तिमय श्री मुकुती आई ॥ शीतल० ॥

—: ❀ :—

श्री मिथिलापुरी

कंचन कलश सँवारी, मिथिलेश अटारी ॥

अति विस्तार चारु गच वेदी रुचिकर सदन सँवारी ॥ ढारी कंचन० ॥

भाँति भाँति बने खंभ, जैसे कदली के थंभ, रंग भीति रति रंभ, बने सुघर विचित्र ॥ चित्रकारी चहुँ ओर, सजे शुक पिक मोर, हेम मरकत घौर, लता पता मणिन चित्र ॥

चित्र चटक मन अटक भवन लखि सिंहद्वार छवि भारी ॥ भारी कंचन०

कहूँ कहूँ बर बाग, कई भाँति के तड़ाग, उठै पौन ते पराग, जब फूलैं जलकंज ॥ कंज केते रहे फूल, डार डार तरु सूल, रितु बसंत कंत भूल, कल केतकी के कुंज ॥

कुंजन कुंजन कटे छटे छविदार छटीलो क्यारी ॥ क्यारी कंचन० ॥

शुचि शुभ नर वृन्द, रस रसिक मलिंद, शुक शिव से जितेन्द्र, शची शारदा सी नारि ॥ नारी सारी वैस वारी, मुख चंद उँजियारी, प्रति घर पुर भारी, झूलैं झुलन सँवार ॥
बारी श्री जनक दुलारी झूलैं, झूला डार अँसारी ॥ सारी कंचन० ॥

गली गली रसथली, हाट बाट थाट भली, छकि जात इंद छली, जनक भौन सोन देख। देख मिथिला की विभ, मोहि जात मन विध, ब्रह्म ज्ञानी बड़े सिध, पुरी उपमा अलेख ॥
लेख देख श्रुति 'सरससंत' ह्याँ बने ब्रह्म दुलहा री ॥ हारी कंचज० ॥

—:o:—

झूलन झाँकी

थाकी मति उपमा की, लखि मंजुलता की ॥
शोखां चाँकी सी बर बाँकी झूलन छवि क्षमता की ॥ ताकी थाकी० ॥

तकनि तिरछे करे, सजि साज सब हरे, कर कँज कर धरे, डोर रेशमी हरो ॥ हरो भरो चितचोर, सिया संगमें हिंडोर, घन दुति एक ठोर, जनु सोह मद भरो ॥
भरो नीरधर नील वदन नीलम मणि दुति गई छाँकी ॥ ताकी थाकी० ॥

छकि रहे दोउ फूल, मंद मंद झूल झूल, कदम डार कुंज कूल, छटे साँवरे छयल ॥ छयल बने छविदार, कंठ, कंठ फूलहार, मनो नख-सिख सिंगार, नील जात को कमल ॥
कमल नील से फूले झूला सर छवि श्यामलता की ॥ ताकी थाकी० ॥

श्याम अंग में सुडोल, श्रवण कुण्डल सुलोल, बरबस मनमोल,

लेत चित्त को चोराय ॥ राय दशरथ कुँवर, छविधर मनहर, किये वंक से नजर, मंद मंद मुसुकाय ॥
मुसुकाय मधुर जनु मदन मोद रतिपति संग झूलि झमाकी ॥ताकी था०॥

बाँकी झाँकी झूला डाल, मुद झूलावैं सब बाल, गाय गाय देह ताल, भ्रमर गुंज सी मलार ॥ लार लाढ़ से लढ़ावैं, नैन नैन ते मिलावैं, भुज अंशकी सुहावैं, सिया पिया शृंगार ॥
शृङ्गार छवी जनु झूल झमक्कि झुकि झूलत ओट लताकी ॥ ताकी था० ॥

लता पता डार डार, छई बरसा बहार, परै बुंदन फुहार, मंद मंद चलै पौन ॥ पौन देत जब झकोर, उड़ै पीत पटछोर, घटा घोर घनघोर, छई छटा नभ भौन ॥
भौन भौन सिय रघुवर झूलैं छके परस्पर ताकी ॥ ताकी था० ॥

तकि तने छके नैन, बतरात करि सैन, मधुर मंद मृदु बैन, दोऊ दोउन पै वार ॥ बार बार दोउ झूम, झुकि झोंकि झूम झूम, रहे झूलि रूम झूम, कुंज सरयू किनार ॥
नार नारि युग युगल बिहारी झूलन शोभा टाँकी ॥ ताकी था० ॥

छिति छवि छोर मोह, एकटक रहे जोह, दोउ पान खाय सोह, एक एक न ते कम ॥ कमर कसे पट फेंट, धरे सुखमा समेट, लेत चित्त को लपेट, दुहुँन कंज पद सम ॥
सरसखंत' सम अमल कमल पद छविसर कोमलता की ॥ ताकी था०॥

०:ॐ:०

रहस मयी फाग

मारो न छैल बिहारी, रंग भरि पिचुकारी।
आँख गुलाल धूँधरो करकै, भींजि गई तन सारी ॥ सारी मारो० ॥
सारी झीनी गुलेनार, तापै रंग दई डार, ऐसो निपट गँवार,

भरे मद से नयन ।। नयन छल ना सोहाय, बात कहूँ सतिभाय, बड़े रहे अठिलाय, नेक मान तो कहन ।।
कहन वेदरदी मान डाल मत रंग उमर मोरी बारी ।। सारी मारो० ।।

बारी वयस की किशोरी, आँख भरो घूँघरोरी, अरे ऐसी कटु तोरी, हिय कुलिष पषान ।। खान पान भरो मुख, महा सुखहू के सुख, डाल देख रंग रुख, पहिचान रे अयान ।।
जान अयान होइ रंग डारै चोट लगै तन भारी ।। सारी मारो० ।।

भारी रंग लगै चोट, कैसो हिया तोर खोट, बंद जरीदार गोट, करी भोरभार तार ।। तार तार कियो भट, हाय छूटि गई लट, तूँ तो बड़ो नट खट, बार कही मैं तिखार ।।
खार किनार हजारी सारी रचि रचि अंग सँवारी ।। सारी मारो० ।।

बार बार को ठिठोल, कहूं ऐसो हमजोल, चूम लेत कल कपोल, मलि मुखमें अबीर ।। बीर वने गैल डोल, अटपट बैन बोल, भपपट भट घोल, डाल दई रंग बीर ।।
बीर धीर वेपीर अनारी निपट निडर छलकारी ।। सारी मारो० ।।

कारी प्यारी सहकारी, लहरदार लटकारी, कैसो सोह घुँघरारी, भरे मन में गरुर ।। रुर सब होय चूर, सिया सखी जब जूर, कल कपोल देहिं थूर, तब शूर मिली धूर ।।
धूर गुलाल कंज मुख मलि मलि गुलचें दइहौं भारी ।। सारी मारो० ।।

भारी नत्थ लै सोहाय, अंग सारी पहिराय, चटक चूँदरी ओढ़ाय, कर कंज पद लाल ।। लाल भाल मध्य सिंधु, शीस चंद्रिका सी इंदु, शुभ कपोल मिसु विंदु, सुघर चूरियाँ रसाल ।।
सालम सितार घाँघर सँवार सजि सुघर बनइहौं नारी ।। सारी मारो० ।।
नारी होय के शुभग, मंद मंद डगमग, चट आय सिया ढिग,

कर कंज युग जोर ।। जोर करोगे बिनय, क्षमा बंद्य सानुनय, श्री किशोरी जू की जै, कुशल लाल तब तोर ।।
तोर तन बदन "सरससंत" लखि हँसि हँसि बाजी तारी ।।सारी मारो०।।

—:०:—

मन बुद्धि वार्ता

काठी काया ठाटी, धोखे की टाटी ।।
मेरी मेरी करते मनुवाँ अंत मिलैगो माटी ।। टाटी काठी काया० ।।
माटी ठाटी यह देह, ताते अधिक सनेह, ढहि जाय क्षण मेह, परे धुलि गलि जाय ।। जाय क्षण में सो तूट, जमदंड पड़े टूट, खूब होय कुटस कूट, कहौं सौगंद खाय ।।
खाय कहौं सौगंद अरे मन तज गुमान तन घाटी ।। टाटी काठी० ।।
याकी ह्यांयी तक हद, मल मूत्र भरो नद, सब भाँति बड़ो बद, कृत निंदक अघी ।। अघी पीन पातकी, लालची नर्तकी, बड़ी तुच्छ जात की, नाम मात्र की सगी ।।
नाम मात्र की आन शान फिर मुँह में लगी लुआठी ।। टाटी काठी० ।।
याकी रीत सब झूँठ, बाँध लीजो गाँठ खूँट, सब जग झूठ मूँठ, करै अस्थि अभिमान ।। मान शान करै झूँठ, लेन देन सब झूँठ, खान पान सब झूँठ, हिय कुलिश महान ।।
महा झूठ काया थाटी जग चकमक चटनी चाटी ।। टाटी काठी० ।।
दिन चार की चटक, सब लटक मटक, कहाँ रहो है भटक, काम-बासना में चूर ।। चूर चाम दाम बाम, ऐसो नमकहराम, ना रहीम नहीं राम, देह धरे जैसे घूर ।।
घूर सरिस मशहूर वृहद तन है सब विधि से घाटी।। टाटी काठी० ।।
मत कर यापै मद, छोड़ छल औ छछंद, अब अरे मतिमंद, मन

कहा मम मान ॥ मानता की मोह छोड़, प्रभुपद प्रेम जोड़, सब देह नेह छोड़, करु राम नाम गान ॥
ठूँठी काया सफल होय नहिं गई चौरासी घाटी ॥ टाटी काठी० ॥

सतसंग ज्ञान ध्यान, परातत्त्व पहचान, अरे जान के अयान, फँसे मोह मयाजाल ॥ जाल दुर्गम अगम, संसार है अगम, याकी पाव कोउ गम, सब होंहि कौर काल ॥
काल काल में एरे मन कलि कलुआ कूकुर काटी ॥ टाटी काठी० ॥

प्रभु पद करु प्रीत, बात मान मन मीत, सोच हित अनहित, हित ऐसे अब तोर ॥ तोर तन सुघराई, प्रभु कृपा ही ते आई, होय गुरु शरनाई, चल 'सरससंत' ओर ॥
तज दे तृन सम तन की ममता जम जमात हिय फाटी ॥टाटी काठी० ॥

—०—

प्रार्थना

दीनदयाकर नामी, सब अंतरयामी ।
प्रणतपाल, जनपाल, जनार्दन, कृपासिंधु, मम स्वामी ॥ स्वामी दीन० ॥

स्वामी शील के समुद्र, करूँ तव पद वंद्य, मन मेरो अतिमंद तुच्छ पापन को घर ॥ घर कल बल छल, मगरूर में प्रबल, तृण भर नहिं कल, चित्त चोर में चतुर ॥
चतुरन में चतुर प्रचंड मलिन मन कलुषी कोही कामी ॥ स्वामी दीन०॥

मधुर कोकिला से बोल, जैसे मिसरी सी घोल, सन ढोल जैसे पोल, अंत कबहूँ न शुद्ध ॥ शुद्धताई कहाँ भाग, माया ठगिनी सोहाग, भरि दीन्ह मैं सोहाग, बरबस भई बुध ॥
बुध चित थित नहिं कभी सुकृत में ऐसो नमकहरामी ॥ स्वामी दीन० ॥

मायामयी जग जाल, पग पग पै कमाल, करै भाँति भाँति चाल, इन्द्रजाल सी सघन ॥ सघन सगा संबंध, बीच जीव प्रेम अंध,

कौन देहि काहिं कंध, आप आप में बेहाल ॥
हौं असाध सब भाँति साधना क्षण सुख करी गुलामी ॥ स्वामी दीन० ॥

काहू भाँति कलि कींच, कींच बीच में ते खींच, मोपै स्नेह जल सींच, दीजै भाव भक्ति भर ॥ भर दीजै शुद्ध ज्ञान, छूट जाय अज्ञान, नाथ होके सज्ञान, नाम जीह जाप कर ॥
करजाप पाप कर साफ नाथ चरणों में करूँ सलामी ॥ स्वामी दीन० ॥

मम कीजै पूरी आस, पद पास में सुपास, सब आस है निरास, अशरन के शरन ॥ शरन दीजै प्राननाथ, साकेत नाथ नाथ, दास 'सरससंत' नाथ, प्रभु करुणा अयन ॥
शरणागत पाल कृपाल छमा छाया की छतरी थामी ॥ स्वामी दीन० ॥

दीजै निज धाम धाम, परमानंद आराम, राम अभिराम राम, श्री किशोरी पद प्रेम ॥ प्रेम जानकी चरन, शुभ मंगल करन, कृपा दयाबर अयन, कर दीजै मम क्षेम ॥
मम क्षेम कीजिये नहीं किये होगी प्यारे बदनामी ॥ स्वामी दीन० ॥

—०—

आत्मनिवेदन

काके द्वार सिधाऊँ, प्रभु सरिस न पाऊँ ॥
अशरन शरण कृपाल प्रणतपन चरण छोड़ि कह जाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

जाऊँ कहाँ कौन ठौर, मन माँहि करो गौर, सब ओर कलिकौर, राग रोष भरे सब ॥ सब स्वारथी से नीत, पितु मातु जग मीत, बालू की सी ऐसी भीति, दिन चार की कुढब ॥
चार दिना की चटक चाँदनी फेर अँधेरी गाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

सब सबही ते बैर, चहूं छाई अँधेर, नर नारिन के चेर, बने

खोय सब सुकृत ॥ सुकृत करैं कौन काल, बड़ो पेट चंडाल,
चोरी झूठ बोल पाल, भाँति भाँति करूँ कृत ॥
जग जंजाल कुचाल छुटै क्यों ठावैं ठाँव बझाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

द्वार द्वार अति दीन, फिरौ विकल मलीन, सब कौड़ी के तीन,
दया धर्म ना सरम ॥ सरम घोरघाय पीय, कोह कामी लालचीय,
सब ओर नारकीय, भरपूर अधरम ॥
सत्य सारकी सुरति न मन में निशि-दिन खाऊँ खाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

सत संगन में जाय, करी विविध उपाय, हाय मन अकुलाय,
करूँ कौन सों यतन ॥ यतन कौन सो करूँ, याते भवभय हरूँ,
दुःख दाह नित जरूँ, भई सब विधि पतन ॥
श्रुति उपाय बहु भाँति जाल भव छूट न बरु अरुझाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

सीतानाथ कर जोर, करूँ तोर मैं निहोर, मत धरो मन कोर,
करो भव से अलग ॥ अलग भव से करो, दुःख दारिद हरो,
नेक दया तो धरो, उर होय के सजग ॥
कब तक द्वारे पै खड़े खड़े, हाः अपनी विरद सुनाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

दीन हीन जग जान, भए बिनु पहिचान, ज्ञानवान अज्ञान, सुधि
कैसे रहे भूल ॥ भूलि बैठे छाँड़ि आन, क्षमा शील के निधान,
भगवान मूँदि कान, थके पतितन के कूल ॥
पतितन उद्धारक राम नाम का महिमा आज डुबाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

अब कीजिए सहाय, सरसाय हुलसाय, कृपा दृष्टि बरसाय, मम
ओर फेर नैन ॥ नैन सैन कर दीजै, 'सरससंत' दास कीजै, पद
बास पास लीजै, मिटै शोक मिलै चैन ।
जै जै हो त्रिभुवन नाथ तेरो, विश्राम अचल मैं पाऊँ ॥ जाऊँ काके० ॥

श्री काशिराज रामनगरकी
श्री रामलीला सूचीपत्र—
रामायण

दोहा—काशीराज प्रसिद्ध पुर, सुरसरि धार तटत्र।
रामनगर श्री राम की, लीला पावन पत्र॥
मंगलमय कलिमल हरनि, वेद पुराण प्रसिद्ध।
रामचरित लीला सुखद, निरखहिं सुर मुनि सिद्ध॥
प्रथम दिवस रावण जनम, दूजे प्रभु अवतार।
तीजे मुनिमख राखि प्रभु, गौतम तीय उधार॥
चौथे दिन फुलवारी शोभा। जहँ बसन्त ऋतु रहत सुलोभा॥
पन्चये धनुष-यज्ञ शुभकारी। परसुराम को गर्व सुधारी॥
राम विवाह छठें सुखदाई। शोभा अमित बरनि नहिं जाई।
सतयें जनकपुरी से रामा। सीता गवन अवधपुर धामा॥
अष्टम राम राज नृप ठाना। कोप भवन कर विपति विधाना॥
राम बनगमन नवयें दीना। शृङ्गबेर पुर ठाहर कीना॥
दोहा—दसयें गंग जमुन उतरि, बालमीक मुनि रास।
सीता राम, लखन सहित, चित्रकूट गिरि बास॥
ग्यरहें भरत अवधपुर आये। राम बनगमन सुनि अकुलाये॥
बरहें चित्रकूट स्थल बन। भरत मिलाप रामपद दर्शन॥
विमल वशिष्ठ सभा तेरहें दिन। जनक समाज अवध पुरजन जन॥
दिवस चौदहें पादुक लीन्हा। अवध पयान भरत तब कीन्हा॥
पंदरहें सरभंग सुतीक्षन। मिलन अगस्त बास दंडकबन॥
सोलहें सीता हरन विधाना। लीला मनुज चरित प्रभु ठाना॥
सत्रहयें सेवरी फल खाई। ऋष्यमूक सुग्रीव मिताई॥
दिवस अठारह बाली मरना। ओन्नइसें लंका कर जरना॥

दोहा—बीसम दिवस सेतु की, रचना करि नल नील।
रामेश्वर स्थापना, कीन्हें राम सुशील ॥
इक्कइसें लंका पगु धारा। गिरि सुवेल अंगद विस्तारा ॥
लक्ष्मण शक्ति बइसवें दिन में। अंजनि पूत छुड़ाये छिन में ॥
दिवस तेइसें कुम्भकरण वध। मेघनाद चौबिसवें दिन मध ॥
पच्चीसें रावण दुखदाई। प्रथम दिवस रणभूमि लड़ाई ॥
छब्बीसें रावण औ रामा। निशिचर कीस घोर संग्रामा ॥
सत्ताइसें रावणहिं मारी। सुर नर मुनि प्रभु कीन्ह सुखारी ॥
राज विभीषन मिलन जानकी। दिवस अठइसें चरित ज्ञान की।
उन्तीसें निज नगर पधारन। भरत मिलाप दिवस मुदकारन ॥
तीसें रामराज अभिषेका। जै जै त्रिभुवन भई अनेका ॥
दोहा—एकतीसें दिन राम नृप, उपबन विहरन कीन्ह।
सनकादिक सत्संग प्रिय, परिजन कहँ सुख दीन ॥

छंद

सुखदीन प्रभु निज मनुज तन धरि ललित लीला शुभ किये।
भव पार अगम अगाध जगहित विमल लीला तन लिये।
सो ललित लीला रामनगर सुभूमि में जे ध्यावते।
ते निरखि दृग फल पाइ पुनि श्री रामधाम सिधावते।
उपदिन पूजा कोट की, पूजत काशीराज।
षटरस भोजन विविध विधि, निरखत सकल समाज।
रामनगर लीला ललित, सन्मुख तथा परोक्ष।
'सरससंत' जे मनत नित, मिलत परमपद मोक्ष ॥

—:०:—

नोट—चूँकि भाद्रपद १४ शुक्ल में लीला प्रारम्भ होकर क्वार १४ शुक्ल में सनकादिक लीला प्रायः होती है। इस प्रकार पूर्ण सूची ३१ दिन का ही होता है।

संक्षिप्त रामायण

(बालकांड)

श्री रामचन्द्रो साकेतनाथो,
हा: राम ! हे राम ! हा: राम प्यारे ।
हा: कौशिलाचंद अंकाबिहारी,
हा: राम ! हे राम ! हा: प्राण प्यारे ॥
हे हे जनक तात ! प्रनताप परिताप,
हे वंश भृगुदाप खंडन कठिन चाँप ।
हे जानकी प्राण ! जयमालधारी,
हा: राम ! हे राम ! हा: प्राण प्यारे ॥

(अयोध्या)

हे कैकेई कुरिठ वचनानुरागी,
हे सूर्यकुल राज्य वैभव विरागी ।
हे ! हे भरत भक्ति भावालचारी,
हा: राम ! हे राम ! हा: प्राण प्यारे ॥

(अरण्य)

हे दण्डकारण्य परितापहारी,
हे गीध गति गम्य लीला बिहारी ।
हे सेवरी प्रेम अतिथी भिखारी,

हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥

(किष्किन्धा)

हे निर्भयानंद सुकंठ रक्षक,
हे बालि बल गर्व मद मोह भक्षक ।
हे ! हे ! हनूमान बल कर्णधारी,
हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥

(सुन्दर)

हे ! हे ! विभीषण दुःख द्वंद हारी,
हे सिंधु भवगाध निस्तार कारी ।
हे वेद वंदित श्रुति शास्त्रचारी,
हाः ! राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥

(लंका)

हे ! कष्टनाशक ! हे देवपालक,
हे भूमि रक्षक, खल-दल मद भक्षक ।
हे रावणादिक मद गर्व हारी,
हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥

(उत्तर)

हे राम राजा, संसार काजा,
अवतार साजा, परधाम राजा ।

हे ! हे त्रिलोकी महाराज भारी,
हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥

आत्म-प्रार्थना

अगाध भवसिंधु संसार माया,
दुस्तर अगम थाह कोई न पाया।
हाः हाः उबारो भव भार भारी,
हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे।
माता, पिता, पुत्र, भार्या, सभाई,
संगी, सखा, बंधु स्वारथ मिताई।
निःस्वार्थ करुणाकर दुःख हारी,
हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥
जाऊँ कहाँ, कौन, जग में न कोई,
पाऊँ सुफल कैसे विषबेलि बोई।
कोई न कोई सब खोई हमारी,
हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥
अब ऐसे करुणा कर दें मुरारे,
हो पंच इन्द्री जग से किनारे।
केवल करैं कर्म ऐसा खरारी,

हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥
चंचल चरण मम, तव धाम शोभित,
नाशा, श्रुती, तव गुनगन निवेदित ।
देखें तुझे मम नयना भिखारी,
हा राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥
इतना निवेदन हे प्राण ! तन मन,
निकले कभी जब यह प्राण मम धन ।
रसना रटे नाम आनन्दकारी,
हा राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥
तुम सामने हो कर को बढ़ाते,
सीतापते राम मन मुस्कुराते ।
भव डूबते मम कर धर उठा री,
हा राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥
जाऊँ तेरे पास, है दास दरखास,
आऊँ न भव-पाँस, दे बास पद पास ॥
पाऊँ 'सरससंत' विश्राम भारी,
हाः राम ! हे राम ! हाः प्राण प्यारे ॥

संत भइय्या जी, वाराणसी

उपसंहार

समता नहिं जाकी आँकी हो, छवि बाँकी झाँकी हो।
कशमीरी केशर की खौर, शुभ तिलक सोहावन।
भृकुटी कुटिल कमान नैन सर, सकजल सुख सरसावन।
जनु छई छटा बरषा की हो ॥ छवि बाँकी० ॥
नासा कीर सुचिबुक मनोहर कुंचित कच गभुआरे।
दसन अनार दामिनी दुति सी, वदन बहार सवारे।
मृदु हँसनि शरद चँदा सी हो ॥ छवि बाँकी० ॥
घूँघर केश अलक श्रुति कुंडल, भौर महा छवि छाई।
कटि करवार सुपट मनि मानिक, अंग सुघर सुघराई।
जनु त्रिभुवन शोभा चाँको हो ॥ छवि बाँकी० ॥
चंचल चपल परस्पर चितवन, बोलनि मधुर अमोरस।
भुज मेलनि अरुझनि मनभावनि, रसिकन जीवन सर्वस।
छवि लखि रति पति मति थाँकी हो ॥ छवि बाँकी० ॥
नषसिप मंजु मृदुल मनमोहन, सरसत रस बसुधा की।
पदतल ललित महावर रंजित "सरससंत" उर टाँकी।
मोहित मुनि मन भ्रमरा की हो ॥ छवि बाँकी० ॥

३

—: प्राप्ति स्थान :—

श्री रामकुञ्ज कथा मण्डप
श्री रामघाट अयोध्या जी।

एवं

विभूति प्रसाद रामसरनलाल रस्तोगी
सी. के. १६/४४ सूड़िया, वाराणसी।